बराहीने महेदविया

लेखक

मौलवी मुहम्मद अब्दुल हकीम तदबीर रहे०
(हैदराबादी)

लिप्यांतर कर्ता

श्री शेख़ चाँद साजिद

प्रकाशक

इदारतुल इल्म महेदविया इसलामिक लाइबररी
अंजुमने महेदविया बिलडिगं,
चंचलगुड़ा, हैदराबाद - 500 024

पुस्तक का नाम : **बराहीने महेदविया**

लेखक : **मौलवी मुहम्मद अब्दुल हकीम तदबीर रहे०**
(हैदराबादी)

हिन्दी लिप्यांतर कर्ता : **श्री शेख़ चाँद साजिद**

प्रथम संस्करण : 2018

Type Setting : **Rheel Graphics, Hyderabad.**
Tel. : 040 - 27661061

Printer : **SM PRINTERS,**
Chhatta Bazar, Hyderabad

प्रकाशक/ : **हदारतुल इल्म महेदविया इसलामिक लाइबररी**

मिलने का पता **अंजुमने महेदविया बिलडिगं,**

चंचलगुड़ा, हैदराबाद - 500 024 T.S.

हदिया : ₹ **50**

INDEX

	मौलवी मुहम्मद अब्दुल हकीम तदबीर	6
	प्रस्तावना	8
	भूमिका	9
१)	महेदी मौऊद अले० का नाम, वलदियत और नसब वग़ैरह	11
२)	महेदी अले० की कुन्यत	12
३)	महेदी अले० अहले बैत औलादे फ़ातिम रज़ी० से हैं।	13
४)	इमामुना अले० की माँ का नाम रसूलुल्लाह सल्ला० की वालिदा के हमनाम थाः	15
५)	रसूलुल्लाह सल्ला० और इमामुना अले० का हुलिया	16
६)	इमाम महेदी अले० का ज़मानए बेअसत और मक़ोम पैदाइश	19
७)	इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० को सहीह मान्ने वालों के चार दलाइल	19
८)	इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० को सच मान्ने वालों की ग़लत फ़हमी के कारणः	21
९)	महेदी अब्बासी को महेदी मौऊद मानकर इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० का तसव्वुर भी ग़लत है	24
१०)	ईसा अले० और महेदी अले० एक दूसरे की इक़्तिदा करना ग़लत है	25
११)	इजितमाए महेदी और ईसा हदीसे रसूलुल्लाह सल्ला० के ख़िलाफ़ है	25
१२)	अहादीस दफ़ए हलाकते उम्मत से साबित है कि इज्तिमाए महेदी और ईसा ग़लत है	26
१३)	इज्तिमाए महेदी और ईसा उसूले अक़्ल के ख़िलाफ़ भी है।	27
१४)	महेदी का ज़ुहूर अश्राते सुग़रा और ईसा का ज़ुहूर अश्राते कुब्रा से मुतअल्लक़ है	28

१५) इज्तिमाए महेदी और ईसा उलमा का प्रमाणित नहीं है। 29

१६) इमामते महेदी और इक़्तिदाए ईसा बिल्कुल बे बुनियाद है। 30

१७) अगर मुस्लिम की हदीस को जिसमें ''फ़यक़ूलु अमीरहुम'' के अलफ़ाज़ हैं सही जानें तो क्या नक़्स लाज़िम अयेगा। 30

१८) महेदी अले० के दुन्यावी बादशाह और दुन्या के सब लोगा एक दीन पर सहमत होने का ख़याल ग़लत है 31

१९. महेदी अले० के ज़माने में सब लोगों का एक दीन पर मुत्तहिद होना ग़लत है 39

२०. इमामुना अले० के ज़मानए बेसत और मक़ामे बेसत की बहेस 41

२१. आयते कुरआन से महेदी मौऊद की बेसत का ज़माना और मक़ाम 41

२२. *याती अल्लाहु बिक़ैमिन* से मुराद तख़लीक़े क़ौम के सिवा कुछ और माने नहीं 43

२३. फज़ायल व मनाक़िब या सिफ़ाते महेदी अले० की बहेस 45

२४. आयत *याती अल्लाहु निक़ौमिन्* में क़ौम के माने में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़। 51

२५. आयत *याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में *क़ौम* से मुराद क़ौमे महेदी है 53

२६. हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत आयत *युजाहिदून* की मिसदाक़ है 59

२७. हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० का रंगरेज़ बच्चों के वली होने का सुबूत कुरआन से 61

२८. आयत में मुर्तदीन से मुराद हसन सबाह का फ़िर्क़ा है। 62

२९. मुख़्तसर हालात हसन सबाह और जन्नते अरज़ी 63

३०. फ़िरक़ए बातिनिया के अक़ायद 66

३१. मक़ाम फ़राह फ़िरक़ए बातिनिया के हुदूद में शामिल है 69

३२.	इमामुना अले० का ''फ़राह'' में आना मशीयते ईज़दी से था।	70
३३.	हदीसे सौबान रज़ी० के लिहाज़ से ख़लीफ़ा के तीन बेटों के मुख़्तसर हालात	73
३४.	सियाह झंडों की बहसः	75
३५.	हदीसे सोबान रज़ी० में मुसलमानों के क़त्ल की तफ़सील या ज़वाले बग़दाद	78
३६.	मुल्के अरब का हुदूदे - अर्बआ (चौहद्दी) :	83
३७.	हदीसे सोबान रज़ी० में *वलौ हबवन् अलस सल्ज* के माने	84
३८.	हदीसे क़तादा रज़ी० की बहेस	85
३९.	सोबान रज़ी० की हदीस से हिन्द में लड़ने वाली जमाअत कौनसी है।	88
४०.	हदीस कोआ से काहा का मक़ाम मुराद है।	89
४१.	हारिस हर्रास से मुराद क्या है?	90
४२.	हदीस 'करीमत' से इमाम अले० के शहर जोनपूर में पैदा होने का सुबूत	91
४३.	हदीसे हुज़ैक़ा रज़ी० से ९०१ हिज्री मे इमामुना अले० के दाअवए मुअक्कद का सुबूत	93
४४.	हज़रत अली रज़ी० के क़सीदे की बहेस	99
४५.	हदीस अम्मार बिन यासिर की बहस	102
४६.	महेदी अले० की मुद्दते ख़िलाफ़त की बहेस	103
४७.	अक़्दे अनामिल की बहस जिस से इमाम अले० का सन् नौ सो में पैदा होना साबित है।	105
४८.	इमाम अले० की निसबत साहेबाने कश्फ़ की पेशीनगोइयाँ	107
४९.	इमाम अले० दाअवए महेदियत करना और आख़र तक क़ायम रहना	108
५०.	इख़्तितामिया	109

लेखक का परिचय

मौलवी मुहम्मद अब्दुल हकीम तदबीर

दकन में जिन महान् व्यक्तियौं ने जन्म लिया उनमें मौलवी मुहम्मद अब्दुल हकीम साहब तदबीर भी हैं। २ शाबान १३०९ हिज्री/२ मार्च १८९२ ईसवी को हैदराबाद में जन्म हुआ। मद्रसा दारूल उलूम से मुन्शी आलिम और मौलवी फ़ाज़िल कामयाब किया। फ़िक़्ह, तफ़सीर वग़ैरह इसलामी उलूम की तकमील हज़रत बहरूल उलूम अल्लामा सय्यद अश्रफ़ शम्सी रहे० से की। शाइरी (काव्य) में हज़रत सय्यद जलालुद्दीन तौफ़ीक़ रहे० के शिष्य थे। बड़े अच्छे कवी थे, तबीअत में संजीदगी, कम सुख़न, मुख़लिस और नेक-नफ़्स बुज़ुर्ग थे।

मौलाना अब्दुल हकीम साहब तदबीर की बैअत हज़रत सय्यद साअदुल्ला सयदंजी मियाँ साहब रहे० अहले अकेली से थी लेकिन हज़रत अल्लामा सय्यद शहाबुद्दीन साहब रहे० से भी क़रीबी तअल्लुक़ात थे। मौलाना अब्दुल हकीम साहब मद्रसा गोशा महेल में अध्यापक थे और हैदराबाद सोशियल कालेज में उर्दू और फ़ारसी के लेक्चरर् थे। इसके अलावा सहीफ़ा मस्जिद के पीछे एक हदारए हमीदिया था जिस में मुन्शी से मौलवी फ़ाज़िल तक शिक्षा दी जाती थी उस इदारे में भी वह पढ़ाते थे जहाँ से कई नामवर उलमा फ़ारिग़ हुवे। उनमें से चंद नाम इस तरह हैं। हज़रत मौलाना सय्यद नुसरत आलम, हज़रत मौलाना सय्यद नुसरत मुज्तहेदी, हज़रत मौलाना सय्यद नुसरत अहले इप्पल गुड़ा, हज़रत मौलाना सय्यद अतन् शहाब महेदवी, हज़रत सय्यद अब्दुल करीम यदुल्लाही, जनाब सय्यद अब्दुल्लाह, जनाब मुहम्मद उमर ख़ाँ महमनज़ई, जनाब मुहम्मद अब्बास अली ख़ाँ, जनाब अब्दुल ग़फ़ूर ख़तीब मस्जिद अफ़ज़ल गंज, हकीम अब्दुल वहाब ख़ाँ ख़ालिदी, जनाब मुहम्मद जमाल साहब जमाल, जनाब अब्दुर रहीम साहब शफ़क़, जनाब क़ाज़ी अंजुम आरिफ़ी और उनके वालिदे मोहतरम मीर लुत्फ़ेअली आरिफ़ी अबुल अलाई।

मौलाना अब्दुल हकीम साहब तदबीर ने दर्सो-तदरीस के अलावा इल्मी ख़िदमात भी अंजाम दी हैं। १३७५ हिज्री में इदारए शम्सिया से एक माहनामा

''महेदवी'' जारी हुआ था जिसके वह उप संपादक थे, इसके अलावा अल्लामा सय्यद नुसरत रहे० की तस्नीफ़ ''कोहलुल जवाहेर'' की तसहीह और तरतीब में हाथ बटाया और उस्तादे मोतरम अल्लामा सय्यद अश्रफ़ शम्सी रहे० की अरबी तफ़सीर ''लवामेउल बयान'' के पहले जुज़् का उर्दू में अनुवाद किया और मुकम्मल तफ़्सीर और अल्लामा की दूसरी तसानीफ़ की नक़ल करके एक दूसरा मख़तूता तय्यार कयि। इसके अलावा फ़ारसी के प्रसिद्ध कवी नज़ीरी के दीवान की शर्ह १३५३ हिज्री में उर्दू भाषा में लिखी है। मौलाना अब्दुल हकीम की दो तसानीफ़ ''बराहीने महेदविया'', ''अल क़ुरआन वल महेदी'' और तफ़्सीर लवमिउल बयान के पहले भाग का उर्दू अनुवाद छप चुके हैं। मौलाना मज्लिस उलमाए महेदविया हिंद के सदस्य थे।

अहमद नगर में एक विरोधी आलिम के षड़यत्रं की सूचना मिलने पर हैदराबाद से उलमा का एक वफ़द अहमद नगर गया था जिसमें मौलाना अब्दुल हकीम भी शामिल थे। इसके अलावा क़ादियानियौं से उनका एक मुबाहसा भी हुआ था।

मौलाना अब्दुल हकीम तदबीर ने बरोज़ जुमा ९ शाबान १३९३ हिज्री / ७ सेप्टम्बर १९७३ को वफ़ात पाई और हज़ीरा हज़रत बन्दगी मियाँ सय्यद राज मुहम्मद रहे० चंचलगुड़ा में दफ़न हैं।

प्रस्तावना

दौरे हाज़िर में तब्लीग़ो इशाअते मज़्हब की शदीद ज़रुरत और अहम्मियत से इन्कार नहीं किया जा सकता। बुनियादी दीनी तालीम से महरूमी के कारण युवा पीढ़ी और विदेशों में रहने वाले लोग आसानी से मुख़ालिफ़ीन की साज़िशों का शिकार हो रहे हैं, जबकि बेसते महेदी ज़रुरियाते दीन से है और यह उम्मते मुस्लिमा का सर्वमान्य अक़ीदा है अलबत्ता राय अलग - अलग है। एक गिरोह महेदी अले० की आमद का मुन्तज़िर है और यह अक़ीदा रखता है कि क़ियामत के क़रीब आयेंगे। दूसरा गिरोह हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी को महेदी मौऊद मानता है और मज़ीद किसी महेदी का मुन्तज़िर नहीं। तीसरा गिरोह सिरे से बेसते महेदी की ज़रूरत का मुन्किर है। इस तीसरे गिरोह की रद्द में अहले सुन्नत के कइ उलमा ने मुदल्लल किताबें लिखी हैं जो सऊदी अरब और पाकिस्तान वग़ैरा से प्रकाशित होचुकी हैं। चौधवीं सदी समाप्त होगइ इस लिये महेदी के विषय में पूरे विश्व में मुबाहस और तहक़ीक़ जारी है।

बेसते महेदी की ज़रुरत को मान्ने वाले गिरोहों में सिर्फ़ ज़माना, मक़ामे बेसत और तअय्युने - शख़्सी (व्यक्तिवका निर्धारण) में इख़्तिलाफ़े राये है। इस विषय के इस्बात (पुष्टि करण) और इन्कार पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित होचुकी हैं। ऐसी ही एक पुस्तक ''रिसाला बराहीने महेदविया'' है जिसमें इन विषयौं पर विस्तारपूर्ण और तर्कपूर्ण बहस की गइ है। यह रिसाला उर्दू भाषा में कइ बार छप चुका है जिसमें अल्लामा सय्यद शहाबुद्दीन साहब और मौलाना अबू सईद सय्यद महमूद तशरीफ़ुल्लाही साहब की तक़रीज़ (समीक्षा) शामिल है, लेकिन उर्दू से अपरिचित लौगौं के लिये इसे श्री शेख़ चाँद साजिद ने हिन्दी में लिप्यांतर किया है जो इस संस्था की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये श्री ज़हूर अहमद (औसा), श्री इक़बाल मुहम्मद ख़ाँ, श्री सय्यद क़ासिम (रीस कंस्ट्रक्शन) और श्री मुहम्मद यूसुफ़ (एपाज़ रेदीएटर्स) ने माली तआउन किया है। मैं लिप्यांतर कर्ता और वित्तिया सहयोग देने वालौं का आभारी हूँ और अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि उन्हें अजरे अज़ीम अता फ़रमाए और हमें सिराते - मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ और हिदायत अता फ़रमाए। आमीन

१४ जमादी उल अव्वल १४३९हिज्री /
१ फ़ब्रवरी २०१८

फ़क़ीर सय्यद हुसेन मीराँ
सचीव
इदारतुल इल्म महेदविया इस्लामिक लाइब्रेरी

भूमिका

हामिदन् व मुसल्लियन् - अम्बिया उले० के ज़माने में आम तौर पर यही सुन्नत जारी रही कि हर पैग़म्बर ने अपने बाद आने वाले पैग़म्बर की ख़बर दी है और ग़ैब की ख़बर अमूमन् इशारात और किनायात (संकेत) में बयान की जाती है। तौरेत में ईसा अले० और रसूलुल्लाह सल्ला० की जो बशारात आइ हैं वह सब मुब्हम अलफ़ाज़ (अस्पष्ट शब्दों) में हैं और इंजील में भी रसूलुल्लाह सल्ला० की बशारात (दैवी संदेश) इसी तरह हैं। ऐसी बशारात बहुत ही नादिरूल वजूद हैं जिनमें तफ़्सीलात आइ हों। इन आसमानी कुतुब के बरअक्स रसूलुल्लाह सल्ला० ने महेदी मौऊद अले० के बारे में जो बशारात दी हैं वह सब बित - तफ़्सील (विस्तारपूर्वक) हैं जिन से तअय्युने शख़्सी (व्यक्तिगत निर्धारण) या ज़ातो सिफ़ाते मौऊद को मुअय्यन करने में बड़ी मदद् मिलती है।

तअय्युने शख़्सी के उसूल की मिसाल यह है कि अगर किसी मक़ाम पर किसी ख़ास शख़्स का पता चलाना हो मगर वहाँ एक नाम के कई शख़्स हों तो पहले उस शख़्स का नाम और पिता का नाम फिर दूसरे अलामात मसलन् हुलिया वग़ैरह बयान करना पड़ेगा। फ़र्ज़ की जिये किसी का नाम सईद बिन हमीद है तो उस मक़ाम पर जितने सईद नाम वाले होंगे सब के पिता का नाम हमीद नहीं होगा और सब का हुलिया भी एकसाँ नहोगा। इसी उसूल पर इमामुना अले० का नाम सय्यद मुहम्मद, पिता का नाम सययद अब्दुल्लाह और माँ का नाम बीबी आमेना था जो रसूलुल्लाह सल्ला० की वालिदा मोतरमा का था। आप अहले बैत औलादे फ़ातिमा रज़ी० में इमाम हुसेन रज़ी० की औलाद से हैं। आपका हुलिया (मुखाकृति), सिफ़ात (विशेषण), जन्मस्थान और ज़मानए ज़ुहूर वही था जिसकी सराहत अहादीस में आइ है। इन अलामात के पाये जाने और बशारात के सादिक़ आने के बाद हम कह सकते हैं कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ही इमामुना महेदी मौऊद हैं और आप के बाद क़ियामत तक उन अलामात के साथ किसी और मुद्दइए महेदियत का आना मुम्किन नहीं।

मैं ने इस रिसाले में जिसका नाम ''बराहीने महेदविया'' रखा है चंद मबाहेस के तहत उन अहादीस को जमा करदिया है जो महेदी मौऊद की अलामात (लक्षण) पर मुश्तमिल है जिस से साबित हो जाता है कि हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी ही महेदीए मौऊद अले० हैं जिनके मब्ऊस होने की बशारत रसूलुल्लाह सल्ला० ने बयान फ़रमाइ है। तालिबाने हक़ो सदाक़त का फ़र्ज़ है कि वह अपने पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत अफ़ज़लुल अम्बिया वल मुर्सलीन अले० के इरशाद की ताअमील में इस रिसाले को ग़ौर से देखें और हक़ो सदाक़त की तहक़ीक़ करें।

वमा अलैना इल्लल बलाग़।

इस रिसाले में क़ुरआन और अहादीस के अलावा तारीख़ (इतिहास) और जुग़राफ़िया (भूगोल) के उसूल से भी इमाम अले० की महेदियत साबित करने की कोशिष की गह है और मश्हूर क़ौल ''इन्सान ख़ता और निसयान का मुरक्कब है'' के मुताबिक़ जहाँ कहीं'' कोइ लग़ज़िश नज़र आ जाये तो नाज़िरीने किराम को चाहिये कि मआफ़ करते हुवे मुलाहज़ा फ़रमायें।

मुहम्मद अब्दुल हकीम तदबीर महेदवी हैदराबादी

बराहीने महेदविया

१) महेदी मौऊद अले० का नाम, वलदियत और नसब वग़ैरह

अहादीसे रसूलुल्लाह सल्ला० में साफ़ और वाज़ेह तौर पर बताया गया है कि महेदी मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नाम नामी और इस्मे गिरामी वही होगा जो रसूलुल्लाह सल्ला० का था। इसी तरह महेदी मौऊद अले० के वालिद का भी वही नाम होगा जो रसूलुल्लाह सल्ला० के वालिद का था। इस संबंध में जो अहादीस वारिद हुवी हैं उनको मुख़्तसर तौर पर नीचे दर्ज किया जाता है।

१. दार क़ुत्नी, तब्रानी, अबू नुएम, हाकिम वग़ैरह मुहद्दिसीन ने इब्ने मसूद रज़ी० की रिवायत से यह हदीस लिखी है।

قال قال رسول الله ﷺ لا تذهب الدّنيا حتى يبعث الله رجلا من اهل بيتي يواطي اسمه اسمي و اسم ابيه اسم ابي فيملأ الارض قسطاً وعدلاً كما ملئت ظلماً وجوراً

अनुवाद : रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि दुन्या ख़त्म न होगी जब तक अल्लाह तआला मेरे अहले बैत से एक शख़्स को मब्ऊस न करे जिस का नाम मेरे नाम और उसके पिता का नाम मेरे पिता के नाम के मुवाफ़िक़ होगा, वह ज़मीन को अदल और इन्साफ़ से भर देगा जैसी कि वह ज़ुल्म और जोर (अत्यचार) से भरी हुवी होगी।*

२. अबू दाऊद ने इस तरह रिवायत की है।

عن زربن عبد الله عن النبي ﷺ قال لو بقي من الدنيا الايوم لطول الله ذالك اليوم حتى يبعث رجلاً من اهل بيتي يواطي اسمه اسمي واسم ابيه اسم ابي

* ?उसकी एक तश्रीह (स्पष्टी करण) यह भी की जाती है कि अर्ज़ के साथ जब समावात आता है तो तमाम रुए ज़मीन के माने होते हैं लेकिन जब सिर्फ़ अर्ज़ का लफ़्ज़ आता है तो उसके माने वह इलाक़ा या धरती का क्षेत्र है जहाँ कोई पैग़म्बर भेजा जाता है और ख़ुदाइ पैग़ाम आम करता है। जोर और ज़ुल्म के माने यह होते हैं कि एक चीज़ को उठा कर उसको ग़लत मक़ाम पर रखना। अदल के माने यह हैं कि ग़लत जगह पर रखदी गई किसी चीज़ को उसके असली मक़ाम पर रखना।

अनुवाद : ज़र् बिन अब्दुल्लाह ने नबी सल्ला० से रिवायत की है आप ने फ़र्माया अगर दुन्या ख़त्म होने में एक दिन भी बाक़ी रह जाये तो अल्लाह तआला उस दिन को इत्ना लम्बा कर देगा कि मेरे अहले बैत से एक शख़्स मब्ऊस हो जाये जिसका नाम मेरे नाम और उसके पिता का नाम मेरे पिता के नाम के मुताबिक़ होगा।

इन दोनों रिवायतौं से साबित है कि महेदी मौऊद अले० का नाम रसूलुल्लाह सल्ला० के नाम और महेदी अले० के पिता का नाम रसूलुल्लाह सल्ला० के पिता के नाम के मुवाफ़िक़ (अनुकूल) होगा। बेशक यह हदीसें और इनके अलावा दूसरी हदीसें जिन में ''उसका नाम मेरे नाम और उसके बाप का नाम मेरे बाप के नाम के मुवाफ़िक़ होगा'' की सराहत आइ है इमामुना महेदी मौऊद सैयद मुहम्मद जोनपूरी पर सादिक़ आती हैं। आप उन अहादीस के मिस्दाक़ (प्रमाण) हैं क्योंकि आप का शुभ नाम ''सैयद मुहम्मद'' और आप के पिताजी का नाम ''सैयद अब्दुल्लाह'' था और यह नाम रसूलुल्लाह सल्ला० के नाम और आपके पिता के नाम ''मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह'' से मुवाफ़क़त (अनुकूलता) हैं।

२) **महेदी अले० की कुन्यत :** रिसाला इक़्दुद् दुरर् में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी० से जो रिवायत आइ है और जिस में इमाम महेदी अले० की कुन्यत की सराहत, (विवरण) भी आइ है उसके अलफ़ाज़ यह हैं।

३. قال رسول الله صلعم يخرج فى آخر الزمان رجل من ولدى اسمه اسمى و كنيته كنيتى الخ

अनुवादः रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि आख़िर ज़माने में मेरी औलाद से ऐसा शख़्स ज़ाहिर होगा जिस का नाम मेरा नाम होगा और उस की कुन्यत (उपनाम) मेरी कुन्यत होगी।

यह हदीस भी इमाम अले० पर सादिक़ आती (सच साबित होती) है और आप इस हदीस के मिस्दाक़ (अनुकूल) हैं क्यों कि आप का नाम

सैयद मुहम्मद हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० के नाम मुहम्मद सल्ला० के मुवाफ़िक़ होने के अलावा आप की कुन्यत अबुल क़ासिम रसूलुल्लाह सल्ला० की कुन्यत अबुल क़ासिम के मुवाफ़िक़ थी।

३) महेदी अले० अहले बैत औलादे फ़ातिम रज़ी० से हैं।

नाम और कुन्यत के अलावा अहादीस (१,२) से महेदी अले० का अहले बैत से होना साबित है। निश्चित रूप से इमामुना अले० अहले बैत से हैं क्योंकि आप के नसब का सिलसिला (कुल - क्रम) हज़रत इमाम मूसा काज़िम से मिल कर इमाम हुसेन रज़ी० तक जाता है। नीचे लिखी गइ हदीस में भी जिस को अबू दाऊद, तब्रानी और हाकिम ने उम्मे सल्मा रज़ी० से रिवायत की है महेदी अले० के औलादे फ़ातिमा रज़ी० से होने की सराहत आइ है।

४. عن ام سلمہؓ سمعت رسول اللہ صلعم المھدی من عترتی من ولد فاطمہؓ .

आनुवादः उम्मे सल्मा रज़ी० कहती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्ला० को यह फ़र्माते सुना है कि महेदी मेरी इत्रत फ़ातिमा रज़ी० की औलाद से हैं। तब्रानी ने कबीर में और अबू नुएम ने अली इब्ने हुज़ेली से रिवायत की है।

५. ان رسول اللہ صلعم قال لفاطمۃ والذی بعثنی بالحق ان منھما (یعنی الحسن و الحسینؓ) مھدی ھذہ الامۃ .

अनुवादः रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़ातिमा रज़ी० से फ़र्माया कि क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने मुझे हक़ के साथ मब्ऊस किया है इस उम्मत के महेदी इन दोनों (हसन और हुसेन रज़ी०) की औलाद से होंगे। अबू नुएम ने रिवायत की है जो इमाम हुसेन रज़ी० से मर्वी है।

६. ان النبی صلی اللہ علیہ و سلم قال لفاطمۃ المھدی من ولدک

अनुवादः नबी सल्ला० ने फ़ातिमा रज़ी० से फ़र्माया कि महेदी तुम्हारी औलाद से होंगे।

इन तीनों हदीसों (४,५,६) से महेदी मौऊद अले० का फ़ातिमा रज़ी० की

नस्ल (वंश) से होना साबित होता है। चौथी हदीस से महेदी मौऊद अले० का रसूलुल्लाह सल्ला० की इत्रत (संतान) से होना और पांचवीं हदीस से आप का इमाम हसन रज़ी० और हुसेन रज़ी० की औलाद से पैदा होना ज़ाहिर है। हर दो की औलाद से पैदा होने का मत्लब यह है कि अगर महेदी अले० इमाम हसन रज़ी० की औलाद से होंगे तो आप का नानेहाल हुसेनी होगा और अगर आप इमाम हुसेन रज़ी० की औलाद से होंगे तो आपका नानेहाल हसनी होगा।

मुल्ला अली क़ारी और इक़्दुद् दुरर् के लेखक ने बयान किया है कि बाज़ अहादीस से इमाम महेदी का हसनी और बाज़ से हुसेनी होने का नतीजा निकलता है। शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने लिखा है ''अहादीस (महेदी) जो तवातुर की हद तक पहुंच गइ हैं यह साबि करती हैं कि इमाम महेदी अहले बैत फ़ातिमा रज़ी० की औलाद से हैं। बाज़ अहादीस में आप का औला दे हसन रज़ी० से और बाज़ में आप का औलादे हुसेन रज़ी० से होने का ज़िकर आया है उन सब पर अल्लाह का सलाम हो''

चुंकि महेदी मौऊद अले० की अलामात की इन अहादीस में किसी क़द्र इख़तिलाफ़ पाया जाता है इस लिये उलमा ने फ़ैसला किया है कि उन अहादीस का क़द्रे मुश्तरक (सारांश) यह है कि महेदी का फ़ातिमा रज़ी० की संतान से होना क़तई और यक़ीनी है। चुनांचे अल्लामा साअदुद्दीन तफ़्ताज़ानी ने *शर्ह मक़ासिद* में उसकी तौज़ीह (स्पष्टी करण) की है ''उलमा का फ़ैसला यह है कि वह (महेदी) इमाम आदिल औलादे फ़ातिमा रज़ी० से हैं ख़ुदाए तआला आप को जब चाहेगा अपने दीन की नुसरत के लिये पैदा करेगा''।

इस तक़रीर का नतीजा यह है कि इमाम महेदी अले० क़तई और यक़ीनी तौर पर फ़ातिमा रज़ी० की औलाद से होंगे लेकिन इमाम हसन रज़ी० की संतान से होना या इमाम हुसेन रज़ी० की संतान से होना आप के ज़ुहूर (प्रकटन) पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है। चूंकि इमामुना अले० हज़रत हुसेन रज़ी० की औलाद से हैं इस लिये वही अहादीस सही साबित होंगी जिन में इमाम हुसेन रज़ी० की औलाद से पैदा होने की सराहत आइ है।

४. इमामुना अले० की माँ का नाम रसूलुल्लाह सल्ला० की वालिदा के हमनाम थाः

अब तक जिन अहादीस का ज़िकर किया गया वह इमामुना अले० के नाम सैयद मुहम्मद, कुन्यत अबुल क़ासिम, आप के पिता का नाम सैयद अब्दुल्लाह अल मुखातिब ब सैयद ख़ाँ होने से मुतअल्लक़ थे। अब ग़ौर तलब अम्र यह है कि इमामुना अले० की वालिदा का क्या नाम होगा। अगरचे अहादीस में उस की सराहत नहीं है लेकिन हुस्ने इत्तेफ़ाक़ कहिये या क़ुद्रत का एजाज़ कि आप की माताजी का नाम भी बी बी आमेना ही था जो कि रसूलुल्लाह सल्ला० की वालिदा का नाम था। नसब का सिलसिला इमाम मूसा काज़िम से जा मिलता है।

क़ौमे महेदवियह की सीरत (जीवनी) की किताबों के अलावा ना तरफ़दार (निष्पक्ष) मुअर्रिख़ीन (इतिहास लेखक) की तहरीरात से भी हमारी तहरीरात (लेख) की तस्दीक़ (पुष्टि) होती है कि इमामुना अले० का शुभ नाम सैयद मुहम्मद् और आप के पिता का नाम सैयद अब्दुल्लाह था जिन का ख़िताब (उपाधि) सैयद खाँ था। मिसाल के तौर पर *तोहफ़तुल किराम* के लेखक शेर अली क़ानेअ ने लिखा है कि ''सैयदुल् औलिया सैयद मुहम्मद लक़ब (उपाधि) मीराँ महेदी बिन मीर अब्दुल्लाह जो सैयद ख़ाँ के नाम से मशहूर थे उन का सिलसिलए नसब (कुल क्रम) इमाम मूसा काज़िम से मिलता है।

इमामुना अले० के पिताजी का अस्ली नाम सैयद अब्दुल्लाह था लेकिन वह सैयद ख़ाँ के ख़िताब से मश्हूर थे। बाज़ लोगौं ने तन्ज़न् (व्यगंमय) इमाम अले० से पूछा कि महेदी के पिता का नाम तो रसूलुल्लाह सल्ला० के पिता का नाम होना चाहिये, सैयद ख़ाँ के बेटे महेदी कैसे हो सकते है? इमाम अले० ने भी तंज़ का जवाब तंज़ में दिया कि यह बात ख़ुदा से पूछो कि सैयद ख़ाँ के बेटे को महेदी क्यों बनाया है। बाज़ लोगौं को अब्दीयते कामिला (संपूर्ण बंदगी) की तरफ़ इशारा करते हुवे यह जवाब भी दिया है कि रसूलुल्लाह सल्ला० के पिता अब्दुल्लाह (अल्लाह के बन्दे) कैसे हो सकते हैं वह तो बुतौं के बन्दे थे, अब्दुल्लाह मुहम्मद हैं या महेदी अब्दुल्लाह है, यह तंज़ का जवाब तंज़ में था। हक़ीक़त यह है कि इमामुना अले० के पिता का नाम रसूलुल्लाह सल्ला० के पिता के नाम मे मुवाफ़िक़ सैयद अब्दुल्लाह था जैसा कि महेदवियह और दूसरे मुन्सिफ़ मुअर्रिख़ीन (न्यायवान्

इतिहास कार) के बयानात से ज़ाहिर है। (तफ़सील के लिये कोहलुल् जवाहिर मुअल्लिफ़ा हज़रत अल्लामा सैयद नुसरत रहे० देखो)।

५. रसूलुल्लाह सल्ला० और इमामुना अले० का हुलियाः

जिस तरह *शमाइले तिर्मिज़ी* और *मिश्कात* वग़ैरह अहादीस की किताबों में रसूलुल्लाह सल्ला० के हुलयए मुबारक (शुभ रूप रेखा) की हदीसें आइ हैं उसी तरह मियाँ शाह अब्दुर् रहमान की लिखित *मौलूद शरीफ़* और *इन्तेख़ाबुल् मवालीद* वग़ैरह कुतुबे सियर (जीवनी) में इमामुना अले० के हुलिये से मुतअल्लक़ रिवायात पूर्ण रूप से बयान की गइ हैं। अगर हम उन अहादीसे नबवी और रिवायाते इमामुना अले० को मिलाकर देखें तो ज़ाहिर होगा कि रसूलुल्लाह सल्ला० और इमामुना महेदी मौऊद अले० के हुलियों में कोइ फ़र्क़ नहीं था जैसा कि नीचे दी गइ तफ़सील से साबित है।

हज़रत रिसालत माब का हुलिया अहादीस अनुसार (संक्षेप)	इमामुना महेदी अले० का हुलिया महेदवियह कुतुब अनुसार
१. नबी सल्ल० न तवील थे न छोटे क़द के (तिर्मिज़ी)	आप का क़द छोटा था न दराज़ (इन्तेख़ाबुल मवालीद)
२. आप का रंग रोशन था (तिर्मिज़ी)	आप का चहरा दरख़शाँ (प्रकाशवान) था (इन्तेख़ाबुल मवालीद)
३. बाल न घुंघरयाले थे और न सीधे (शमाइले तिर्मिज़ी)	बाल न लम्बे थे न छोटे (मौलूद शरीफ़)
४. आप की दाढ़ी घनी थी (शमाइले तिर्मिज़ी)	आप की दाढ़ी घनी थी (मौलूद शरीफ़)
५. सरे मुबारक बड़ा था (शमाइले तिर्मिज़ी)	सरे बुारक बड़ा था
६. जबीने मुबारक (पेशानी) कुशादा थी (शमाइले तिर्मिज़ी)	आपकी पेशानी कुशादा थी (मौलूद शरीफ़)
७. आप पैवस्ता अब्रू थे (शमाइले तिर्मिज़ी)	आप के अब्रू बाहम मिले हुवे थे (मौलूद शरीफ़)

८. आँखें बुहत सियाह थी (शमाइले तिर्मिज़ी)	आँखें बुहत सियाह थीं (शवाहिदुल विलायत)
९. ऊंची नाक (शमाइले तिर्मिज़ी)	ऊंची नाक (मौलूद शरीफ़)
१०. पल्कें दराज़ (शमाइले तिर्मिज़ी)	पल्कें दराज़ (लंबी) (मौलूद शरीफ़)
११. दन्दाने मुबारक के दरमियान सांदें थी (इब्ने अब्बास - मिशकात)	दाँत क़ुशादा थे (शवाहिदुल विलायत)
१२. आप तबस्सुम के तौर पर हंसते थे (जाबिर बिन अब्दुल्लाह - मिशकात)	आप हंसते कम थे, तबस्सुम ज़्यादा फ़र्माते थे (मौलूद शरीफ़)
१३. आप की गर्दन गुड़या की सी थी जिस में चाँदी की सफ़ाई झलकती हो	मुतवस्सित गर्दन (मौलूद शरीफ़) मुतवस्सित गर्दन - सफ़ाइ में सूरज की तरह दरख़शाँ (शवाहिदुल विलायत)
१४. चहरए मुबारक में गोलाइ थी (शमाइले तिर्मिज़ी)	चहरा रोशन चौधवी के चाँद के जैसा था (मौलूद शरीफ़)
१५. शाना हाये मुबारक (कंधे) कुशादा थे (शमाइले तिर्मिज़ी)	शाना हाये मुबारक कुशादा थे (मौलूद शरीफ़)
१६. सीना मुबारक कुशादा था (शमाइले तिर्मिज़ी)	सीना मुबारक कुशादा था (मौलूद शरीफ़)
१७. सीने से नाफ़ तक बालों का एक बारीक ख़त (रेखा) था (शमाइले तिर्मिज़ी)	सीने से नाफ़ तक बालों का एक बारीक ख़त था (शवाहिदुल विलायत)
१८. दोनों बाजूए मुबारक की हडडीयाँ बड़ी और ज़बर्दस्ता थीं (शमाइले तिर्मिज़ी)	आप के बाज़ूए मुबारक दराज़ थे (मौलूद शरीफ़)
१९. दोनों पंजए मुबारक मोटाइ की तरफ़ माइल थे (शमाइले तिर्मिज़ी)	क़वी पंजा (शवाहिदुल विलायत)
२०. उंगलियाँ लंबी लंबी थीं (शमाइले तिर्मिज़ी)	उंगलियाँ लंबी लंबी थीं (मौलूद शरीफ़)

२१. आप तनावर (लहीम शहीम) थे (शमाइले तिर्मिज़ी)	आप की हडडीयाँ चौड़ी चकली थीं (मौलूद शरीफ़)
२२. हज़रत अनस रज़ी० कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्ला० की ख़ुशबू से ज़ियादा ख़ुशबूदार न मिश्क सूंघा न अंबर (मिश्कात)	आप का पसीना गुलाब के मानिंद ख़ुशबू दार था और लुआबे दहेन में मिश्क और अंबर की ख़ुशबू थी (मौलूद शरीफ़)

जिन अहादीस में रसूलुल्लाह सल्ला० ने ख़ुद महेदी अले० का हुलिया बयान फ़र्माया है उन में से चंद मिसाल के तौर पर यहाँ बयान किये जाते हैं।

उबू दाऊद नुएम बिन हम्माद और हाकिम ने अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० से रिवायत की है। قال قال رسول الله صلعم المهدى منى اجلى الجبهة اقنى الانف रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है कि महेदी मुझ से हैं वह रोशन पेशानी और ऊंची नाक वाले होंगे। यह हदीस इमामुना अले० पर सादिक़ आती है क्योंकि मौलूद शरीफ़ में रोशन पेशानी और ऊंची नाक के अलफ़ाज़ आये हैं।

रूयानी ने मुसनद में और अबू नुएम ने हुज़ेफ़ा रज़ी० से रिवायत की है।

قال رسول الله صلعم المهدى رجل من ولدى لونه لون عربى و جسمه جسم اسرائيل علىٰ خده الايمن خال كانه كو كب درى .

रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि महेदी मेरी औलाद से एक शख़्स है जिन का रंग अरबी और जिस्म इसराईली होगा, दाईं रूख़सार पर ख़ाल (तिल) रोशन सितारे की तरह चमकता होगा।

यह हदीस भी इमामुना अले० पर सादिक़ है। मौलूद शरीफ़ में रंग के संबंध में गन्दुम् गूँ (गेहूँ जैसा) और जिस्म की सराहत में दराज़ बाज़ू, कुशादा कंधे, क़वी पंजा, लंबी उंगलियाँ लिखा है जिस से जिस्म इसराईली की तरफ़ इशारा पाया जाता है और ख़ाल (तिल) के बारे में सीधे रूखसार पर काली तिल होने की सराहत आइ है।

हुज़ेफ़ा रज़ी० से रिवायत है قال قال رسول الله صلعم المهدى رجل من ولدى وجهه كالكوكب الدرى रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि महेदी मेरी औलाद से हैं जिन का चेहरा सितारे की तरह चमकता होगा।

यह हदीस भी इमामुना अले० पर सादिक़ है क्योंकि मौलूद शरीफ़ में चौधवीं के चाँद जैसा रोशन चेहरा की सराहत आइ है।

अली रज़ी० बिन अबू तातिब से रिवायत है

عن علی ابن ابی طالب قال المهدی کت اللحیة اکحل العینین فی وجهه خال فی کتفه علامة النبی

अली रज़ी० बिन अबू तालिब से रिवायत है आप ने फ़र्माया कि महेदी घनी दाढ़ी और सुर्मगीं आँख वाले होंगे चेहरे पर ख़ाल और कंधे पर नबी की अलामत होगी।

यह हदीस भी इमामुना अले० पर सादिक़ है। मौलूद शरीफ़ में ''घनी दाढ़ी बनी इसराईल की आँखों जैसी आँखें यानि बड़ी और बुहत आबदार पुतलियाँ काली सीधे रुख़सार पर तिल और सीधे कंधे पर ''मुहरे विलायत'' होने की सराहत आइ है। मुहरे विलायत एक ऐसी अलामत है जो मुहरे नबूवत की तरह किसी और में नहीं पाइ जा सकती, उस से इमाम अले० ख़ास तौर पर मुम्ताज़ (प्रमुख) साबित होते हैं और यही आप की सदाक़त (सत्यता) की खुली दलील है।

६. इमाम महेदी अले० का ज़मानए बेअसत और मक़ोम पैदाइश

इमाम महेदी अले० के ज़मानए बेअसत (प्रकटन काल) और मक़ामे पैदाइश की बहेस बड़ी अहम और पेचीदा है। मुसलमानौं के एक बड़े गुरोह का यह ख़याल है कि इमाम महेदी अले० ऐसे ज़माने में होंगे जब कि ईसा अले० का भी नुज़ूल हो जायेगा। इमाम महेदी नमाज़ में इमाम और ईसा अले० मुक़तदीयौं में होंगे या ईसा इमाम और महेदी मुक़तदी होंगे। इसके अलावा अवाम का ख़याल यह भी है कि महेदी अले० रुये ज़मीन के बादशाह होंगे और आप के ज़माने में दुन्या के सब लोग एक ही दीन पर क़ाइम हो जायेंगे, हालांकि ऐसा अक़ीदा अक़्ली और नक़ली दलाइल से किसी तरह भी क़ाबिले तस्लीम नहीं है।

७. इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० को सहीह मान्ने वालौं के चार दलाइल

जो लोग यह कहते हैं कि महेदी और ईसा अले० एक ही ज़माने में जमा

होंगे उन के दलाइल चार हदीसौं पर निर्धारित हैं। पहली हदीस वह है जो *सहीह बुख़ारी* और *सहीह मुसलिम* में आई है।

عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلعم کیف انتم اذا نزل ابن مریم فیکم و امامکم منکم

अबू हुरेरा रज़ी० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया तुम्हारा क्या हाल होगा जब इब्ने मर्यम तुम में नाज़िल होंगे हालांकि वह तुम्हारे इमाम तुम में से हैं। इस हदीस में लफ़्ज़ **इमामुकुम** (तुम्हारे इमाम) ज़ेरे बहस है।

दूसरी हदीस वह है जिसको इब्ने माजा ने अबू अमामा बाहिली से रिवायत की है हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० ने एक तवील ख़ुत्बा दिया जिस में दज्जाल के हालात और वाक़िआत का ज़िकर फ़र्माया, उम्में शरीक ने पूछा उस वक़्त अरब कहाँ होंगे, फ़र्माया वह बुहत थोड़े होंगे और बैतुल मुक़द्दसेमें रहेंगे, उन का इमाम एक मर्दे सालेह होगा। उस हदीस का ज़रुरी मतन यह है।

قال یومئذ وهم قلیل رجلهم بیت المقدس و امامهم رجل صالح فبینما امامهم قد تقدم یصلی بهم الصبح اذنزل عیسیابن مریم الصبح.

अनुवादः फ़र्माया वह उस वक़्त थोड़े होंगे उकसर बैतुल मुक़द्दस में रहेंगे और उनका इमाम एक मर्दे सालेह होगा उस वक़्त जब कि इमाम उन्हें नमाज़ पढ़ाने के लिये आगे बढ़ेगा यकायक ईसा इब्ने मर्यम सुब्ह के वक़्त नाज़िल होंगे।

इस हदीस में **इमामुहुम** (उनका इमाम) का लफ़्ज़ ज़ेरे बहस है।

तीसरी हदीस यह है जो सहीह मुस्लिम में आई है।

لاتزال طائفة من امتی یقاتلو ن علی الحق ظاهرین الیٰ یوم االقیٰمة فینزل عیسیٰ بن مریم فیقول امیر هم تعال صل لنا فیقول لا ان بعضکم علی بعض امراء مکرمة الله هده الامة.

अनुवादः मेरी उम्मत की एक जमाअत क़यामत तक हक़ पर लड़ती और ग़ालिब रहेगी, ईसा अले० नाज़िल होंगे तो उनको उनका उमीर कहेग आइये हमें नमाज़

पढ़ाइये, ईसा अले० कहेंगे नहीं अल्लाह ने इस उम्मत को जो बुज़ुर्गी दी है उसके नज़र करते तुम में से बाज़ बाज़ के उमीर हैं।

इस हदीस में **अमीरुहुम** (उनका अध्यक्ष) ज़ेरे बहस है।

चौथी हदीस भी *सहीह मुस्लिम* में आइ है जिस का ज़रुरी मतन (मुल पाठ) यह है।

عن ابی هریرة ان رسول الله صلعم قال لا تقوم الساعة حتی ینزل الروم بالا
عماق اوبدابق فیخرج الیهم جیش من المدینه من خیار اهل الارض الخ

अबू हुरेरा रज़ी० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक रूमी आमाक़ या दाबिक़ में नुज़ूल न करें पस मदीना से एक लश्कर जो उस ज़माने के बेहतरीन लोगों का होगा उन से मुक़ाबले के लिये निकलेगा।

इस हदीस में **जैशा मिनल् मदीना** (मदीना से एक लश्कर) का जुम्ला ज़ेरे बहस है।

८. इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० को सच मान्ने वालौं की ग़लत फ़हमी के कारणः

पहली हदीस के अलफ़ाज़ كيف انتم اذا نزل ابن مريم فيكم واما مكم منكم मे वाव को आतिफ़ा (संयोजक) मान्ने की ज़रुरत ही नहीं है बल्कि उसको हालिया मान्ना बेहतर होगा। इस सूरत में हदीस का अनुवाद यह होगा ''तुम्हारा क्या हाल होगा जब कि इब्ने मर्यम तुम में नाज़िल होंगे इस हाल में कि तुम्हारे इमाम तुम में से होंगे। यह तर्जुमा इस वज्ह से सहीह है कि सहीह मुस्लिम की एक और हदीस उसकी ताईद करती है।

قال رسول اللهؐ كيف انتم اذا نزل ابن مريم فيكم فامّكم

रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया तुम्हारा क्या हाल होगा जब कि तुम में इब्ने मर्यम नाज़िल होंगे वह तुम्हारी इमामत करेंगे।

इस हदीस से ज़ाहिर है कि इब्ने मर्यम ही इमामत करेंगे कोइ दूसरा इमाम न होगा। *वाव* को हालिया मान्ने से इब्ने मर्यम और इमाम को अलग-अलग दो शख़्स

मान्ने की ज़रुरत नहीं उसके बरख़िलाफ़ *वाव* को आतिफ़ा मान्ने से यह लाज़िम आता है कि इब्ने मर्यम और इमाम दो शख़्स अलग - अलग होंगे। बिलफ़र्ज़ *वाव* को आतिफ़ा भी मान लिया जाये तो इमाम से मुराद महेदी नहीं हो सकते क्योंकि शब्द इमाम मुत्लक़ (सामान्य) है। ईसा अले० के नुज़ूल के वक़्त जो शख़्स भी इमाम होगा इस लिये वही मुराद हो सकता है। और वह शख़्स महेदी भी होगा इसका कोइ क़रीना (अनुमान) मौजूद नहीं है।

दर अस्ल आम लोगौं के मुग़ालता (भ्रम) में पड़ कर महेदी और ईसा अले० एक काल में जमा होने के क़ाइल होजाने और पहले की दो हदीसौं में इमाम और तीसरी हदीस में अमीर से मुराद महेदी अले० लेने की ख़ास वज्ह यह हुवी है कि बाज़ मुताख़िरीन (बाद के) मुहाद्दिसीन की किताबौं में लफ़्ज़ महेदी का इज़ाफ़ा हो गया। चुनांचे अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने *अल उरफ़ुल वर्दी* में सहीह मुस्लिम की हदीस *कैफ़ अन्तुम* में *इमामुकुम* के बाद अल महेदी और इब्ने माजा की दूसरी हदीस में अल्लामा मज़्कूर ने रुयानी और अबू अवाना की रिवायत से *इमामुहुम* के बाद अल महेदी का इज़ाफ़ा करके *इमामुकुम अल महेदी* और *इमामुहुम अल महेदी*, इसी तरह तीसरी हदीस में अबू नुएम अस्बहानी की रिवायत से *अमीरुहुम* के बाद *अल महेदी* का इज़ाफ़ा करके *अमीरुहुम अल महेदी* लिख दिया है। मज़ीद वज़ाहत के लिये अस्ल अहादीस के अलफ़ाज़ और इज़ाफ़ा किये गये अलफ़ाज़ नीचे दर्ज किये जाते हैं

अबू अवाना की नक़ल कर्दा हदीस كيف انتم اذا نزل ابن مريم فيكم وامكم المهدى منكم	सहीह मुस्लिम की पहली हदीस كيف انتم اذا نزل ابن مريم فيكم وامامكم منكم
रुयानी की रिवायत कर्दा हदीस قال يومئذهم قليل رجلهم بيت المقدس وامامهم المهدى رجل صالح الخ	इब्ने माजा की दसरी हदीस قال يومئذهم قليل رجلهم بيت المقدس واما مهم رجل صالح الخ
अबू नुएम अस्बहानी की नक़ल कर्दा हदीस فينزل عيسىٰ بن مريم فيقول امير هم المهدى تعال صل لنا الخ	सहीह मुस्लिम की तीसरी हदीस فينزل عيسىٰ بن مريم فيقول امير هم تعال صل لنا الخ

पहली और दूसरी हदीस में जहाँ मुत्लक़ (सामान्य) इमाम और तीसरी हदीस में मुत्लक़ अमीर का लफ़्ज़ आया है तो बाद के मुहद्दिसीन की जानिब से इज़ाफ़ा किसी तरह क़ाबिले तसलीम (स्वीकृत) नहीं हो सकता। यही वज्ह है कि अल्लामा शेख़ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल हक़ बिन अब्दुर रहमान ने अपनी किताब *मज्मअ बैनस् सहीहैन* मे امامكم المهدى منكم पर तन्क़ीद करते हुवे लिखा है

واما ما ذكر اللفظ موضوعاً فى هذا الحديث و هو قو لهم " امامكم المهدى منكم يثبت الامامة للمهدى فى صلوة عيسىٰ فقد ظهر ونشر كذبه بمقابلة و الصحيحين اعنى البخارى والمسلم فانه لم يذكر فيهما ولا فى منتخبا تهما كالمشارق والمصابيح و المشكوة.

अनुवाद : इस हदीस में जो लफ़्ज़ मौज़ूअ (घड़ा हुआ) बयान किया गया है वह उन का क़ौल *इमामुकुम अल महेदी मिन्कुम* है जिस से महेदी के लिये ईसा अले० की नमाज़ में इमामत साबित होती है। इस लफ़्ज़ का मौज़ूअ और ग़लत होना सहीहैन यानि बुख़ारी और मुस्लिम के मुक़ाबिल में ज़ाहिर है क्योंकि वह लफ़्ज़ (महेदी) उन दोनों हदीसौं में ज़िकर नहीं किया गया है और न उनके मुन्तख़बात, मसाबीह और मिश्कात की किताबौं में बयान किया गया है।

इब्ने माजा की दूसरी हदीस से जिस में बैतुल् मुक़द्दस का ज़िकर है और ''*इमामुहुम*'' के बाद ''*अल महेदी*'' का इज़ाफ़ा किया गया है उसी से अवाम ने यह ख़याल कर लिया है कि इमाम महेदी का तअल्लुक़ बैतुल मुक़द्दस से होगा, हालाँक जब अल महेदी का इज़ाफ़ा ही क़ाबिले एतिराज़ है तो इमाम महेदी अले० का संबंध बैतुल मुक़द्दस से कैसे क़ाबिले तस्लीम होगा? नतीजा यह कि उन अहादीस में इमाम के लफ़्ज़ से मुराद महेदी नहीं होसकते। इस लिये इमाम महेदी के बैतुल मुक़द्दस में ज़ाहिर होने की ख़बर बेबुन्याद (निराधार) है। अलावा इसके उस मौज़ूअ (घड़ित) हदीस के सिवा कोई और हदीस भी नहीं है जिस में इमाम महेदी के बैतुल मुक़द्दस में ज़ुहूर की ख़बर दी गई हो।

चौथी हदीस जिसमें मदीना से एक लश्कर निकलने का ज़िकर है उसको इमाम महेदी अले० का लश्कर समझ लिया गया है। यह क़ौल मक़दसी का है जिसको साहबे *मदारुल फ़ुज़ला* ने रद् किया है हालांकि उस हदीस में न महेदी का ज़िकर है और न उसका शाइबा (झलक)। उस हदीस की तौज़ीह *मुस्लिम* की एक दूसरी हदीस से भी होती है जिसके इब्तिदाइ अलफ़ाज़ हैं

عن ابی هریرة ان النبی صلی الله علیه وسلم قال سمعتم بمدینة

इस से ज़हिर है कि जैश (लश्कर) से मुराद लश्करे महेदी अले० नहीं हो सकता क्योंकि इस हदीस में साहबे लश्कर का बनी इसहाक़ से होना बयान किया गया है जब कि इमाम महेदी अले० बनी इसमाईल से हैं। इस बहस का ख़ुलासा यह है कि बयान की गई अहादीस में इमाम और अमीर से मुराद महेदी अले० नहीं होसकते और ''मदीना का लश्कर'' से मुराद भी इमाम महेदी अले० का लश्कर नहीं होसकता, इस लिये महेदी अले० और ईसा अले० का एक ही ज़माने में इकट्ठा होने का ख़याल सिरे से बातिल है।

९. महेदी अब्बासी को महेदी मौऊद मानकर इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० का तसव्वुर भी ग़लत हैः

बाज़ हदीसें ऐसी भी हैं जिनका मज़्मून यह है कि ईसा इब्ने मर्यम महेदी अब्बासी की इक़्तिदा से नमाज़ पढ़ेंगे। उन अहादीस से भी महेदी अले० और ईसा अले० के इज्तिमा और महेदी की इमामत का तसव्वुर (क्लपना) पैदा कर लिया गया हो तो कुछ अजब नहीं। उन रिवायतों के बारे में सिर्फ़ इतना कहदेना काफ़ी है कि जिन मुहद्दिसीन ने उन हदीसों की रिवायत की है उनकी सनद ज़ईफ़ होने की ख़ुद मुहद्दिसीन ने सराहत करदी है। जब उन अहादीस के मुन्कर और ज़ईफ़ होने की सराहत आचुकी है और महेदी मौऊद के अहले बैत और औलादे फ़ातिमा रज़ी० से होने की निसबत बेशुमार अहादीस मौजूद हैं और महेदी अब्बासी बिन अबू जाफ़र मन्सूर के ज़माने में ईसा बिन मर्यम का नुज़ूल भी नहीं हुवा तो उन अहादीस से बहस की ज़रूरत नहीं। ऐसी अहादीस मुग़ैयबात (ईश्वरीय भाविष्य कथन) और एतिक़ादियात में क़ाबिले हुज्जत (प्रमाण पात्र) भी नहीं होसकतीं।

१०. ईसा अले० और महेदी अले० एक दूसरे की इक़्तिदा करना ग़लत है

चूंकि महेदी अले० और ईसा अले० का एक ही ज़माने में जमा होने का मसअला (विषय) ही बातिल (असत्य) है इस लिये ईसा अले० का महेदी अले० की इक़्तिदा करना या महेदी अले० का ईसा अले० की इक़्तिदा करना भी बातिल है। यही वजह है कि अल्लामा साअदुद्दीन तफ़्ताज़ानी ने *शर्ह मक़ासिद* में उसकी तरदीद (खंडन) करदी है और कहा है ''यह जो कहा जाता है कि ईसा अले० महेदी अले० की इक़्तिदा करेंगे या उसके बिलअक्स (विपरीत) यह ऐसी बात है जिसकी कोई सनद नहीं उसपर तवज्जुह नहीं करना चाहिये''।

فما يقال ان عيسىؑ يقتدى بالمهدى او بالعكس شيء لا مستند له فلا ينبغى ان يعول عليه

११. इजितमाए महेदी और ईसा हदीसे रसूलुल्लाह सल्ला० के ख़िलाफ़ है

इस बहस के अलावा चंद और भी दलायल हैं जिन से इज़तिमाए महेदी और ईसा अले० के बातिल होने का सुबूत मिलता है मसलं सहीह मुस्लिम में अबू हुरेरा रज़ी० से यह रिवायत लिखी है قال قال رسول الله ﷺ اذا ابو يع الخليفتان فاقتلوا الأخر منهما.

अनुवाद : रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है कि जब दो ख़लीफ़ौं से एक ही वक़्त बैअत की जाये तो उनमें से दूसरे को क़तल करदो।

इमाम नुववी शारेह मुस्लिम ने इस पर उलमा का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ होना बयान किया है। चुनांचे उनका क़ौल है: ''उलमा का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ है कि दो ख़लीफ़ौं से एक ज़माने में बैअत जाइज़ नहीं''।

इमाम महेदी अले० का ख़लीफ़तुल्लाह होना हदीसे सोबान रज़ी० और इब्ने उमर रज़ी० से साबित है जिसका ज़िकर आगे आयेगा इस तहर ईसा अले० भी ख़लीफ़तुल्लाह हैं। अगर महेदी अले० और ईसा अले० का एक वक़्त में जमा होना फ़र्ज़ किया जाये तो चूंकि महेदी अले० पहले से मौजूद होंगे इस लिये लोग आप से बैअत करलेंगे, जब ईसा अले० बाद में नाज़िल होंगे तो अल्लाह माफ़ करे ''दूसरे को क़तल करदो'' का मौरिद (मुस्तहक़) साबित होंगे। यह नतीजा सिर्फ़ इस वजह से निकल रहा है कि दोनों अल्लाह के ख़लीफ़ौं को एक वक़्त में तस्लीम

किया जा रहा है। अगर यह दोनों अलग-अलग अपने अपने ख़ास वक़्तों में मब्ऊस हों (आयें) तो न तज़ाद (प्रतिकूलता) की सूरत पैदा होती है न दूसरे को क़तल करदो का फ़त्वा सादिर करने की ज़रूरत होगी।

१२. अहादीस दफ़ए हलाकते उम्मत से साबित है कि इज्तिमाए महेदी और ईसा ग़लत है

उम्मते मुहम्मदिया को हलाकत से बचाने की अहादीस तो क़तई तौर पर साबित करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० उम्मत के अव्वल दाफ़ेअ हलाकते उम्मत हैं तो ईसा अले० आख़िरे उम्मत में और महेदी अले० वस्ते उम्मत में, फिर वह क्या सूरत होगी जिस से महेदी अले० और ईसा अले० एक ज़माने में जमा होने का एतिक़ाद क़ाइम रह सके। नीचे दी गई अहादीस से इस विषय पर काफ़ी रोश्नी पड़ सकती है। हाकिम ने इब्ने उमर रज़ी० से रिवायत की है

كيف تهلک امة انا اولها و عيسىٰ بن مريم اٰخر ها

अनुवाद : वह उम्मत कैसे हलाक होगी जिस के पहले मैं हूँ और ईसा इब्ने मर्यम उसके आख़िर में हैं।

इब्ने असाकर ने रिवायत की है

كيف تهلک امة انا فی اولها وعيسى بن مريم فی اٰخر ها والمهدی من اهل بيتی فی وسطها.

अनुवाद : वह उम्मत किस तरह हलाक होगी जिसके अव्वल मैं हूँ और ईसा इब्ने मर्यम उसके आख़िर में और महेदी मेरे अहले बैत से उसके वस्त में हैं।

अबू नुएम ने अख़बारे महेदी में इब्ने अब्बास रज़ी० से रिवायत की है

لن تهلک امة انا فی اولها و عيسىٰ بن مريم فی اٰخر ها و المهدی فی وسطها.

अनुवाद : वह उम्मत हर गिज़ हलाक नहीं हो सकती जिसके अव्वल मैं हूँ और ईसा बिन मर्यम उसके आख़िर में और महेदी उसके दरमियान् में।

तफ़सीरे मदारिक में आयत الیٰ متوفیک و رافعک الیٰ के तहत हदीस लिखी है।

كيف تهلک امة انا فی اولها و عيسىٰ فی اٰخر ها والمهدی من اهل بيتی فی وسطها

अनुवाद : वह उम्मत किस तरह हलाक होगी जिसके अव्वल मैं हूँ ईसा उसके आख़िर में और महेदी मेरे अहले बैत से उसके दरमियान्।
इमाम जाफ़र रज़ी० से जो रिवायत मर्वी है उसके अलफ़ाज़ यह हैं

عن جعفر عن ابیه عن جده قال قال رسول الله ﷺ کیف تهلک امة انا اولها وا لمهدی وسطها و المسیح اخرها و لکن بین ذالک فیج اعوج لیسوا منّی ولا انا منهم رواه رزین.

अनुवाद : हज़रत इमाम जाफ़र रज़ी० अपने बाप से वह दादा की रिवायत से कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि वह उम्मत कैसे हलाक होगी जिसके अव्वल मैं हूँ और उसके दरमियान महेदी और उसके आख़िर में मसीह हैं लेकिन उनके दरमियान् ऐसी टेढ़ी जमाअत हैं जो न मेरी है न मैं उसका हूँ।

याहया बिन अब्दुल्लाह बिन हसन से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ी० ने अपने ख़ुत्बे में फ़र्माया कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने बुहत सी बातें फ़र्माइ हैं उनमें से यह भी फ़र्माया कि یا علی کیف تهلک امة انا اولها و مهدینا اوسطها والمسیح ابن مریم اخر ها

अनुबाद : ऐ अली वह उम्मत कैसे हलाक होगी जिसके अव्वल मैं हूँ और वस्त में महेदी और मसीह इब्ने मर्यम उसके आख़िर में है।

इन सब अहादीस का अर्थ और शब्द तक़रीबन् मिलते जुलते हैं अगरचे मरफ़ूअ् नहीं मालूम होती लेकिन यह शब्द ''जिसके अव्वल मैं हूँ'', ''मेरे अहले बैत से'' और ''मुझ से नहीं'' की निसबत (सम्बधं) ख़ास मुख़्बिरे सादिक़ (सच्चा सूचक) सल्ला० की तरफ़ हो सकती है इस लिये यह अहादीस मांनन् (आर्थिक) मर्फूअ् हैं। और महेदी अले० और ईसा अले० के एक ज़माने में जमा होने की निश्चित रुप से ख़ंडन करती हैं। (तौज़ीहुल फ़हवा)

१३. इज्तिमाए महेदी और ईसा उसूले अक़्ल के ख़िलाफ़ भी है।

अगर अक़्ली उसूल (बौद्धिक नियम) से महेदी अले० और ईसा अले० एक वक़्त में जमा होने के विषय को जाँचा जाये तो उसमें कई नक़ायस (खोट) पाये जायेंगे।

फ़र्ज़ करो महेदी अले० और ईसा अले० एक ही वक़्त में जमा हों और वह दोनों ख़लीफ़तुल्लाह हैं यह इज्तिमाअ दो हाल से ख़ाली नहीं, या तो महेदी अले० ताबे होंगे ईसा अले० के या ईसा अले० ताबे होंगे महेदी अले० के। फ़र्ज़ किया जाये कि महेदी अले० ताबे हों ईसा अले० के तो उस सूरत में सलीब तोड़ना, ख़िंज़ीर को क़त्ल करना और जिज़्या मौक़ूफ़ करना यह सब काम महेदी अले० को करना लाज़िम होगा जो अहादीसे नबवी में ईसा अले० के फ़राइज़ बताये गये हैं। इसी तरह फ़र्ज़ किया जाये कि ईसा अले० ताबे हों महेदी अले० के तो उस सूरत में ईसा अले० को अपने फ़राइज़ यानि सलीब तोड़ना, ख़िंज़ीर को क़त्ल करना, जिज़्या मौक़ूफ़ (समाप्त) करना यह सब काम तर्क करके महेदी अले० के फ़राइज़ पर अमल करना लाज़िम आयेगा जो सिर्फ़ नुसरते दीने मुहम्मदी के लिये आये हैं। यह सब ख़राबियाँ इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० को तस्लीम करने की वजह से पैदा होंगी। सहीह तो यह है कि एक मुस्तक़िल (स्थायी) ख़लीफ़ा दूसरे मुस्तक़िल ख़लीफ़ा के ताबे होने से किसी एक को ग़ैर मुस्तक़िल मान्ना ज़रुरी होगा जैसे मूसा और हारुन अले० की मिसाल मौजूद है कि हारुन अले० बा इख़्तियार नहीं थे और आपका जो भी काम था वह मूसा अले० से मन्सूब था।

१४. महेदी का ज़ुहूर अश्राते सुग़रा और ईसा का ज़ुहूर अश्राते कुब्रा से मुतअल्लक़ है

महेदी और ईसा अले० एक वक़्त में जमा न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि क़ियामत के आसार (निशानियाँ) और अलामात की दो क़िस्में हैं जिनको अश्राते सुग़रा और अश्राते क़ुब्रा कहते हैं यानि क़ियामत की छोटी और बड़ी अलामतें। रसूलुल्लाह सल्ला० ने अश्राते कुब्रा में दस चीज़ें बयान फ़र्माइ हैं जैसा कि हुज़ेफ़ा रज़ी० की रिवायत से ज़ाहिर है।

अनुवाद : ''हुज़ेफ़ा रज़ी० कहते हैं कि हम आपस में बातें कर रहे थे ऐसे में नबी सल्ला० बरामद हुवे पूछा क्या बातें कर रहे हो कहा कि हम क़ियामत का तज़्करा कर रहे हैं। अपने फ़र्माया जब तक उस से पहले दस निशानियाँ तुम न देखो क़ियामत हर गिज़ न आयेगी। फिर आप ने दुख़ान (धुवाँ) दज्जाल, दाब्बतुल अर्ज़, सूरज का पश्चिम से निकलना,

ईसा बिन मर्यम का नुज़ूल, याजूज् माजूज् का निकलना, तीन ख़सफ़ यानि मश्रिक़, मग़रिब और जज़ीरतुल अरब में ज़मीन का धंसना और उसके आख़िर में यमन से आग निकलने का ज़िकर फ़र्माया जो लोगौं को महशर की तरफ़ हाँक लेजायेगी।''

इस हदीस में दस चीज़ौं का ज़िकर आया है उनमें महेदी अले० का कोई ज़िकर या इशारा तक नहीं है। अगर इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० का मसअला क़तई (निश्चित) और सहीह होता तो ज़रुर उन अश्राते कुब्रा में ईसा बिन मर्यम के साथ महेदी अले० का भी ज़िकर आता। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि महेदी अले० का ज़ुहूर अश्राते सुग़रा (छोटी निशानियौं) में है जो बड़ी निशानियौं से पहले ज़ाहिर होंगे इस लिये इज्तिमाए महेदी ओर ईसा अले० का मसअला ज़न्नी (काल्पनिक) है।

१५. इज्तिमाए महेदी और ईसा उलमा का प्रमाणित नहीं है।

उलमाए इस्लाम ने तहक़ीक़ करके फ़त्वा जारी किया है कि महेदी अले० इमामे अदिल औलादे फ़ातिमा रज़ी० से हैं। ख़ुदा तआला जिस वक़्त चाहेगा आप को दीन की नुसरत के लिये मब्ऊस करदेगा। इसमें नुज़ूले ईसा अले० के ज़माने की क़ैद नहीं लगाइ गई जैसा कि अल्लामा तफ़्ताज़ानी ने *शर्ह मक़ासिद* में लिखा है कि ''उलमा का मज़्हब यह है कि महेदी इमामे आदिल फ़ातिमा रज़ी० की औलाद से हैं आप को ख़ुदाए तआला जिस वक़्त चाहेगा पैदा करेगा और दीन की नुसरत के लिये मब्ऊस करदेगा।''

इस से ज़ाहिर है कि आम लोगौं के ख़याल की तरह इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० का मसअला क़तई और यक़ीनी होता तो उलमाए इसलाम यह फ़त्वा क्यों जारी करते कि ज़माने का तऐयुन (निश्चय) नहीं है। इसका नतीजा यह निकलता है कि इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० का विषय उलमा का प्रमाणित नहीं है। उनके बरख़िलाफ़ आम लोग इस विषय में सख़्त ग़लत फ़हमी में मुब्तला हैं और बिला वजह महेदी मौऊद का इन्तिज़ार किये जारहे हैं।

१६. इमामते महेदी और इक़्तिदाए ईसा बिल्कुल बे बुनियाद है।

जब महेदी अले० और ईसा अले० एक ही ज़माने में जमा होने की कोइ बुनियाद ही नहीं (निराधार) है तो यह कहना कि महेदी अले० इमामत करेंगे और ईसा अले० इक़्तिदा करेंगे या उसका उलटा होने का क्या ठिकाना है। उसके बारे में सिर्फ़ अल्लामा तफ़्ताज़ानी का क़ौल नक़ल करदेना काफ़ी हो सकता है। आप *शर्ह मक़ासिद* में लिखते हैं कि ''यह जो कहा जाता है कि ईसा अले० महेदी अले० की इक़्तिदा करेंगे या महेदी ईसा की उसकी कोइ सनद नहीं है उस पर तवज्जह नहीं करना चाहिये।''

१७. अगर मुस्लिम की हदीस को जिसमें ''फ़यक़ूलु अमीरहुम'' के अलफ़ाज़ हैं सही जानें तो क्या नक़्स लाज़िम अयेगा।

अगर सही मुस्लिम वाली तीसरी हदीस में जिसके प्राथमिक शब्द यह हैं

لاتزال طائفة من امتی یقاتلون علی الحق ظاهرین الیٰ قیامة فینزل عیسیٰ بن مریم فیقول امیر هم تعال صل لنا الخ

(यानि मेरी उम्मत की एक जमाअत क़ियामत तक हक़ पर लड़ती और ग़ालिब आती रहेगी पस ईसा बिन मर्यम नाज़िल होंगे उनको उस जमाअत का अमीर कहेगा कि आइये हमें नमाज़ पढ़ाइये)

आम लोगों के ख़याल के मुवाफ़िक़ अमीर से मुराद महेदी मौऊद ही लिये जायें तो ग़ौर तलब अम्र यह है कि उस हदीस में एक ऐसी जमाअत का ज़िकर है जो क़ियामत तक क़ाइम रहेगी लेकिन उसकी इब्तदा कब से होगी उसकी सराहत नहीं है। *''ला तज़ालु''* के लफ़्ज़ से जो *''युक़ातिलून''* का जुज़्वे फ़ेल (कार्य का भाग) है उस से सिर्फ़ एक जमाअत के हमेशा पाये जाने का सुबूत मिलता है। अगर मानलें कि यह जमाअत (समुदाय) रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा और ताबईन के ज़मानों में जो ख़ैरुल क़ुरून (सबसे अच्छा युग) हैं न पाई जाये तो कम से कम ऐसे ज़माने में पाइ जासकती है जब कि हक़् के लिये लड़ कर मुसलमानों को ग़लबा (प्रबलता) हासिल करने की ज़रुरत होगी। जब कभी भी उस जमाअत का ज़हूर मान लिया जाये तो जो अमीर ईसा अले० से मिलकर इमामत की दावत

देगा वह पहला अमीर (अध्यक्ष) नहीं होगा बल्कि उस जमाअत के अनेक अमीरौं के बाद का अमीर होगा। जब उसी अमीर को महेदी मौऊद मानकर इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० के क़ायल (सहमत) हों तो इसका मतलब यह होगा कि महेदी मौऊद ऐसे शख़्य को तसलीम (स्वीकार) किया जारहा है जो एक जमाअत के अनेक अमीरौं के बाद अमीर बन कर आया है और वह मुत्तबा (अनुकर्ता) है अपने साबिक़ (पूर्वकालीन) और अनेक अमीरौं का, अगर मुत्लक़ुल इनान (स्वाधीन) भी हो तो कम से कम जमाअत के साबिक़ अमीरौं के नाफ़िज़ कर्दा (लागू किये गये) क़वानीन (नियम) पर ज़रुर अमल करेगा जो यह भी एक इत्तिबाअ (अनुकरण) ही की सूरत है। चूंकि महेदी मौऊद ख़लीफ़तुल्लाह हैं और हदीस यानि रसूलुल्लाह सल्ला० फ़र्माते हैं कि ''महेदी मेरे क़दम ब क़दम चलेंगे ख़ता नहीं करेंगे'' के मज़्मून के मुवाफ़िक़ रसूलुल्लाह सल्ला० के ताबे हैं इस लिये यह कभी नहीं हो सकता कि वह रसूलुल्लाह सल्ला० के सिवा किसी और के ताबे हों। नतीजा यह कि मुस्लिम की उस हदीस में ''अमीर'' से मुराद महेदी मौऊद क़तअं (बिल्कुल) नहीं होसकते, इस लिये दो ख़लीफ़ौं के इज्तिमा का ख़याल सिरे से ग़लत और बेबुन्याद (निराधार) है।

१८. महेदी अले० के दुन्यावी बादशाह और दुन्या के सब लोगा एक दीन पर सहमत होने का ख़याल ग़लत हैः

दो ख़लीफ़ौं के इज्तिमा यानि महेदी और ईसा अले० के एक ही ज़माने में जमा होने का मसअला (विषय) ग़लत होने के बाद इस ख़याल को भी ग़लत साबित करना ज़रूरी है जो महेदी अले० के रुये ज़मीन के बादशाह होने और आप के ज़माने में तमाम दुनिया वालौं के एक दीन पर सहमत होजाने से मुतअल्लिक़ है। रसूलुल्लाह सल्ला० की जिस हदीस से महेदी अले० के रुये ज़मीन के बादशाह होने और दुन्यिा के तमाम लोगौं के एक दीन पर होजाने का ख़्याल आम होगया है यह हैः يملأ الارض قسطاً وعدلاً كما ملئت ظلماوجورا

अनुवाद : ''(महेदी) ज़मीन को अदल और इन्साफ़ से भर देंगे जैसी कि वह ज़ुल्म व जौर से भरी हुई होगी''।

यह हदीस एक जुज़्व (भाग) है मुख़तलिफ़ अहादीस का जो मुख़तलिफ़ ज़ावियों से आई है जैसा कि महेदी अले० और आपके नाम के सुबूत में बाज़ अहादीस अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ी० और अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० की रिवायात लिखी जा चूकी हैं।

उन अहादीस में *अल-अर्ज़* का लफ़्ज़ और *क़िस्तन् व अदलन्* के अलफ़ाज़ क़ाबिले बहस हैं, चूंकि उन अहादीस में *किस्तन् व अदलन्* के मुक़ाबिल *ज़ुलमन् व जोरन्* के अलफ़ाज़ आये हैं और ज़ुल्म व सितम (अत्यचार) को दूर करके अदल व इन्साफ़ (न्याय) करना बादशाहों का काम है, इस लिये आम तौर पर यही क़यास (अनुमान) कर लिया गया है कि हज़रत महेदी अले० दुनियावी बादशाहों की तरह बादशाह होंगे। उन अहादीस में इस पर ग़ौर नहीं किया गया कि क़िस्त व अदल के अलफ़ाज़ मौज़ूअ यानि हक़ीक़ी माना में इस्तेमाल किये गये हैं या बतौर इस्तिआरा (रूपक)। इल्मे बयान में यह मसअला बयान किया गया है कि अलफ़ाज़ अगरचे मानए मौज़ू में इस्तेमाल किये जाते हैं लेकिन कभी क़रीना (क्रम) पाया जाने से या महले वकूअ (स्थान) का लिहाज़ करके बतौरे इस्तिआरा भी इस्तेमाल किये जाते हैं मसलन यह कहा जाये कि शेर आरहा है तो उसके दो माने हैं - एक हक़ीक़ी माना जो जंगल के मश्हूर दरिन्दे का नाम है, दूसरे माने बतौर इस्तिआरा (रुपक) बहादूर आदमी के हैं। इसी तरह क़िस्त व अदल के हक़ीक़ी माने (अर्थ) अदल व इन्साफ़ के हैं लेकिन इस्तिआरा फ़र्ज़ किया जाये तो हिदायत और ईमान के माने होंगे, इसके मुक़ाबिल में जोर व ज़ुल्म के हक़ीक़ी माना ज़ुल्म व सितम के हैं लेकिन इस्तिआरा में बेदीनी और गुमराही मुराद होंगे। यह इस्तिआरा इस वजह से सही होसकता है कि महेदी के माने हिदायत याफ़ता (निर्देशित) शख़्स के हैं और ऐसा शख़्स ही हिदायत और ईमान फैलाकर बेदीनी और गुमराही को दूर कर सकता है।

जब उन अहादीस में क़िस्त व अदल के हक़ीक़ी माना को लेकर महेदी के दुनियावी बादशाह होने का तसव्वुर (विचार) पैदा कर लिया गया है तो उन अहादीस के अलावा जहाँ भी इस क़िसम के अलफ़ाज़ मौजूद हों वहाँ उनके हक़ीक़ी माना को लेकर उस शख़्स की बादशाहत के क़ायल होना पड़ेगा जिस शख़्स के

लिये यह अलफ़ाज़ बयान किये गये हैं। अगर ऐसा नहो तो तरजीह बिला मुरज्जह लाज़िम आयेगी जो उसूलन् दुरुस्त नहीं।

हज़रत ईसा अले० के लिये एक हदीस में ''हुक्मन् अदलब्'' और दूसरी हदीस में ''हुक्मन् आदिलन'' के अलफ़ाज़ आये हैं। चुनांचे वह हदीसें यह हैं

عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلعم والذی نفسی بیده لیرشکن ان ینزل فیکم ابن مریم حکماً عدلاً فیکسر الصلیب ویقتل الخنزیر ویضع الجزیةالخ

ایضاً عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلعم والله لینزلن ابن مریم فیکم حکماً عادلاً فینکسرن الصلیب ولیقتلن الخنزیر ولیضعن الجزیة.

अनुवाद : (१) अबू हुरेरा रज़ी० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है क़रीब है कि तुम में इब्ने मर्यम हकम और अदल बन् कर नाज़िल होंगे वह सलीब को तोड़ेंगे ख़िंज़ीर को क़त्ल करेंगे और जज़िया मौक़ूफ़ करेंगे।

(२) अबू हुरेरा रज़ी० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि ख़ुदा की क़सम इब्ने मर्यम तुम में हकम और आदिल बनकर नाज़िल होंगे पस सलीब को तोड़ेंगे ख़िंज़ीर को क़त्ल करेंगे और जज़िया (धम - कर) मौक़ूफ़ (रद्द) करेंगे।

जब अहादीसे महेदी अले० में *क़िस्तन् व अदलन्* के हक़ीक़ी माना अदल और इन्साफ़ का लिहाज़ रखते हुवे आप की बादशाहत का तसव्वुर पैदा कर लिया गया है तो फिर ईसा अले० की निसबत भी बादशाह होने का तसव्वुर क्यों नहीं पैदा हुवा जब कि आप के लिये *हकमन् अदलन्* और *हकमन् आदिलन्* के अलफ़ाज़ आये हैं। यह अलफ़ाज़ तो *क़िस्तन् व अदलन्* से ज़ियादा माअनवी शिद्दत (आर्थिक शिद्दत) रखते हैं यानि *क़िस्त* और *अदल* मुतरादिफ़ (समानार्थक) अलफ़ाज़ हैं जो सिर्फ़ इन्साफ़ के माने देते हैं उनके मुक़ाबिल *हकमन् आदिलन्* के अलफ़ाज़ हुकूमत और अदल के माने में बदर्जए ऊला बादशाहत का तसव्वुर पैदा कर सकते हैं।

हकमन् अदलन् और *हकमन् आदिलन्* के अलफ़ाज़ का हक़ीक़ी माना के लिहाज़ से यह मतलब होना चाहिये कि ईसा अले० बादशाह होकर नाज़िल हों या नाज़िल होने के बाद बादशाह बन जायें। ख़ास कर इस वजह से भी कि तौरेत में आपके बादशाह होने की *पेशीनगोई* मौजूद है जिसकी बिना पर बाज़ यहूदियौं ने आप से सवाल किया था कि तौरेत की पेशीनगोई के मुवाफ़िक़ आप बादशाह कहाँ हैं। हज़रत ईसा अले० ने फ़र्मया था कि मेरी बादशाहत रुहानी है, चूंकि हुदूस (नवीनता) भी एक चीज़ है इस लिये अगर ईसा अले० उस वक़्त दुनियावी बादशाह नहीं थे तो अब कोनसा अम्र मानेअ (निषेधक) है।

बहरहाल जब ''क़िस्तन् व अदलन्'' के अलफ़ाज़ से इमाम महेदी अले० को दुनियावी बादशाह मान लिया जाये तो ''हकमन् अदलन्'' और ''हकमन आदि लन्'' के अलफ़ाज़ से हज़रत ईसा अले० को भी दुनियावी बादशाह मान लेना ज़रुरी होगा, हालाँकि मुसलमानौं का अक़ीदा इसके बरख़िलाफ़ है। इसी तरह *हकमन् अदलन्* और *हकमन् आदिलन* के अलफ़ाज़ होते हुवे ईसा अले० की दुनियावी बादशाहत का एतिक़ाद नहीं रखा जा सकता तो फिर *क़िस्तन व अदलन्* के अलफ़ाज़ से इमाम महेदी अले० की दुनियावी बादशाहत का तसव्वुर भी ग़लत होना चाहिए। हाँ दोनों को रूहानी बादशाह माना जासकता है क्यूकि वह दोनों अपने अपने ज़मानौं में ख़लीफ़तुल्लाह की हैसियत रखते हैं।

तअज्जुब की बात है कि जनाब रिसालत माब सल्ला० की निसबत (इन्जील यूहन्ना बाब १४ आयत ३०) में *रईसु हाज़ल् आलम* (इस जगत का प्रधान) कहा गया है मगर मुसलमान आप सल्ला० को पूरी दुनिया का ज़ाहिरी बादशाह नहीं मानते, सिर्फ़ रुहानी हैसियत से सरदारे दो आलम ज़रूर मानते हैं। उस इन्जील के अनुवाद में यह शब्द हैं

अनुवाद : मैं तुम से बुहत कलाम नही करुंगा क्योंकि इस दुनिया का रईस आता है।

जिस तरह *यम्लउल अर्ज़* की हदीस में लफ़्ज़ 'अर्ज़' पर लाम आने से *'अल आलम'* के माना भी तमाम आलम (जगत) मुराद होना चाहिये मगर एतिफ़ाद उसके बरख़िलाफ़ है। उलमाए इसलाम ने इमाम महेदी को इमामे आदिल लिखा

है कहीं भी बादशाहे आदिल या सुल्ताने आदिल नहीं कहा। अल्लामा तफ़्ताज़ानी ने *शर्ह मक़ासिद* में लिखा है ''अलमा का मज़्हब यह है कि महेदी इमामे आदिल फ़ातिमा रज़ी० की औलाद से है''।

इमामे आदिल और बादशाह आदिल या सुल्तान आदिल में बुहत बड़ा फ़र्क़ है। इमामे आदिल से इमाम हादी (सदुपदेशक) और मलिक आदिल या सुल्तान आदिल से दुनियावी आदिल बादशाह के माने लिये जासकते हैं। इस मुहावरे से साबित है कि इमाम महेदी अले० दुनियावी बादशाह नही होंगे बल्कि वह एक इमामे आदिल होंगे और हिदायत (निर्देश) आपका फ़रीज़ा (कर्तव्य) होगा।

क़ुरआन शरीफ़ में लफ़्ज़ *क़िस्त* इन्साफ़ के माने में और लफ़्ज़ *अदल* भी इन्साफ़ के माने में कई जगह आया है मगर बादशाहत का मफ़हूम कहीं भी नहीं है मसलन् (آل عمران۔۲۱) . يقتلون الذين يامرون بالقسط من الناس فبشرهم بعذاب اليم

अनुवादः (कुफ़्फ़ार) उन लोगौं को क़त्ल करते हैं जो इन्साफ़ से हुक्म करते हैं, उन्हें दुःखदायी अज़ाब की ख़ुश ख़ब्री दो (आले इम्रान-२१)

इस आयत में उन कुफ़्फ़ार को अलमनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी देने का हुक्म दिया गया है जो इन्साफ़ से हुक्म करने वाले पैग़म्बरौं को नाहक़ और नारवा क़त्ल करते थे। क्या जिन पैग़म्बरौं को कुफ़्फ़ार क़त्ल करते थे वह बादशाह थे। लफ़्ज़ 'क़िस्त' से बादशाह होने का मफ़हूम कहाँ साबित हो रहा है और पैग़म्बर जिनको कुफ़्फ़ार क़त्ल करते थे बादशाह नहीं थे अगर बादशाह होते तो क्या वह ख़ुद इन्तेक़ामन् (बदले में) कुफ़्फार को क़त्ल न करदेते? इसी तरह एक और आयत यह है। (یونس۔۴۷) . ولكل امة رسول فاذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط

अनुवादः हर उम्मत का एक पैग़म्बर है जब उनका पैग़म्बर आया तो उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया।

इस आयत में 'क़िस्त' से बादशाहत का इन्साफ़ मुराद नहीं है और न ख़ुदा सब पैग़म्बरौं को दुनिया का बादशाह बनाकर उनके ज़रीये फ़ैसला सुनाता रहा है। (الاعراف۔۲۹) . قل امر ربی بالقسط

अनुवाद : कहदो ऐ मुहम्मद सल्ला० कि मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है।

इस आयत में शब्द *क़िस्त* से रसूलुल्लाह सल्ला० की बादशाहत का मतलब कहाँ निकलता है? और आप दुनियावी बादशाह कहाँ थे?

اذا حکمتم بین الناس ان تحکموا با لعدل. (النساء-۵۸)

अनुवाद : जब तुम लोगौं में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो।

इस आयत में जो इन्साफ़ से फ़ैसला करने का हुक्म दिया गया है तो फ़ैसला करने वाले हकम के बादशाह होने का मफ़हूम कहाँ है। यहाँ तो अवाम को हुक्म दिया गया है कि अगर तुम लोगौं के दरमियान फ़ैसला करो तो किसी की तरफ़दारी या जानिबदारी न करो।

आयाते कुरआनी में कहीं भी ''क़िस्त व अदल'' के अलफ़ाज़ से बादशाहत का मफ़हूम (अर्थ) नहीं निकलता तो फिर हदीस *''यम्लउल अर्ज़ क़िस्तन व अदलन्''* में बादशाहत का अर्थ कहाँ से निकाला जा सकता है। इस हदीस में ईमान और हिदायत का जो इस्तिआरा (रूपक) लिया गया है उसकी वजह यह है कि महेदी अले० हदीसे सूबान रज़ी० की बिना पर ख़लीफ़तुल्लाह हैं और आप का फ़र्ज़ दीन और ईमान फैलाना है और उम्मते मुहम्मदिया को हलाकत से बचाना है ना कि बादशाहत करना। हदीस یقوم بالدین فی آخر الزمان کما قمت به فی اول الزمان اواول الاسلام से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने जिस तरह अव्वल ज़माना या अव्वल इस्लाम में दीन को क़ायम किया था उसी तरह महेदी अले० भी आख़िर ज़माने में दीन को क़ायम करेंगे। वाक़ेआत शाहिद (साक्षी) हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने दीन को क़ायम (स्थापित) किया ना कि आप ने ज़ाहिरी बादशाहत क़ायम की या आप दुनियावी बादशाह हुवे थे फिर इमाम महेदी अले० किस तरह बादशाहत क़ायम करके तमाम दुनिया के बादशाह बन जायेंगे?

हदीस المهدی منّی یقفو اثری ولا یخطی ''महेदी मुझ से हैं वह मेरे निशाने क़दम पर चलेंगे और ख़ता नहीं करेंगे'' से ज़ाहिर है कि महेदी अले० दीन को क़ायम करने और हिदायत फैलाने में रसूलुल्लाह सल्ला० के क़दम बक़दम होंगे

और ख़ता नहीं करेंगे इस सूरत में ''ज़मीन को क़िस्त व अदल से भरदेंगे'' के माने यही होंगे कि आप ज़मीन यानि दुनिया में ईमान और हिदायत फैलायेंगे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ी० की रिवायत से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्ला० को बादशाहत दी जा रही थी मगर आप ने उसको लेने से इन्कार फ़र्माया। वह हदीस यह है।

अनुवाद : ''इब्ने उमर रज़ी० कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्ला० को यह फ़र्माते सुना कि आसमान से एक फरिश्ता मुझ पर नाज़िल हुआ जो किसी नबी पर नाज़िल नहीं हुआ और न किसी और पर मेरे बाद नाज़िल होगा वह इसराफ़ील है। उसने कहा मैं तुम्हारे रब का तुम्हारी तरफ़ पयामबर (संदेश वाहक) हूँ उसने मुझको हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें ख़बर दूँ कि तुम नबी और बन्दे बनकर रहना चाहते हो या नबी और बादशाह। रसूलुल्लाह सल्ला० ने कहा कि मैं ने जिब्रईल अले० को देखा उन्हों ने इशारा किया कि तवाज़ो (आदर) को काम में लाया जाये अगर मैं बादशाह बन्ना चाहता तो तमाम पहाड़ सोना बनकर मेरे साथ चलते''।

अब नज़िरीन ग़ौर करना चाहिये कि जिस शख़्स पर रसूलुल्लाह सल्ला० की बेख़ता पैरवी लाज़िम हो वह दुनियावी बादशाहत कैसे क़ुबूल कर सकते? मुख़तसर यह कि किसी हदीसे सहीह से आपके दुनियावी बादशाह होने का सुबूत नहीं मिलता।

इसके बाद वह ख़याल भी साफ़ करदेने के क़ाबिल है कि महेदी अले० के ज़माने में दुनिया के सब लोग एक ही दीन पर मुत्तफ़िक़ हो जायेंगे।

يملأ الارض قسطاوعدلاً की हदीस में लफ़्ज़ 'अर्ज़' पर अलिफ़लाम आया है इस से ख़याल करलिया गया है कि आप रुये ज़मीन में अदल और इन्साफ़ फैलायेंगे। इसमें शक नहीं कि अलिफ़ लाम लफ़्ज़ अर्ज़ पर आता है तो इस्तिग़राक़ के माना हो सकते है और अर्ज़ से मुराद तमाम रुये ज़मीन है क्योंकि ख़ुदाए तआला

आसमानों और पूरी ज़मीन का ख़ालिक़ है लेकिन यह भी याद रखना चाहिये कि हर जगह लफ़्ज़ 'अर्ज़' पर अलिफ़ लाम आता है तो वहाँ पूरी ज़मीन मुराद नहीं होती बल्कि कहीं ज़मीन का एक हिस्सा भी मुराद होता है। मसलन क़ुरआन शरीफ़ में आया है قال موسیٰ لقومه استعینوا بالله واصبروا ان الارض لله یورثها من یشاء من عباده

अनुवादः मूसा अले० ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तआला से मदद चाहो और सब्र करो ज़मीन अल्लाह की (मिल्क) है वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है उसका वारिस बनाता है। (७:१२८)

इस आयत में ''अल अर्ज़'' से मुराद फ़िरओन की ज़मीन या मिसर की ज़मीन है। दुनिया की पूरी ज़मीन मुराद नहीं है इस लिये अलिफ़ लाम इस्तिग़राक़ के लिये नहीं बल्कि जिन्स के लिये है। *तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सुयूती* में उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के हालात में लिखा है

بویع بالخلافة فی صفر سنه تسع و تسعین فمکث فیها سنتین و خمس شهر ملاء فیها الارض عدلاً

अनुवाद : उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से माहे सफ़र ९९ हिज्री में ख़िलाफ़त की बैअत की गई और वह दो साल पाँच माह क़ायम रहे ज़मीन उस अरसे में अदल से भर गई।

इस इबारत में ''अल अर्ज़'' का लफ़्ज़ आया है उस से मुराद सिर्फ़ उतनी ही ज़मीन है जहाँ आप बादशाह थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी० ने उमर रज़ी० से फ़र्माया था لقد ملئت الارض عدلا यानि तुमने ज़मीन को अदल से भरदिया, हज़रत उमर रज़ी० ने फ़र्माया कि तुम क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने मेरे अदल की गवाही देना। यहाँ *अर्ज़* से मुराद दुनिया की पूरी ज़मीन नहीं है बल्कि अरब की उतनी ही ज़मीन है जहाँ आप ख़लीफ़ा रहे और फ़ुतूहात हासिल फ़र्माये। इस मौक़े पर यह भी मलहूज़ रहे कि मज़कूरा इबारात में अदल का लफ़्ज़ हक़ीक़ी माना में आया है क्यों कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और हज़रत उमर रज़ी० दोनों ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन रहचुके हैं। یملاء الارض قسطاوعدلاً की हदीस में हक़ीक़ी माने मुराद नहीं होसकते बल्कि उसमें ईमान व हिदायत के माने 'इस्तिआरा' लिये

गये हैं क्योंकि महेदी अले० ख़लीफ़तुल्लाह हैं और आप का फ़र्ज़ (कर्तव्य) हिदायत करना है।

यह तो साबित है कि ''अल अर्ज़'' में अलिफ़ लाम इस्तिग़राक़ के लिये भी आसकता है और जिन्स के लिये भी इस लिये یملاء الارض قسطاً وعدلاً में जिन्स के माने लेना मुनासिब होगा क्योंकि जिन्सियत में ज़मीन का बाज़ हिस्सा मुराद होसकता है, वर्ना अगर इस्तिग़राक़ तसलीम करें तो उसके माने यह होंगे कि रुये ज़मीन का हर मुलक हर सूबा हर ज़िला हर तअल्लुक़ा हर क़रिया बल्कि पहाड़ जंगल का चप्पा चप्पा अदल व इन्साफ़ से भर जाये। एशिया, यूरुप, अफ़रीक़ा, आसट्रेलिया और अमेरीका शुमाली और जुनूबी सब इसमें शामिल होजायेंगे। एक शख़्स कहाँ कहाँ तब्लीग़ का काम कर सकता है और ज़राए सफ़र और अख़राजाते सफ़र क्या होंगे। आदम अले० से हज़रत ख़त्मुल मुर्सलीन सल्ला० तक किसी पैग़म्बर ने इतनी तब्लीग़ नहीं की तो इमाम महेदी अले० पर कैसे लाज़िम की जा सकती है?

१९. महेदी अले० के ज़माने में सब लोगौं का एक दीन पर मुत्तहिद होना ग़लत है

अगर यह कहा जाये कि इमाम महेदी अले० जहाँ भी मबऊस हों उनकी शोहरत तमाम दुनिया में फैलकर दुनिया के सब लोग हिदायत याफ़ता हो जायेंगे तो अहादीस में इसका ज़िकर नहीं है और सब का एक दीन होजाना नुसूसे क़ुरआनी के मुख़ालिफ़ है।

अल्लाह तआला फर्माताा है - ''अगर तुम्हारा पर्वरदिगार चाहता तो लोगौं को एक उम्मत बनादेता वह हमेशा मुख़तलिफ़ रहेंगे मगर वह जिनपर तुम्हारा पर्वरदिगार रहम करे और वह उनको इसी लिये पैदा किया है (यानि मुख़तलिफ़ रहने के लिये)। (हूद - ११८)

एक और आयत का अनुवाद यह हैं -

अनुवाद : ''अगर अल्लाह तआला चाहता तो उन सब को हिदायत पर जमा करदेता। (अल अनआम-३५)

इन आयात का मत्लब यह है कि ख़ुदा तआला नहीं चाहा कि सब लोग एक उम्मत होजायें इसलिये सब एक उम्मत नहीं हुवे चूंकि उनको हमेशा मुख़तलिफ़ रहने के लिये पैदा किया गया है इस लिये वह हमेशा मुख़तलिफ़ (विभिन्न) रहेंगे। आयत में ''ला यज़ालून'' का लफ़्ज़ हमेशगी (सदैव) पर दलालत करता है और यह हमेशगी (नित्यता) क़ियामत तक रहेगी। इसके अलावा आयाते ज़ेल से साबित होता है कि क़ियामत तक अन्सार और यहूद आपस में मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद नहीं रहेंगे।

१) हमने उनके दरमियान क़ियामत तक बुग़्ज़ व हसद पैदा करदिया है। (अल माइदा-१४)

२) हमने उनके दरमियान क़ियामत तक बुग़्ज़ (शत्रुता) और हसद (डाह) पैदा करदिया है। (अल माइदा-६४)

यह इस बात की दलील है कि सब लोग एक दीन पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) नहीं हो सकते। हदीस کیف تهلک امة انا فی اولها و عیسیٰ فی اٰخرها والمهدی من اهل بیتی فی وسطها से साबित है कि ईसा अले० आख़िरे उम्मत में दाफ़े हलाकते उम्मते मुहम्मदिया हैं यानि वह उनको हिदायत करके हलाकत या गुमराही से बचायेंगे तो महेदी अले० के ज़माने में जिनकी बेसत वस्ते उम्मत में है सब एक दीन कैसे होजायेंगे या क्या एक दफ़ा सब एक दीन होकर जो नुसूसे क़ुरआनी के ख़िलाफ़ है फिर गुमराह और बेदीन होजायेंगे ताकि ईसा अले० आकर आख़िरे उम्मत में गुमराही को दफ़ा (निवारण) करें। हक़ीक़त यह है कि इन गुमराहौं का सिलसिला लगातार क़ियामत तक जारी रहेगा जैसा कि अबू हुरेरा रज़ी० की रिवायत से ज़ाहिर है कि ''नबी सल्ला० फ़र्माते हैं कि मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा हक़ पर लड़कर क़ियामत तक ग़ालिब (विजयी) रहेगी।

हदीस یقوم بالدین فی اٰخر الزمان کما قمت به فی اول الزمان से साबित है कि महेदी अले० दीन को आख़िर ज़माने में उसी तरह क़ायम करेंगे जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ला० ने अव्वल ज़माने में क़ायम किया था। जब रसूलुल्लाह सल्ला० ने दीन को तमाम दुनिया में नहीं फैलाया और दुनिया के सब लोग एक दीन पर मुत्तफ़िक़ न हो सके तो फिर इमाम महेदी अले० तमाम दुनिया में दीन को कैसे फैला सकते हैं। इसके बरख़िलाफ़ अगर बिल फ़र्ज़ یملا الارض قسطا وعدلاً में अलिफ़ लाम को

इस्तिग़राक़ के लिये मान भी लिया जाये तो उसके यह माने हो सकते हैं कि जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ला० रहमतुल लिलआलमीन हैं उसी तरह महेदी अले० भी तमाम दुनिया के लिये रहमते अदल व हिदायत हैं।

२०. इमामुना अले० के ज़मानए बेसत और मक़ामे बेसत की बहेस

इस से पहले ज़ाहिर हो चुका है कि महेदी अले० और ईसा अले० का ज़माना एक नहीं बल्कि महेदी अले० पहले होंगे और ईसा अले० बाद में आयेंगे और महेदी अले० ना तो रूये ज़मीन के बादशाह होंगे और न आपके ज़माने में दुनिया के सब लोग एक ही दीन पर मुत्तफ़िक़ हो सकते है। अब यह मालूम होने की ज़रुरत है कि महेदी अले० ईसा अले० से पहले होंगे तो कब और किस ज़माने में होंगे और आपका मक़ामे बेसत कौनसा होगा। इस लिये हम आयाते क़ुरआनी और अहादीसे नबवी की रोशनी में यह साबित करेंगे कि हज़रत सैयद मुहम्मद जोनपूरी ही इमाम महेदी मौऊद अले० हैं। आप जिस ज़माने में और जिस मक़ाम पर मबऊस हुवे हैं वही ज़माना वही मक़ामे बेसत सहीह है। यह बात ज़ाहिर है कि इमामुना महेदी मौऊद अले० १४ जमादीउल ऊला ८४७ हिज्री (९ सेप्टेम्बर १४४३ ईसवी) में बमक़ाम शहेर जोनपूर (उत्तर प्रदेश) पैदा हुवे और १९ ज़ीक़ाअदा ९१० हिज्री (२३ एप्रेल १५०५ ईसवी) में आपका विसाल बमक़ाम फ़राह (अफ़ग़ानिस्तान) हुवा और आपका मज़ारे मुक़द्दस भी वहीं है।

२१. आयते क़ुरआन से महेदी मौऊद की बेसत का ज़माना और मक़ाम

क़रआन शरीफ़ में बारीए तआला का इरशाद होता है

يا ايها الذين امنو من يرتد منكم عن دينه فسوف ياتى الله بقوم يحبهم و يحبونه. (المائدة-٥٤)

अनुवादः ऐ ईमान वालो जो लोग तुम में से अपने दीन से फिर जायेंगे तो अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को लायेगा जिसको अल्लाह दोस्त रखेगा और अल्लाह को वह दोस्त रखेंगे।

इस आयत में ''तो अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को लायेगा'' का जुम्ला और उसके पहले और बाद की आयतें हमारे दाअवे को साबित करती हैं।

इस आयत में ''*याती*'' मुज़ारे का सीग़ा (वह क्रिया जिसमें वर्तमान और भविष्य दोनों ज़माने पाए जाये) है जिसके पहले ''*सौफ़*'' का लफ़्ज़ आया है जिस से मुज़ारे, मुस्तक़बिल बईद (दूर का भविष्यत्काल) के माने देता है और ''*बिक़ौमिन*'' में बाए ताअदिया है ''*बा*'' बमाने मुसाहिबत (साथ आना) है। अगर बाए ताअदिया तसव्वुर करें तो आयत के माने यह होंगे ''अल्लाह तआला एक क़ौम को मुस्तक़बिल बईद में लायेगा'' और अगर मुसाहिबत के माने लें तो तर्जुमा यह होगा ''अल्लाह तआल मुस्तक़बिल बईद में एक क़ौम के साथ आयेगा''। किसी क़ौम को लाना या किसी क़ौम के साथ आना दोनों का नतीजा क़रीब क़रीब है।

क़ुरआन शरीफ़ में बाए ताअदिया का इस्तेमाल लफ़्ज़ '*याती*' वग़ैरह के साथ अकसर जगह आया है लेकिन बाए मुसाहिबत का इस्तेमाल बुहत कम आया है। मिसाल के तौर पर एक आयत पेश की जाती है।

ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما اتيتموهن الا ان ياتين بفاحشة مبينة. (النساء-١٩)

अनुवाद : तुम ने औरतौं को जो कुछ दिया है उसको लेने के लिये उन्हें ना रोको मगर जब कि वह बदकारी के साथ आयें यानि बदकारी के मुर्तकिब हों तो रोकदो।

इस आयत में ''*बिफ़ाहिशतिन*'' के माने ''बदकारी के साथ'' हो रहे हैं। *मिस्बाहुल लुग़ात* में ''अज़्हनु बिसलाम'' लिखा है यानि सलामती के साथ जाओ। इस सूरत में ''अल्लाह तआला एक क़ौम को लायेगा'' की आयत में क़ौम से मुराद क़ौमे महेदी और लफ़्ज़ ''अल्लाह'' से महेदी अले० का ज़ुहूर मुराद होगा। ला ग़ैर।

इस आयत में लफ़्ज़ ''अल्लाह'' से इमाम महेदी अले० का ज़ुहूर मुराद लिया जाये तो यह बात उसी उसूल के तहत होगी जो उलमाए इस्लाम के मुसल्लमात (प्रमाणित विषय) से है जैसा कि तौरेत में एक बशारत के अलफ़ाज़ यह हैं।

अनुवाद : अल्लाह तआला सीना से तुलूअ हुवा सेईर से चमका और कोहे फ़ारान् से तजल्ली (दिव्य - ज्योती) किया। (ख़ुत्बाते अहमदिया)

तौरेत की इस आयत में अल्लाह तआला के ''सीना'' से तुलूअ होने से मुराद मूसा अले० का ज़ुहूर है और ''सेईर'' से अल्लाह तआला के चमकने से मुराद ईसा अले० का ज़ुहूर है और ''कोहे फ़ारान्'' से अल्लाह तआला के तजल्ली करने से मुराद हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० का ज़ुहूर है।

इसी तरह किताब हबक़ूक़ बाब(३) आयत(३) में बयान किया गया है

अनुवादः अल्लाह तआला जुनूब (तैमान) से और क़ुद्दूस कोहे फ़ारान से आयेगा। (ख़ुत्बाते अहमदिया)

तौरेत की यह पेशीनगोई ख़ास रसूलुल्लाह सल्ला० से मख़्सूस है। अल्लाह तआला ने अपने हबीबे ख़ास के जाह व जलाल (वैभव) को ज़ाहिर करने के लिये ख़ातिमुल अम्बिया के ज़ुहूर को अपना ज़ुहूर ताअबीर फ़र्माया है।

इसी तरह मलाका नबी की किताब के बाब(३) में लिखा है ''जिस ख़ुदावंद की तलाश में हो यानि रसूले अहद की वह अपनी हैकल (आकार) में आजायेगा''। जब इन बशारात में ''अल्लाह'' के ज़ुहूर से हज़रत मूसा अले० हज़रत ईसा अले० और हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० का ज़ुहूर मुराद है तो आयत ''फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन'' में ज़रुर लफ़्ज़ अल्लाह से ऐसे शख़्स का ज़ुहूर मुराद होना चाहिये जो इन पैग़म्बरौं के जैसा जाह व जलाल रखता हो क्योंकि जिस तरह किताब ''हबक़ूक़'' में ''याती अल्लाहु'' आया है और उस से रसूलुल्लाह सल्ला० मुराद हैं और मलाका नबी की किताब में ''ख़ुदावंद'' का लफ़्ज़ मौजूद है और उस से रसूले अहद सल्ला० मुराद हैं उसी तरह ''याती अल्लाहु बिक़ौमिन'' में ''याती अल्लाहु'' के अलफ़ाज़ से किसी साहबे जाह व जलाल ख़लीफ़तुल्लाह का ज़ुहूर मुराद हो सकता है।

२२. *याती अल्लाहु बिक़ैमिन* से मुराद तख़लीक़े क़ौम के सिवा कुछ और माने नहीं

तौरेत या क़ुरआन में ''तलअ, अश्रक़, तजल्ला और याती'' के अलफ़ाज़ से किसी क़ौम का आना या किसी क़ौम को लाना या किसी क़ौम के साथ अल्लाह का आना बयान किया गया है तो यह ऐसे अफ़आल (कार्य) हैं जो जिस्म और

जिस्मानियात को आरिज़ होते हैं। फ़ने मन्तिक़ (तर्क) में ''मशीय'' जिसके माने चलने के हैं ऐसी ''कुल्ली'' है जिसको ''अर्ज़े आम'' कहते हैं और यह चलने वाले हैवानौं या जानदारौं की सिफ़ते आम है। चूंकि बारीए तआला की ज़ात जिस्म व जिस्मानियात (शारीरिकता) के ख़सायस (विशेषताओं) से मुबर्रह व मुनज़्ज़ह (आज़ाद और पाक) है इस लिये जानदार मख़लूक़ की तरह ना वह किसी को लाता है और ना किसी के साथ आता है इस लिये लाने और आने का मत्लब क़ौम की तख़लीक़ (पैदा करने) के सिवा कुछ नहीं हो सकता।

क़ुरआन शरीफ़ में तख़्लीक़ (रचना) का मफ़हूम (भावार्थ) ज़ाहिर करने के लिये *ख़लक़, जअल* और *फ़तर* के अलफ़ाज़ आम तौर पर इस्तेमाल हुवे हैं जैसे अल्लाह तआला फ़र्माता है

الحمد لله الّذی خلق السموات والارض جعل الظلمات والنور (الانعام۔۱)

अनुवादः हर तरह की तारीफ़ उस ख़ुदा के लिये है जिस ने आसमानौं और ज़मीन को पैदा किया अंधेरे और रौशनी को बनाया।

یا ایھاالناس اعبد وا ربّکم الذی خلقکم و الّذین من قبلکم .(البقرۃ۔۲۱)

अनुवादः ऐ लोगो तुम अपने उस पर्वरदिगार की इबादत करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगौं को पैदा किया है।

یاقوم اذکروا نعمة اللہ علیکم اذ جعل فیکم انبیاء و جعلکم ملوکاً (المائدہ۔۲۰)

अनुवादः ऐ क़ौम तुम पर ख़ुदा ने जो एहसान किया है याद करो क्योंकि उस ने तुम में अम्बिया को पैदा किया और तुमको बादशाह बनाया है।

مالی لا اعبد الذی فطرنی (یٰسٓ۔۲۲)

अनुवादः मुझे क्या होगया है कि मैं उस ख़ुदा की इबादत न करूँ जिसने मुझे पैदा किया है।

الذی فطرنی فانّہ سیھدین. (الزخرف۔۲۷)

अनुवादः उसी ने मुझे पैदा किया और वही अनक़रीब सीधा रास्ता दिखायेगा।

जब आम तौर पर ''तख़्लीक़'' का मफ़हूम ज़ाहिर करने के लिये *ख़लक़,*

जअल और *फ़तर* के अलफ़ाज़ आते हैं तो यहाँ भी *याती अल्लाहु* के बजाए *यख़लुक़ुल्लाहु* वग़ैरह आसकता था।

जैसा कि एक जगह है *यख़लुक़ुल्लाहु मा यशाउ* (यानि अल्लाह तआला जो चाहता है पैदा करता है) इर्शाद फ़र्माया है। जब अल्लाह तआला ने *फ़सौफ़ यख़लुक़ुल्लाहु क़ौमन्* की जगह *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* इर्शाद फ़र्माया है तो उस से क़ौम की तख़लीक़ और उसका जाह व जलाल बताने के सिवा कोइ और मफ़हूम नहीं हो सकता।

अगर यह कहा जाये कि तौरेत या क़ुरआन में *आती-याती* वग़ैरह अलफ़ाज़ से पैग़म्बरौं का ज़ुहूर मुराद है तो आयत *याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में इमाम महेदी अले० का ज़ुहूर कैसे हो सकता है जो पैग़म्बर नहीं है। इसका जवाब यह है कि इमाम महेदी अले० की ज़ाते अक़दस अपने मनाक़िब व फ़ज़ायल (प्रतिष्ठा) की वजह से जो रसूलुल्लाह सल्ला० ने बयान फर्माये हैं मुल्हिक़ बिल अम्बिया है और ऐसी आला शान रखती है कि अल्लाह तआला आपके ज़ुहूर को अपने आने से इस्तिआरा (रुपक) करे।

२३. फ़ज़ायल व मनाक़िब या सिफ़ाते महेदी अले० की बहेस

हज़रत महेदी अले० के चंद फ़ज़ायल (प्रतिष्ठा) और मनाक़िब (वंदना) या सिफ़ात (विशेष गुण) हस्बे ज़ेल हैं

१. हज़रत महेदी अले० रसूलुल्लाह सल्ला० की तरह ख़लीफ़तुल्लाह हैं जैसा कि हज़रत सोबान रज़ी० की हदीस से ज़ाहिर है।

''सोबान रज़ी० कहते हैं कि फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्ला० ने कि तुम्हारे कंज़ यानि ख़िलाफ़त के लिये तीन आदमी झग़ड़ा करेंगे वह सब ख़लीफ़ा के बेटे होंगे उनमें से किसी को ख़िलाफ़त नहीं मिलेगी फिर वह सियाह झंडे पूरब की तरफ़ से निकलेंगे तो तुमको यानि मुसलमानौं को ऐसा क़तल करेंगे कि कोई क़ौम इस तरह क़तल न की गई होगी फिर अल्लाह के ख़लीफ़ा महेदी आयेंगे जब तुम उनको सुनो तो उनके पास आओ उन से बैअत करो अगरचे बर्फ़ पर से रेंगते हुवे जाना पड़े।'' (इब्ने माजा, हाकिम, अबू नुएम)

इसी तरह इब्ने उमर रज़ी० से भी एक रिवायत आई है जिसको इब्ने अबी शैबा ने बयान किया है। ''फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्ला० ने कि महेदी अले० इस हालत में निकलेंगे कि एक फ़रिश्ता ऊपर से निदा करेगा (पुकारेगा) कि यह महेदी ख़लीफ़तुल्लाह हैं तुम उनकी इत्तेबाअ करो''।

२. हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० ख़ातिमुल अम्बिया हैं तो महेदी अले० ख़ातिमुल औलिया (ख़ातिमे विलायते मुहम्मदिया) हैं जैसा कि हज़रत अली अल मुर्तुज़ा रज़ी० ने जनाब रिसालत मआब सल्ला० से दर्याफ़्त किया कि ''महेदी हम में से हैं या हमारे ग़ैर से'' तो हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया ''बल्कि महेदी हम में से हैं अल्लाह तआला उन पर दीन को ख़तम करेगा जिस तरह हम से उसको शुरू किया है।'' अबुल क़ासिम तब्रानी, अबू नुएम असफ़हानी, अब्दुर रहमान बिन हातिम, अबू अब्दुल्लाह नुएम इब्ने हम्माद वग़ैरहुम ने इस हदीस की तख़रीज की है।

३. महेदी अले० रसूलुल्लाह सल्ला० की तरह दाफ़े (निवारक) हलाकते उम्मते मुहम्मदिया हैं जैसा कि अबू नुएम ने अख़बारे महेदी अले० में इब्ने अब्बास रज़ी० से रिवायत की है - ''वह उम्मत हरगिज़ हलाक नहीं हो सकती जिसके पहले मैं हूँ और ईसा बिन मर्यम उसके आख़िर में हैं और महेदी उसके वस्त (मध्य) में हैं''।

इज्तेमाए महेदी और ईसा अले० के बयान में इसी मज़मून की कई हदीसें मुख़तलिफ़ ज़ावियों से बयान करदी गई हैं।

४. महेदी अले० अम्बिया अले० की तरह हिदायत और तब्लीग़ में माअसूम अनिल ख़ता (अचूक) हैं जैसा कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है ''महेदी मुझ से हैं वह मेरे निशाने क़दम पर चलेंगे ख़ता नहीं करेंगे''।

फ़ुतूहात में हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहे० आयत ادعو الی اللہ علی بصیرۃ انا ومن اتبعنی की तफ़सीर में लिखते हैं कि ''महेदी उन लोगौं में हैं जो रसूलुल्लाह सल्ला० की इत्तेबाअ करेंगे'' उसके बाद वह बयान करते हैं ''रसुलुल्लाह सल्ला० दाअवते बसीरत में ग़ैर मुख़्ती (अचूक) हैं उसी तरह आपके ताबे (महेदी) भी ग़ैर मुख़्ती

होंगे क्योंकि वह रसूलुल्लाह सल्ला० के निशाने क़दम की पैरवी करेंगे।''

उसी *फ़ुतूहात* के बाब(६६६) में लिखते हैं

''रसूलुल्लाह सल्ला० से अइम्मए दीन में से किसी इमाम के लिये कोइ नस् जारी नहीं हुवी कि रसूलुल्लाह सल्ला० के बाद आपका वारिस और आपके निशाने क़द्म की पैरवी करने वाला होगा मगर वह ख़ास तौर पर महेदी होंगे रसूलुल्लाह सल्ला० ने महेदी को अपने अहकाम में माअसूम होने की गवाही दी है जैसा कि दलीले अक़ली रसूलुल्लाह सल्ला० के माअसूम होने की गवाह है''।

यह भी लिखा है कि ''रसूलुल्लाह सल्ला० ने महेदी की निसबत माअसूम अनिल ख़ता होने की ख़बर दी और आपको मुल्हिक़ बिल अम्बिया ठहराया है''।

इसका ख़ुलासा यह है कि महेदी अले० ही एक ऐसे इमाम हैं जो रसूलुल्लाह सल्ला० के वारिस, माअसूम अनिल ख़ता (अचुक) और मुल्हिक़ बिल अम्बिया हैं। इन ख़ुसूसियात में कोइ और इमाम शरीके महेदी नहीं है।

५. महेदी अले० रसूलुल्लाह सल्ला० की तरह दीन को क़ायम करने वाले हैं जैसा कि हाफ़िज़ अबू नुएम असफ़हानी की रिवायत में है जिसको उन्होंने अली बिन हज़ीली से रिवायत किया है उसके इब्तेदाइ अलफ़ाज़ यह हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़ातिमा रज़ी० से फ़र्माया ''क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने मुझे हक़ के साथ मब्ऊस किया इन दोनों यानि हसन और हुसेन रज़ी० से इस उम्मत के महेदी होंगे''। आख़िरी अलफ़ाज़ यह है ''रसूलुल्लाह सल्ला० फ़र्माते हैं कि महेदी आख़िर ज़माने में उसी तरह दीन को क़ायम करेंगे जिस तरह मैंने उसको अव्वल ज़माना या अव्वल इसलाम में क़ायम किया है''।

६. रसूलुल्लाह सल्ला० बाइसे तख़्लिक़े आलम (जगत् की रचना का कारण) थे जैसा कि हदीसे क़ुदसी है ''ऐ नबी मैं तुमको ना पैदा करता तो अफ़लाक को ना पैदा करता''। ज़ाहिर है कि अफ़लाक् न होते तो दुनिया न होती गोया दुनिया महज़ रसूलुल्लाह सल्ला० की वजह से पैदा हुवी है और रिसालत मआब सल्ला० हज़रत महेदी अले० की ज़ाते अक़दस की निसबत इर्शाद फ़र्माते हैं

अनुवादः ज़र बिन अब्दुल्लाह नबी सल्ला० से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़र्माया अगर दुनिया का एक ही दिन बाक़ी रह जाये तो उस दिन को अल्लाह तआला इतना दराज़ (लंबा) करेगा कि एक शख़्स मेरे अहले बैत से मबऊस होगा जिसका नाम मेरे नाम के उसके बाप का नाम मेरे बाप के नाम के मुवाफ़िक़ होगा।

दार कुत्नी, तब्रानी, अबू नईम हाकिम वग़ैरह ने इब्ने मसूद रज़ी० से रिवायत की है

अनुवाद : फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्ला० ने कि दुनिया उस वक़्त तक ख़त्म न होगी जब तक एक शख़्स मेरे अहले बैत से मब्ऊस न हो उसका नाम मेरा नाम उसके बाप का नाम मेरे बाप के नाम के जैसा होगा।

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि रसूलुल्लाह सल्ला० बाइसे तख़्लिक़े आलम (जगत की रचना का कारण) हैं और आलम बग़ैर बेसते महेदी के ख़त्म न होगा और महेदी अले० इमनामे (समनाम) रसूलुल्लाह सल्ला० हैं।

७. सूफ़ियाए किराम ने महेदी अले० की ज़ाते अक़दस को जिस क़दर अर्फ़अ व आला (उच्चतर) साबित किया है ज़ेल के हवालेजात से ज़ाहिर हो सकता है।

★ *गुलशने राज़* में साबित किया गया है कि विलायत का कामिल ज़ुहूर ख़ातिमुल औलिया यानि महेदी अले० से होगा और आप ही से दौरे आलम तमामियत को पहुंचेगा। तमाम औलिया ख़ातिमुल औलिया की निसबत से आज़ा (अंग) के जैसे हैं क्योंकि वह कुल है और यह सब औलिया उसके अजज़ा के मानिंद हैं।

मफ़ातीहउल एजाज़ शर्ह गुलशने राज़ में लिखा है

''जिस तरह तमाम अम्बिया अले० नबूवते तश्रीई का नूर मिश्काते ख़ातिमुल अम्बिया से इक़तिबास (उद्धरण) करते हैं उसी तरह तमाम औलिया नूरे विलायत और कमाले विलायत ख़ातिमुल औलिया (यानि महेदी मौऊद) की विलायत के आफ़ताब से हासिल करते हैं या फ़ैज़याब (लाभांवित) हैं।

★ इल्मे सुकूती हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया यानि रसूलुल्लाह सल्ला० और

ख़ातिमुल औलिया यानि इमाम महेदी अले० की ख़ुसूसियात से है। *फ़ुसूसुल हिकम* में लिखा है

अनुवाद : हम में बाज़ वह हैं जो अपने इल्म में जाहिल हैं और कहते हैं कि इदराक (बोध) से इज्ज़ (नम्रता) का इज़हार भी इदराक है और हम में बाज़ वह हैं जो जानकर भी ऐसा नहीं कहते और बएतेबार क़ौल आला है बल्कि ख़ुदा उसको इल्मे सुकूती अता किया है जैसा कि पहले को इज्ज़ अता किया है और यही बड़ा आलिम बिल्लाह है और यह इल्मे सुकूती सिवाय ख़ातिमुर रुसुल और ख़ातिमुल औलिया के किसी को हासिल नहीं है और अम्बिया और रुसुल ख़ातिमुर रुसुल की मिश्कात के सिवाय अल्लाह को नहीं देखते उसी तरह औलिया में कोइ भी वली ख़ातिम की मिश्कात के बग़ैर अल्लाह को नहीं देखता यहाँ तक कि अम्बिया और औलिया भी जब कभी ख़ुदा को देखेंगे ख़ातिमुल औलिया की मिश्कात से देखेंगे''।

इस इबारत से रसूलुल्लाह सल्ला० की तरह महेदी अले० को भी ''इल्मे सुकूती'' हासिला होना ज़ाहिर है और इल्मे सुकूती रखने वाला सब से बड़ा आलिम बिल्लाह होता है। औलिया हत्ता कि अम्बिया और रुसुल भी ख़ुदा को देखेंगे तो ख़ातिमुल औलिया की मिश्कात से देखेंगे जो ख़ातिमुल अम्बिया का बातिन है।

★ *फ़ुसूसुल हिकम* में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्ला० उस वक़्त नबी थे जब कि आदम अले० अभी पैदा नहीं हुवे थे जैसा कि हदीस ''मैं उस वक़्त नबी था जब कि आदम अले० अभी आब व गिल (कीचड़ पानी) में थे'' से ज़ाहिर है। इस मज़मून के सिलसिले में महेदी अले० की निस्बत यह सराहत भी आइ है ''इसी तरह ख़ातिमुल औलिया उस वक़्त वली थे जब कि आदम अले० अभी आब व गिल में थे''।

जब हज़रत महेदी अले० की ज़ाते अक़दस ऐसे मनाक़िब और फ़ज़ायल की हामिल है जिनका ज़िकर किया गया है इस लिये अल्लाह तआला ने आपके जाह व जलाल को ज़ाहिर करने के लिये अपने ज़ुहूर और तजल्ली से इस्तिआरा

(रूपक) फ़र्माया है। इस लिये आयत ''अनक़रीब अल्लाह तआला एक क़ौम को लायेग'' में ''अल्लाह लायेगा'' से हज़रत इमामुना अले० का ज़ुहूर मुराद है जिसकी तस्दीक़ उसी आयत के पहले और बाद के अलफ़ाज़ से भी होसकती है।

मख़फ़ी (गुप्त) न रहे कि आयत فسوف یاتی اللہ بقوم یحبھم و یحبونہ बशारत मानवी हैसियत से ठीक ऐसी है जैसी तौरेत की बशारत रसूलुल्लाह सल्ला० से मुतअल्लिक़ आइ है। तौरेत की बशारत में

ومن جبل فاران تجلی بیمینہ شریعۃ بیضاء وبجند الملائکۃ اتیٰ (यानि अल्लाह तआला कोहे फ़ारान से तजल्ली किया दहने हाथ में रोशन शरीअत है और मलाइका के लश्कर के साथ आया) के अलफ़ाज़ आये हैं। ***'तजल्ला'*** और ***'अता'*** माज़ी (भूतकाल) के सेग़े हैं जिसके माने 'तजल्ली किया' और 'आया' के हैं। *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* में '*याती*' मुज़ारे (वर्तमान और भविष्य काल) का सेग़ा है जो हर्फ़ ''*सौफ़*'' की वजह से मुस्तक़बिले बईद के माने देरहा है। अगर क़ुरआन शरीफ़ की आयत में ''*याती*'' की जगह ''*अता*'' का लफ़्ज़ आता है जैसा कि तौरेत में मूसा अले० का ज़ुहूर साबित करने के लिये ''*तलअ*'' से मूसा अले० का ज़ुहूर साबित हुआ है। इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ में भी लफ़्ज़ ''*अता*'' से रसूलुल्लाह सल्ला० का ज़ुहूर साबित होता मगर अल्लाह तआला ने फ़र्क़ ज़ाहिर करने के लिये तौरेत में ''*तजल्ला*'' और '*अता*' माज़ी के सेग़ों से रसूलुल्लाह सल्ला० का ज़ुहूर साबित किया है तो क़ुरआन शरीफ़ में ''*सौफ़ याती*'' के अलफ़ाज़ से जो आइन्दा (आगामी) ज़माने पर दलालत करते हैं महेदी का ज़ुहूर साबित किया है। अलावा इसके तौरेत में ''मलाइका का लश्कर'' का जुम्ला आया है जिस से सहाबए रसूलुल्लाह सल्ला० मुराद हैं तो क़ुरआन शरीफ़ मे ''क़ौम'' का लफ़्ज़ आया है और क़ौम की सिफ़ात में ''*युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहु*'' के अलफ़ाज़ आये हैं जिसके माने यह हैं कि अल्लाह उनसे मुहब्बत रखेगा वह अल्लाह से मुहब्बत रखेंगे और लफ़्ज़ *क़ौम* से असहाबे महेदी अले० मुराद हैं।

इस से पहले कि आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु* के पहले और बाद के अलफ़ाज़ से ज़ुहूरे महेदी अले० की सदाक़त ज़ाहिर की जाये इस मसअले पर भी ग़ौर करलेना ज़रूरी है कि मुफ़स्सिरीन ने इस आयत में *क़ौम* से क्या मुराद ली है और उनकी मुराद किस हद तक दुरुस्त (उचित) है।

यह आयत सूरह माइदा में आइ है इस आयत से यहूद और नसारा से तरके मवालात (दोस्ती छोड़ देने) की तरग़ीब (प्रेरणा) और मुसलमानों को फ़त्हे मक्का की ख़ुश ख़बरी देने के बाद इस आयत में मुरतदीन के हालात और आइन्दा ज़माने के मुतअल्लिक़ पेशीनगोइ की गइ है।

२४. आयत *याती अल्लाहु निक़ौमिन्* में क़ौम के माने में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़।

बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि क़ौम से मुराद क़ौमे अन्सार है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि इस आयत में क़ौम से मुराद सलमान फ़ारसी और उनके साथी हैं। बाज़ का क़ौल है कि क़ौम से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० और आपके साथी हैं जिन्हों ने मुरतदीन से जंग करके उन्हें फिर इसलाम में दाख़िल किया।

अल्लामा ज़मख़शरी ने *कश्शाफ़* में बयान किया है कि अवाइले इसलाम में मुर्तदीन के ग्यारह गुरोह थे। तीन तो रसूलुल्लाह सल्ला० के दौरे हयात के आख़िर में मुर्तद हो गये थे। सात गुरोह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० की ख़िलाफ़त के ज़माने में मुर्तद हुवे हैं और एक गुरोह हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ी० के अहदे ख़िलाफ़त में मुर्तद (धर्म भ्रष्ट) हो गया। उन ग्यारह गुरोह के नाम यह है।

१) असवद उन्सा एक साहिर (जादूगर) था जिसने अत्राफ़े यमन पर क़ब्ज़ा करके आँहज़रत सल्ला० के कारिन्दों को निकाल दिया था। रसूलुल्लाह सल्ला० ने मआज़ बिन जबल को उसकी सरकूबी के लिये रवाना फ़र्माया। फ़ेरोज़ दैलुमी ने असवद उन्सा को क़त्ल करदिया।

२) मुल्के यमामा में मुसैलमा कज़्ज़ाब ने नबूवत का दाअवा किया था। बनू हनीफ़ा को इसलाम से पलटा कर अपना साथी बना लिया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० के ज़मानए ख़िलाफ़त में मारा गया।

३) तलीहा बिन ख़ुवेलद ने नबूवत का दाअवा किया। बनू असद को गुमराह करके मुसलमानों से जंग की अंजामे - कार (अंततः) उसको शिकिस्त होगई आख़िर में वह ताइब होकर सच्चा मुसलमान बना रहा। यह तीन गुरोह वह हैं जो

रिसालत मआब सल्ला० के ज़माने में मुर्तद होगये थे। रहे वह सात जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० के ज़माने में मुर्तद होगये थे उनके नाम यह हैं

(१) फ़ज़ारा (२) ग़तफ़ान (३) बनू सलीम (४) बनू यरबोअ (५) वनी बक्र बिन वायल (६) बनू किन्दा (७) बनू तमीम।

हज़रत उमरे फ़ारूक़ रज़ी० के ज़माने में जो गुरोह मुर्तद होगया था वह जब्ला बिन ऐहम ग़स्सानी का गुरोह था। अल्लामा ज़मख़शरी ने साबित किया है कि ''*फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन*'' में कौम से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० और आपके साथी हैं जिन्होंने उन मज़्कूरा मुर्तदीन से जंग करके उन्हें पस्त किया था। चूंकि अल्लामा ज़मख़शरी अहले ज़बान से है और बड़े आलिम हैं इस लिये अकसर मुफ़स्सिरीन ने उनका ततब्बो (अनुसरण) किया और अपनी तफ़ासीर में वही लिख दिया है जो ज़मख़शरी ने अपनी तफ़सीर में लिखा है लेकिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० और आपके साथियौं का मुर्तदीन को पस्त करना इर्तदाद से हटाकर राहे रास्त पर लाना सियाक़े आयत के बिल्कुल मुग़ायर और मुख़ालिफ़ है क्योंकि इस आयत में *याती* मुज़ारे का सेग़ा है जिसके पहले *फ़सौफ़* दाख़िल होकर उसको मुस्तक़बिले बईद के माने में कर दिया है इस लिये आयत का तर्जुमा इस तरह होगा (जब लोग तुम में से मुर्तद होजायेंगे तो अल्लाह तआला मुस्तक़बिले बईद में एक क़ौम को लायेगा या एक क़ौम के साथ आयेगा)।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० और आप की जमाअत नुज़ूले आयत के वक़्त मौजूद थी तो मौजूदा जमाअत को मुस्तक़बिले बईद में आने वाली जमाअत कैसे कहा जायेगा। इस वजह से हसन बसरी रज़ी० ने फ़र्माया है कि ''अल्लाह के इल्म में यह बात थी कि एक क़ौम नबी सल्ला० की मौत के बाद इसलाम से पलट जायेगी। पस अल्लाह ने ख़बर दी कि अनक़रीब वह ऐसी क़ौम को लायेगा जिसको वह दोस्त रखेगा और वह क़ौम अल्लाह को दोस्त रखेगी''।

मआलिमुत् तन्ज़ील में भी इस क़िसम की सराहत इस आयत के तहत आइ है। *तफ़सीर नेशापूर* के मुफ़स्सिर ने तो लिख दिया है कि ''शायद आयत में क़ौम से मुराद क़ौमे महेदी हो''।

२५. आयत *याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में *क़ौम* से मुराद क़ौमे महेदी है

इमामुना अले० ने अल्लाह के हुक्म से ख़बर दी है कि इस आयते शरीफ़ा में क़ौम से मुराद क़ौमे महेदी है। चूंकि आप की ज़ात ख़लीफ़तुल्लाह माअसूम अनिल ख़ता है इस लिये क़ौम से मुराद क़तए नज़र मुफ़स्सिरीन की तावीलात के क़ौमे महेदी या असहाब होना क़तई और यक़ीनी है।

इस से पहले साबित होचुका है कि *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* में *याती अल्लाहु* से मुराद महेदी अले० का ज़ुहूर है और अब यह भी साबित होगया है कि *क़ौम* से मुराद क़ौमे महेदी है जिसकी सिहत आइंदा दलायल से भी वाज़ेह होगी।

इस से पहले बयान किया गया है कि आयत के पहले और बाद के अलफ़ाज़ ज़ुहूरे महेदी की तस्दीक़ करते हैं इस लिये बाद के अलफ़ाज़ से बहेस करने के बाद पहले के अलफ़ाज़ से भी बहस की जायेगी।

आयत فسوف یاتی اللہ بقوم के बाद के अलफ़ाज़ यह हैं

یحبھم و یحبونہ اذلۃ علیٰ المومنین اعزۃ علی الکافرین یجاھدون فی سبیل اللہ ولا یخافون لومۃ لایم ذالک فضل اللہ یوتیہ من یشاء واللہ واسع علیم (المائدۃ۔۵۴)

अनुवाद : (वह क़ौम ऐसी है कि) अल्लाह तआला उसको दोस्त रखेगा और वह अल्लाह को दोस्त रखेगी मोमिनीन के हक़ में नर्म और काफ़िरों के हक़ में सख़्त होगी फ़ी सबीलिल्लाह जहाद करेगी और मलामत करने वालों की मलामत से नहीं डरेगी अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिस को चाहता है देता है और अल्लाह तआला वसीअ फ़ज़्ल वाला और अलीम (सर्वज्ञ) है।

जब *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* में *याती अल्लाहु* से महेदी का ज़ुहूर मुराद और *क़ौम* से मुराद क़ौमे महेदी हो तो उस सूरत में आयत के माने यह होंगे कि उस क़ौम से हज़रत महेदी मौऊद अले० मुहब्बत रखेंगे और वह क़ौम हज़रत महेदी मौऊद अले० से मुहब्बत रखेगी। यह माने इस तरह सादिक़ हैं कि तरफ़ैन (दोनों पक्ष) की मुहब्बत का वाक़ेआ अज़्हर मिनश् शम्स है।

तवारीख़े महेदविया और ना तरफ़दार मुअर्रिख़ीन (इतिहासकारों) की तहरीरात (लेख) से ज़ाहिर है कि इमामुना अले० ने अपने जन्मस्थान शहेर जोनपूर से हिजरत करके जहाँ जहाँ अपनी महेदियत की तब्लीग़ के लिये तश्रीफ़ लेगये लोग जोक़ दर जोक़ (समूह) आपके बयाने क़ुरआन से गिरवीदा (मोहित), तारिकुद् दुनिया (संसार विमुख) और मुतवक्किल होकर साथ होते गये। आपकी वफ़ात तक बेशुमार लोग अक़ीदत मन्दौं में दाख़िल हो गये।

अब्दुल क़ादिर बदायूनी ने *मुन्तख़बुत तवारीख़* में *ला तुअद वला तुहसा* (जिसकी गिन्ती नहीं हो सकती) लिखा है यानि अक़ीदत मन्दौं की तेदाद बेशुमार और बेगिन्ती थी। *सवानेह महेदी मौऊद अले०* मुअल्लिफ़ा हज़रत मौलाना सैयद वली साहब रहे० में सिर्फ़ उलमा की फ़ेहरिस्त दो सौ तक लिखी गयी है जो सबके सब अपने ज़माने के ज़बरदस्त और जैयद (उत्तम) उलमा थे और मुबाहिस या तहक़ीक़ के बाद तस्दीक़े महेदी अले० से मुशर्रफ़नि (सम्मानित) हुवे। यह तेदाद भी उस हद तक है जिस क़दर इल्म होसका वरना उस से कहीं ज़्यादा तेदाद थी जैसा कि अबुल कलाम आज़ाद ने *तज़्किरा* में नौ सौ उलमा की तेदाद बताइ है यह सब सहाबा थे जो परवानावार इमाम अले० पर जान व दिल से फ़िदा थे और इमाम अले० का बरताव भी उनके साथ मुहिब्बाना था।

सहाबए महेदी अले० की सिफ़ात में मोमिनीन के साथ नर्म और कुफ़्फ़ार के साथ सख़्त रहने, जहाद करने और मलामत करने वालौं की मलामत (निंदा) से ना डरने के औसाफ़ भी बयान हुवे हैं। चुनांचे *फ़सौफ़ याती अल्लाह बिक़ौमिन* की आयत में *क़ौम* की सिफ़ात हस्बे ज़ेल बयान की गइ हैं:

१) उस क़ौम को अल्लाह दोस्त रखेगा और क़ौम अल्लाह को दोस्त रखेगी।

२) वह क़ौम मोमिनीन के हक़ में नर्म दिल काफ़िरौं के हक़ में सख़्त होगी

३) वह क़ौम जहाद फ़ी सबीलिल्लाह करेगी और मलामत करने वालौं की मलामत से नहीं डरेगी।

४) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह (यह सिफ़ात) जिसको चाहता है देता है और अल्लाह वसीअ फ़ज़्ल वाला और अलीम (सर्वज्ञ) है।

आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में *क़ौम* की जो सिफ़ात बयान की गई हैं वह सब तक़रीबन् उन सिफ़ात के मुमासिल (समान) हैं जो क़ुरआन शरीफ़ में असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० के लिये वारिद हैं।

अगर जुम्ला *याती अल्लाहु बिक़ौमिन* में हर्फ़ 'बा' ताअदिया के लिये हो तो *युहिब्बुहुम व युहिब्बुनहु* का मत्लब यह होगा कि अल्लाह तआला उस क़ौम से मुहब्बत रखेगा और क़ौम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखेगी।

एक हदीसे रसूलुल्लाह सल्ला० से जिसको इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहे० ने *तफ़सीरे कबीर* में बयान किया है साबित होता है कि इस हदीस से साफ़ तौर पर आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन युहिब्बुहुम व युहिब्बूनह* की तफ़सीर हो रही है।

अनुवाद : फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्ला० ने कि मैं ऐसी क़ौम को जानता हूँ जो वह मेरी मन्ज़िल में है। अस्हाब ने अर्ज़ किया यह कैसे हो सकता है आप ख़ातिमुन् नबीइईन हो और आपके बाद कोइ नबी नहीं। आप सल्ला० ने फ़र्माया वह लोग अम्बिया तो नहीं लेकिन अल्लाह तआला से क़ुर्ब (निकटता) और मक़ाम की वजह से अम्बिया उन से रश्क (इर्ष्या) करेंगे और वह सब अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं।

इस हदीस में लफ़्ज़ ''क़ौम'' और ''वह सब अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं'' के अलफ़ाज़ आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन् युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहु* की तफ़सीर कर रहे हैं फिर उसमें क़ुर्ब और मुक़ामे क़ुर्ब की सराहत और ज़्यादा है।

जब क़ौमे महेदी की पहेली सिफ़त यह बताई गई है कि अल्लाह तआला क़ौमे महेदी को दोस्त रखेगा और क़ौमे महेदी अल्लाह तआला से मुहब्बत रखेगी तो उसके मुक़ाबिल में असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० की निसबत जो क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ातबे अव्वल होने के लिहाज़ से *रज़ीअल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु* (अत्तौबा-१००) के अलफ़ाज़ आये है (यानि अल्लाह तआला अस्हाबे रसूल

सल्ला० से राज़ी और अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्ला० अल्लाह तआला से राज़ी हैं)। रज़ा और रज़ामंदी (सहमति) मुहब्बत ही के नताइज से है इसी से साबित है कि क़ौम या अस्हाबे महेदी अले० और अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्ला० दोनों इस पहली सिफ़त में मुमासिल (समान) और मुसाहिम (भागीदार) हैं।

इसके बाद आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में तीन सिफ़ात एक के बाद एक बयान की गइ हैं उनकी नज़ीर (उदाहरण) में वह आयत पेश होसकती है जो सूरह अलफ़त्ह की २९ वीं आयत है जिसके अलफ़ाज़ तीन हिस्सौं में तक़सीम करके नीचे बताये गये हैं

१) मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग आपके साथ हैं कुफ़्फ़ार पर सख़्त और आपस में रहमदिल (कृपालु) हैं।

२) तुम उनको रुकू करने वाले सज्दा करने वाले देखोगे।

३) वह अल्लाह का फ़ज़्ल और रज़ामन्दी चाहते हैं कसरते सुजूद की वजह से उनके चहरौं पर नूरानी निशान हैं।

असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० की इन सिफ़ात में पहली और तीसरी सिफ़त को आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* में बयान की गई दूसरी और चौथी सिफ़ते क़ौम से मुक़ाबला करके देखा जाये तो मालूम होगा कि जिस तरह असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० कुफ़्फ़ार पर सख़्त और आपस में रहमदिल हैं उसी तरह क़ौमे महेदी या असहाबे महेदी भी मोमिनीन पर नर्म और कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं जैसा कि اذلة على المومنين اعزة على الكافرين से ज़हिर है। फिर जिस तरह तीसरी सिफ़त में असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० अल्लाह तआला से फ़ज़्ल और ख़ुशनोदी तलब करते हैं उसी तरह क़ौमे *महेदी* या असहाबे महेदी अले० पर भी अल्लाह तआला का फ़ज़्ल होना बयान किया गया है और यह बात وذالک فضل الله یوتیه من یشاء से ज़ाहिर है गोया इन दोनों सिफ़ात में भी असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० और क़ौमे महेदी या असहाबे महेदी अले० के मुमासिल और मुसाहिम हैं।

अब रही दूसरी सिफ़त जिस में असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० की निसबत تراهم رکعاً سجدا यानि वह इबादत गुज़ार हैं बयान किया गया है तो क़ौमे महेदी

अले० की निसबत يجاهدون فى سبيل الله ولا يخافون لومة لائم के अलफ़ाज़ आये हैं यानि यह क़ौम मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह होगी और मलामत करने वालों की मलामत से नहीं डरेगी। यह दोनों सिफ़ात जो मुमासिल और मुसाहिम नहीं बल्कि मुख़्तलिफ़ मालूम होती हैं तो उसकी एक ख़ास वजह है जिसकी तश्रीह हस्बे ज़ेल है।

हाफ़िज़ अबू नईम असफ़ाहानी ने अली बिन हज़ीली से उन्हों ने अपने पिता से जो रिवायत की है जिसके इब्तदाई अलफ़ाज़ यह हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ी० से मुख़ातिब होकर फ़र्माया कि ''क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने मुझे हक़ के साथ मबऊस किया है इन दोनों (हसन और हुसेन रज़ी०) से इस उम्मत के महेदी पैदा होंगे''। उमी हदीस के अख़िरी हिस्से में यह अलफ़ाज़ आये हैं ''महेदी दीन को आख़िर ज़माने में उसी तरह क़ायम करेंगे जिस तरह मैं ने उसको अव्वल ज़माने में क़ायम किया है''।

हदीस के इस फ़िक़रे (वाक्य) से ज़ाहिर है कि महेदी अले० आख़िर ज़माने में दीन को उसी तरह क़ायम करेंगे जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ला० ने अव्वल ज़माने में क़ायम किया था।

रसूलुल्लाह सल्ला० की तब्लीग़ की जुम्ला मुद्दत २३ साल थी मक्का में १३ साल और बाक़ी १० साल मदीना में गुज़रे। इब्तदाइ १३ साल के बाद आप मक्का से मदीना को हिजरत फ़र्मा हुवे। ग़ज़वात या जिहाद का सिलसिला मदीना में शुरू हुवा यहाँ तक कि मक्का फ़त्ह होगया। असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ला० के साथ हिजरत और ग़ज़वात के सवाब से मुस्तफ़ीद हुवे। अगरचे इमामुना अले० की तब्लीग़ की मुद्दत भी २३ साल रही लेकिन यह तमाम उमर तहम्मुल (सहनशीलत), शदायद और मसायब (कठिनाई) के साथ हिजरत ही में गुज़ारी ग़ज़वात की नौबत नहीं आई क्योंकि हदीसे रसूलुल्लाह सल्ला० में सराहत आचुकी है कि महेदी अले० रसूलुल्लाह सल्ला० के अव्वल ज़माने की तरह जो हिजरत से पहले तहम्मुल, शदायद और मसायब का ज़माना है, दीन को क़ायम करेंगे उसी वजह से ग़ज़वात या जिहाद की मुत्लक़ ज़रूरत पेश नहीं आई।

असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० को ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ला० के साथ

हिजरत और ग़ज़वात का सवाब हासिल होचुका और फ़त्ह मक्का के बाद अम्न व अमान क़ायम होगया। असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० को अहकामे दीन की ताअमील (प्रतिपालन) में किसी क़िसम की रुकावटों का ख़दशा बाक़ी न रहा था कि फिर हिजरत करनी पड़े और अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्ला० बेफ़िक्री से अपने माअबूदे हक़ीक़ी की इबादत कर सकते थे इस लिये असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० की सिफ़त में ''तुम उनको रुकू और सुजूद या इबादत करने वाले और कसरते सुजूद से उनके चहरों पर नूरानी निशान देखोगे'' के अलफ़ाज़ आये हैं।

इसके मुक़ाबिल में असहाबे इमामुना अले० की निसबत ''*वह लोग जहाद फ़ी सबीलिल्लाह करेंगे*'' और ''*यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह जिसको चाहता है देता है*'' के अलफ़ाज़ आये हैं। यह इशारा उसी फ़ज़ीलते जहाद की तरफ़ है। उसका नतीजा यह है कि जो फ़ज़ीलत ग़ज़वात और जहाद असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० को हासिल हुवी है वही फ़ज़ीलत क़ौमे महेदी अले० को भी हासिल होगी। गोया क़ौमे महेदी भी उस फ़ज़ीलत में असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० के मुमासिल और मुसाहिम होगी।

अगरचे ''*तुम उनको रुकू और सुजूद करने वाले देखोगे*'' से इबादत का मफ़हूम और ''वह क़ौम जहाद फ़ी सबीलिल्लाह करेगी'' से जहाद का मफ़हूम साबित है और यह दोनों लफ़्ज़ अलग अलग मालूम होते हैं लेकिन हबादत और जहाद में मानन् कोइ फ़र्क़ नहीं है क्योंकि जहाद की दो क़िस्में हैं एक जहादे अकबर दूसरा जहादे अखग़र। अगरचे जहादे असग़र ख़ुद इबादत है लेकिन जहादे अकबर जिसको नफ़्स और शैतान के साथ जहाद कहते हैं यह तो सरासर इबादत ही इबादत है। *तफ़सीरे कबीर* में आयत ''*फ़ज़्ज़लल्लाहुल मुजाहिदीन अलल् क़ाइदीन अजरन् अज़ीमा* (अन निसा-९५) की तफ़सीर में लिखा है।

''इस जहाद (अकबर) का मा हसल (परिणाम) क़ल्ब को ग़ैरुल्लाह से हटा कर अल्लाह ही की ताअत में मुस्तग़रिक़ (तन्मय) रखना है जब कि यह मक़ाम पहले मक़ाम (जहादे असग़र) से आला है इस लिये पहले मक़ाम की फ़ज़ीलत एक दर्जा और दूसरे मक़ाम की फ़ज़ीलत कई दर्जे है''।

२६. हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत आयत *युज़ाहिदून* की मिसदाक़ है

चूंकि इमामुना अले० के असहाब और मुत्तबईन इस जहाद से मत्तसिफ़ (गुणवाण) रहे हैं और जहाद इबादत के मफ़हूम से ख़ारिज नहीं इस लिये ''रुकू और सुजूद करने वाले'' और ''अल्लाह की राह में जहाद करने वाले'' की दोनों सिफ़तौं में मानन् मुमासिलत (समानता) ज़रुरी है।

क़ौमे महेदी अले० को आपके विसाल से बीस साल बाद एक ऐसे ग़ज़वे से साबिक़ा पड़ा जिसमें हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत का वाक़ेआ ज़ुहूर में आया और इमामुना अले० की पेशीनगोइ पूरी हुवी जैसा कि आपने

فالذین هاجروا و اخرجوامن دیارهم و اوذوافی سبیلی و قاتلوا و قتلوا (سورہ آل عمران آیت ۱۹۵)

(यानि वह लोग हिजरत किये वतन से निकाले गये मेरे रास्ते में सताये गये और लड़े और शहीद होगये) बयान करके फ़र्माया था कि इस आयत की चारों बातें मेरे गुरोह की सिफ़ात हैं जिनमें से इब्तदाइ तीन बातें ज़ुहूर में आचुकी है ''लड़े और शहीद हुवे'' का ज़ुहूर आइन्दा होगा। चुनांचे हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० ने *अक़ीदा शरीफ़ा* में लिखा है ''अपने मान्ने वालौं के हक़ में यह आयत हज़रत अले० ने सुनाइ फ़र्माने ख़ुदा है ''पस जिन लोगौं ने हिजरत की और अपने वतनौं से निकाले गये और मेरे रास्ते में सताये गये और क़त्ल किये और क़त्ल हुवे'' और यह सिफ़तें जो इस आयत में बयान की गइ हैं महेदवियौं के हक़ में क़रार दीं और फ़र्माया कि यह अलामतें उनमें मौजूद हो चुकीं मगर एक सिफ़ते कारज़ार रह गइ है उसको हज़रत अले० ने मशीयते इलाही पर रखा कि जब हक़ तआला चाहेगा उसका ज़ुहूर होगा''। यह इशारा था हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत की तरफ़।

दौरे नबूवत में असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० को ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ला० के साथ ग़ज़वात या जहाद का सवाब हासिल हुवा और ग़ज़वात के सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्ला० शहीद नहीं हुवे लेकिन आपकी शहादत के बदल हज़रत हुसेन रज़ी० साबित हुवे जैसा कि शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस ने *सिर्रुश शहादतैन* में वज़ाहत की है और आपके साथ शहीद होने वालौं में आपके साथी और रिश्तेदार थे।

यहाँ दौरे विलायत में गो इमामुना अले० और आपके असहाब को ग़ज़वात या जहाद का मौक़ा नहीं मिला लेकिन शाह ख़ुंदमीर रज़ी० के साथ क़ौमे महेदी अले० को ग़ज़वात या जहाद का सवाब हासिल हुवा इसके साथ ही सय्यदुना शाह ख़ुंदमीर रज़ी० जहाद और हुसूले शहादत में इमामुना अले० के बदल साबित होगये जैसा कि इमामुना अले० ने ख़ुद हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० को बुलाकर फ़र्माया था कि ''क़त्ल किये और क़त्ल हुवे'' के हामिल तुम ही हो ख़ुदा तआला फ़र्माता है कि ''ख़ातिमे विलायते मुहम्मदिया पर कोइ चीज़ क़ादिर नहीं हो सकती इस लिये तेरा बदल सय्यद ख़ुंदमीर है और यह सिफ़त उसी पर तमाम होगी''। यह शहादत जो बदल की हैसियत से हुइ है यह मख़सूस है उसमें किसी और की शिर्कत नहीं है क्योंकि फ़र्माने ख़ुदावंद और फ़र्मूदए इमामुना अले० की बिना पर सिर्फ़ हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० बदले महेदी अले० होकर शहीद हुवे और आपके साथी और रिश्तेदार जिनकी तेदाद सौ (१००) है वह भी शहीद हैं मगर उनकी शहादत आम है।

इस तहक़ीक़ की बिना पर हम कह सकते हैं कि आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* से न सिर्फ़ इमामुना महेदी अले० का सुबूत मिलता है बल्कि क़ौमे महेदी और हज़रत सय्यदुना सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत का सुबूत भी मिलता है जो बदले महेदी अले० की हैसियत से शहीदे ख़ास बिला शिर्कते ग़ैर हैं।

अगर यहाँ एतराज़ हो कि हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० को मुज़फ़्फ़र वालीए गुजरात और उसकी मुस्लिम फ़ौज़ से साबिक़ा पड़ा था तो उसको जहाद कैसे कहा जायेगा। इस मौक़े पर मोतरिज़ को याद रखना चाहिये कि जंग का असल मक़सद फ़साद को रोकना और हक़ व बातिल में फ़ैसला करना है। हज़रत हुसेन रज़ी० रसूलुल्लाह सल्ला० के बदल थे तो आपको कौन से कुफ़्फ़ार से साबिक़ा पड़ा था, मुक़ाबिल के लोग सब मुसलमान थे और आप मुसलमानों ही से जंग करके शहीद हुवे। इसी तरह हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० जो बदले महेदी अले० थे वह भी उन मुसलमानों से लड़ कर शहीद हुवे जो ज़ुल्म व फ़साद के बानी और दीने महेदी अले० की इशाअत के मुख़ालिफ़ थे।

२७. हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० का रंगरेज़ बच्चों के वली होने का सुबूत क़ुरआन से

हम ने जो बयान किया है कि क़ौमे महेदी के साथ हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत का सुबूत भी मिलता है उसकी तौसीक़ (पुष्टि) एक और आयत से भी होती है जो आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* के सिलसिले में मुफ़स्सल (सविस्तार) आइ है वह यह है

انما وليكم الله و رسوله والذين امنوا الذين يقيمون الصلوة و يوتون الزكوة و هم راكعون. (المائدة-٥٥)

अनुवाद : बेशक तुम्हारे यानि मुसलमानों के वली या दोस्त अल्लाह और उसके रसूल और वह मुसलमान हैं जो नमाज़ पढ़ा करते, ज़कात देते और वह ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ (विनय) के साथ रहते हैं।

इस आयत का मतलब यह है कि अल्लाह और उसके रसूल आम तौर पर मुसलमानों के वली हैं अलावा इसके मुसलमानों के वली ख़ुद मुसलमान हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं, ज़कात देते और ख़ुज़ूअ और ख़ुशूअ से रहते हैं। अगरचे यह हुक्म आम है लेकिन आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* के सिलसिले में जिस तरह क़ौम की सिफ़ात के बयान के साथ *युजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाहि* की सिफ़त आम बयान की गइ और जिस से हमने हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादते मख़सूसा का सुबूत पेश किया है उसी तरह सिफ़ाते क़ौम के सिलसिले में *इन्नमा वलीयुकुम* - का हुक्मे आम भी हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० के रंगरेज़ बच्चौं की विलायत के मख़सूस वाकेआ की तरफ़ लतीफ़ इशारा ज़ाहिर कर रहा है क्योंकि असल वाक़ेआ यह है कि इमामुना अले० की वफ़ात के बाद हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० बीस साल ज़िन्दा रहे उस अरसे में मुआनिदीने महेदवियह (शत्रुओं) ने बीस जगह से आपका इख़राज (निष्कासन) करा दिया। एक दफ़ा झंझवाड़ी से निकाल दिया गया तो आपने दकन चले जाने का इरादा फ़र्माया। मलिक प्यारे जो एक अमीर थे आपके पास आये तस्दीक़े महेदी करके आपको अपनी जागीर खांबेल में रखा और आप यहँ पाँच साल तक रहे। मज़्हबे महेदवियह के विरोधी हर जगह महेदवियौं को तकलीफ़ पहुंचाते थे। सुलतान महेमूद बगड़ा की वफ़ात के बाद उनका बेटा मुज़फ़्फ़र शाह गुजरात के तख़्त पर बेठा तो उलमा की मार में आगया। मुल्ला सय्यद कबीर, मुल्ला हमीद और मुल्ला अलाउद्दीन नें फ़त्वे जारी कर दिये कि जो शख़्स एक महेदवी को क़त्ल करेगा गोया

उसने दंतीवाड़ा के सौ रहज़नों को क़त्ल करके सवाब हासिल किया अलावा इसके सात हज का अज्र भी पालिया। अब क्या था मुआनिदीने महेदविया लोहे की एक दाग़नी से महेदवियों की पेशानियौं को दाग़ने लगे। एक दिन महेदवियों के क़त्ल की मुनादी हो रही थी कि रंगरेजौं के दो नौजवान लड़कौं ने ज़ाहिर किया कि हम भी महेदवी हैं। शाही लोग उनके हाथ पीछे बांधकर लेगये और मुल्लाओं की राय लेकर दोनों मज़्लूमौं को क़त्ल कर दिया गया, इस पर हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० ने उलमा से फ़त्वा हासिल कर लिया कि जो शख़्स मुसलमान गुरोह का बिला शरई सबब् (कारण) के ख़ून करे मुफ़्ती ख़ुद लायक़े क़त्ल है। उसके बाद उलमाए सू के उभारने से हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० पर बादशाहे गुजरात मुज़फ़्फ़र शाह की तरफ़ से फ़ौज कशी (आक्रमण) हुवी, आप पहले रोज़ फ़त्हयाब (विजयी) हुवे और दूसरे दिन शाही फ़ौज ने आगे और पीछे से हम्ला किया इसमें इमाम अले० की बशारत के मुवाफ़िक़ आप शहीद होगये।

नतीजा यह कि आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* में जो सिफ़ाते क़ौम ''अल्लाह के रास्ते में जहाद करेंगे'' वंग़ैरा के अलफ़ाज़ से बयान की गइ हैं और उस से शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत का सुबूत मिलता है उसी के सिलसिले में *इन्नमा वलीय्युकुमुल्लाहु व रसूलुहु वल्लज़ीन आमनू* की आयत आइ है जो हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की निस्बत रंगरेज़ बच्चौं की विलायत का लतीफ़ इशारा साबित होता है और यही हमारा मतलब है।

हासिल यह कि आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में जो सिफ़त बयान की गइ हैं वह सब तक़रीबन् असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० की सिफ़ात से मुमासिल और मुसाहिम साबित होचुकी हैं इस लिये इस आयत में ''क़ौम'' से मुराद क़ौमे महेदी अले० होना क़तई और यक़ीनी है वर्ना दुनिया में वह कौनसी क़ौम हो सकती है जिसकी सिफ़ात असहाबे हसूलुल्लाह सल्ला० के मुमासिल (समान) होसकें।

२८. आयत में मुर्तदीन से मुराद हसन सबाह का फ़िर्क़ा है।

आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाह बिक़ौमिन* के बाद के अलफ़ाज़ की तहक़ीक़ भी बुहत ज़्यादा ग़ौर व ताम्मुल के क़ाबिल है। आयत के पहले के अलफ़ाज़ यह हैं।

يا ايها الذين امنوا من يرتد منكم عن دينه فسوف ياتي الله بقوم الخ

अनुवाद : ऐ ईमान वालो जब लोग तुम में से अपने दीन से पलट जायेंगे तो अल्लाह एक क़ौम को लायेगा या एक क़ौम के साथ आयेगा।

इस आयत में बहस तलब अम्र सिर्फ़ एक ही है यानि आइन्दा ज़माने मुस्तक़बिल बईद में मुर्तद होने वाले लोग कौन हैं? पहले साबित होचुका है कि आयत ''अल्लाह तआला एक क़ौम को लायेगा'' में क़ौम से मुराद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ी० और आपके साथी वग़ैरा नहीं हैं जिन्हों ने इब्तदाए इसलाम में मुर्तदीन से जंग करके उन्हें फिर मुसलमान बनाया। इसी से यह भी साबित होता है कि मुर्तदीन से मुराद इब्तदाए इसलाम के मुर्तद नहीं हैं। तारीख़ पढ़ने से ज़ाहिर है कि इसलाम में मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ मुर्तद फ़िरक़े पैदा हुवे मसलन् बाबकी, मुहमिरा, क़रामिता, बर्क़ई वग़ैरह लेकिन तारीख़ी वाक़ेआत और उसके क़राईन (क्रम) साफ़ तौर पर ज़ाहिर करते हैं कि इस आयत का ऐसी मुर्तद जमाअत से तअल्लुक़ है जैसी हसन सबाह की जमाअत है और जिस पर इर्तदाद की तारीफ़ पूरी तरह सादिक़ आती है।

सब से पहले नाज़िरीन की दिलचस्पी के लिये हसन सबाह के मुख़्तसर हालात बयान किये जाते हैं (माख़ूज़ अज़ किताब निज़ामुल मुल्क मुअल्लफ़ा अब्दुर रज़्ज़ाक़ कानपूरी मुअल्लफ़ अलब्रामिका वग़ैरह)।

२९. मुख़्तसर हालात हसन सबाह और जन्नते अरज़ी

हसन सबाह हुमेरी की नसल से है इसी वजह से उसको हसन सबाह कहते हैं। उसका जन्म मक़ाम 'क़ुम' में हुआ और यह शख़्स खाजा हसन निज़ामुल मुल्क और उमर ख़य्याम का मआसिर (समकालीन) है। यह तीनों मद्रसए बुग़दादिया निज़ामिया में एक ही ज़माने के तालिबे इल्म थे। ख़ाजा निज़ामुल मुल्क तो तालीम से फ़ारिग़ होकर अलप अर्सलान का और बाद में मलिक शाह सलजोक़ी का प्रधान मंत्री बनगया। उमर ख़य्याम को एक जागीर देकर मआश से मुतमईन कर दिया लेकिन हसन सबाह अपनी ग़ैर मामूली दानिश मन्दी (चतुरता) और ख़ुदादाद

ज़हानत से अपने ही बल पर खड़ा रहा। हसन सबाह यह चाहता था कि ख़ाजा निज़ामुल मुल्क की जगह ख़ुद प्रधान मंत्री बन जाये इस लिये उसने ख़ाजा की एक हिसाबी ग़लती बताइ और सलतनत के जमा और ख़र्च बनाने के सिलसिले में मलिक शाह सलजोक़ी को ख़ाजा से बर्हम (नाराज़) करादिया लेकिन ख़ुद हसन सबाह को ख़जालत (शर्मिन्दगी) उठानी पड़ी और वह असफ़हान चला गया। फिर मिसर पहुंच कर मज़्हबे इस्माईलिया का मुबल्लिग़ बनगया। ख़लीफ़ा मुस्तन्सर बिल्लाह फ़ातिमी ने उसकी बड़ी ख़ातिर मदारात (आवभगत) की। उस ख़लीफ़ा ने बाज़ वुजूह (कारण) से अपने बेटे नज़ार को वली अहदी से ख़ारिज करके दूसरे बेटे अहमद अलमुस्ताली बिल्लाह को वलीअहद (युवराज) बना दिया। हसन नज़ार का तरफ़दार था जब अमीरुल जुयूश (सेनापति) को मालूम हुवा कि हसन नज़ार की ख़ुफ़िया दावत कर रहा है तो उसने मुस्तन्सर के हुकम से हसन को क़िला दम्यात में क़ैद कर दिया। इत्तेफ़ाक़ से क़िले का बुर्ज गिर पड़ा लोगौं ने उसको हसन की करामत समझा और चंद ईसाइयौं के साथ एक जहाज़ में बिठाकर रवाना कर दिया। समन्दर में तूफ़ान आने से तमाम जहाज़ के मुसाफ़िर बदहवास (व्याकुल) होगये लेकिन हसन निहायत इत्मेनान से बैठा रहा। एक मुसाफ़िर ने पूछा आप किस लिये इत्मेनान से बैठे हो, हसन ने जवाब दिया मुझे इमामे बर्हक़ ने इत्तेला दी है कि जहाज़ नहीं डूबेगा। थोड़ी देर बाद तूफ़ान जाता रहा लोग हसन के क़दम चूमे उसको एक वली तस्लीम किया गया। जब जहाज़ शाम पहुचं गया तो हसन जहाज़ से उत्रा और ख़ुश्की के रास्ते से दयारे बकर, जज़ीरा रोम, हलब, बग़दाद, ख़ोरिस्तान होता हुवा असफ़हान आगया इन तमाम शहरौं में वह मज़्हबे इस्माईलिया की दावत करता रहा। जब हसन के मुरीदौं की तेदाद ज़्यादा होगइ तो क़िलअतुल मौत के क़रीब जाकर टहरा। यह लफ़्ज़ असल में आलए आमूत है जिसके माने दैलुमी ज़बान में आशियानए उक़्क़ाब के हैं। महेदी अलवी ने उस क़िले को हसन के हाथ बेच दिया था वह यहाँ बैठकर आराम के साथ अपने मज़्हब की इशाअत करता रहा और अपना शाहाना जाह व जलाल क़ायम किया। अगरचे मलिक शाह सलजोक़ी ने हसन पर चढ़ाइ की और क़रीब था कि हसन को शिकिस्त होजाये मगर उसने एक फ़िदाइ के ज़रीए ख़ाजा निज़ामुल मुल्क को क़त्ल करा दिया इतने में मलिक शाह का भी इन्तेक़ाल होगया, इस तरह

क़िलअतुल मौत की तसख़ीर (अधिग्रहण) मुल्तवी रहगइ और हसन का इक़तेदार बढ़ गया।

फ़िरक़ए इस्माईलिया मज़्हबे शेआ की एक शाख़ थी जो हज़रत इसमाईल बिन हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ से मन्सूब है। फ़िरक़ए इस्माईलिया हज़रत इस्माईल को इमामे बरहक़ तस्लीम करता है लेकिन इमामिया इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम जाफ़र सादिक़ को इमाम मानते हैं। यहीं से इन दो फ़िरकौं की तफ़रीक़ (फूट) हो जाती है।

मारको पोलू की रिवायत से साबित होता है कि क़िलअतुल मौत दो पहाड़ों के दरमियान वाक़े था इसलिये वह मक़ाम बलदुल जबल और वहाँ का हाकिम शेख़ुल जबल कहलाता था जिसका नाम अलाउद्दौला था। उसी का क़ौल था कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० ने एक बेहिश्त (स्वर्ग) देने का वादा किया था जो मुझे मिल गइ है। उसने दो घाटियौं के बीच में एक ख़ूबसूरत बाग़ बनवाया था जिसमें मुख़्तलिफ़ क़िसम के मेवेदार दरख़्त और फूलौं के दरख़्त मौजूद थे। उस बाग़ में हर वक़्त ख़ूबसूरत औरतें मौजूद रहती थी जो हर क़िसम के बाजे बजाकर नाचती गाती थीं। उस बाग़ में वह लोग आते थे जो हशीश (भंग) पीने पर राज़ी होते थे। बाग़ में जाने का सिर्फ़ एक ही रास्ता था। जिन लोगौं को बेहिश्त देखने का शौक़ होता उन्हें भंग पिलाकर मदहोश करने के बाद बाग़ में पहुंचा दिया जाता था जब उन्हें बाग़ और नाज़नीन औरतौं को देखकर बेहिश्त का यक़ीन हो जाता तो दुबारा उन्हें मदहोश करके बाहर निकाल दिया जाता था।

मारको पोलू चूंकि अलाउद्दीन के ज़माने में यहाँ आया था इस लिये वह इस बेहिश्त को अलाउद्दीन से मन्सूब करता है लेकिन दर हक़ीक़त उस बेहिश्त का बानी हसन सबाह है। जो लोग जन्नत देखकर आजाते थे उनको फ़िदाइ का लक़ब दिया जाता था। उनको यक़ीन था कि मरने के बाद उसी जन्नत में जगह मिल जायगी इस लिये वह ऐसे निडर होते थे कि लड़ने मरने से नहीं डरते थे। बादशाहौं और उमरा वग़ैरह को दरबार में जाकर क़त्ल करना उनका मामूली

काम था। चुनांचे उस फ़िरक़े ने कइ नामी गिरामी लोगों को क़त्ल कर दिया है (उनमें से ४८ मारे जाने वाले लोगों की फेहरिस्त उर्दू किताब में मौजूद है)।

३०. फ़िरक़ए बातिनिया के अक़ायद

इस मौक़े पर हसन सबाह और उसके फ़िरक़ए बातिनिया के अक़ायद की फ़ेहरिस्त भी दिलचसपी से ख़ाली न होगी इस लिये नीचे दर्ज की जाती है। अक़ायद की तब्लीग़ ऐसी जमात के ज़रीए होती थी जिसका हर फ़र्द दाई के नाम से मौसूम किया गया था।

मख़फ़ी न रहे कि हसन सबाह ने फ़ल्सफ़ियाना तरीक़े से मज़्हबे *इसमाई लिया* में बुहत से नये मसायल का इज़ाफ़ा किया। मसअल वुजूदे बारी में इतनी शिद्दत की कि नऊज़ु बिल्लाह ख़ुदा को बेकार और मुअत्तल साबित कर दिया, मसलन ख़ुदा को क़ादिर कहते हैं तो इस लिये नहीं कि ख़ुद उसमें क़ुदरत है बल्कि इस लिहाज़ से कि उसने दूसरौं को क़ुदरत दी है। उसके जुम्ला सिफ़ात की यही हालत है क्योंकि अगर ख़ुदा में सिफ़ात हो तो वह मख़लूक़ के साथ मुशाबेह (समान) हो जायेगा। यह ऐसा मसअला है कि जिसकी वजह ख़ुदा की ज़ात में शुब्ह (शक) पैदा करदिया गया और उनका सब से महत्व पूर्ण यह मसअला है कि हर हुकमे ज़ाहिर का एक बातिन होता है, हर तंज़ील की एक तावील है। इस मसअले की वजह से उनकी नज़र में तमाम क़ुरआन और अहादीस के अहकाम दर्हम बर्हम होगये। इसी मसअले से उस फ़िरक़े का नाम फ़िरक़ए बातिनिया पड़गया। अहकामे शरई में जो तावीलात की गइ हैं उनकी मुख़्तसर फ़ेहरिस्त बतौरे नमूना दर्जे ज़ेल है।

१) नमाज़ - इमाम को याद करना

२) नामाज़ बा जमात - इमामे मासूम की मुताबिअत (अनुकरण)

३) रोज़ा - इमाम के असरार (भेद) की हिफ़ाज़त और एक दूसरे फ़क़ीह का क़ौल है कि अपने मुक़्तदा (मुरशिद) के अफ़आल को ख़ामोशी से देखना अगर फ़वाहिश (अशलील कामौं) में मुब्तला हो तो उसको भी अफ़आले हसना (अच्छे काम) समझना।

४) ज़कात - तज़्किय नफ़्स, माल का पाँचवाँ हिस्सा इमामे मासूम की नज़र करना।

५) हज - इमाम की ज़ियारत करना और दूसरा फ़क़ीह कहता है कि नौरोज़ और महरजान के दिन ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ होना।

६) तवाफ़े काअबा - इमाम के घर का तवाफ़ करना।

७) ग़ुस्ल - तज्दीदे अहद व पैमान।

८) वुज़ू - इमाम से मज़्हबी तालीम हासिल करना।

९) तयम्मुम - इमाम की ग़ैर हाज़री में नक़ीब से तालीम हासिल करना

१०) अज़ाँ और तकबीर - इमाम की इताअत पर लोगौं को आमादा करना।

११) जन्नत - ऐश पसन्दी, जिसमौं का तकलीफ़ से छूट जाना।

१२) दोज़ख़ - मेहनत, जिसमौं का तकलीफ़ में मुब्तला होना।

१३) ज़िना - दीन के असरार ज़ाहिर करना।

१४) एहतेलाम - मज़्हबी राज़ का ज़ाहिर करना।

१५) काअबा - पैग़म्बर

१६) सफ़ा - नबी

१७) मर्वा - वसी

१८) बाब - अली, हदीसे नबवी ''में इल्म का शहेर हूँ अली उसका दरवाज़ा हैं'' से माख़ूज़।

१९) इल्मे ज़ाहिर - आलमे अजसामे सिफ़ली व अलवी।

२०) इल्मे बातिन - आलमे अरवाह, नुफ़ूसे उक़ूल

इसी तरह हज़ारों मसाइल हैं जिनमें हर ज़ाहिर की बातिनी तावील की गइ है मसलन् हज़रत ईसा अले० की निसबत कहते हैं कि वह मुरदौं को ज़िन्दा करते थे। यह फ़िरक़ा हज़रत ईसा अले० को यूसुफ़ नज्जार का बेटा कहता था। यह लोग क़ियामत और हशर और नशर के क़ायल नहीं थे। मसअले तनासुख़ (आवा गमन) को सहीह मानते थे।

यह फ़िरक़ा हस्बे ज़ेल क़िलौं पर क़ाबिज़ था - क़िला उस्तून, आवंद, आरधन, अन्नाज़िर, तम्बूर, ख़ल्लाद खाँ वग़ैरह।

हसन सबाह ने ५१८ हिज्री में इन्तेक़ाल किया जिसके जानशीन एक के बाद एक सात हैं (१) किया बुज़ूर्ग (२) मुहम्मद बिन किया बुज़ुर्ग (३) हसन बिन मुहम्मद (४) मुहम्मद सानी बिन हसन (५) जलालुद्दीन मुहम्मद सानी मुलक़्क़ब ब हसन सालिस (६) अलाउद्दीन मुहम्मद बिन जलालुद्दीन मुहम्मद सालिस (७) रुकनुद्दीन ख़ोरशाह बिन अलाउद्दीन।

६५४ हिज्री/१२५६ ईसवी में हलाकू खाँ ने क़िलअतुल मौत पर हम्ला करके उन बातिनियौं का ख़ातमा कर दिया बारा हज़ार बतिनी क़त्ल किये गये। शाम और मिसर में भी मलिकुज़् ज़ाहिर बब्रस और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन बातिनियौं का समूल विनाश कर दिया।

उस फ़िरक़े को उसके अक़ायदे बातिला की वजह से जैसा कि बयान करदिया गया है नीज़ ज़ालिमाना क़त्ल और खूंरेज़ी के सबब् से हस्बे फ़र्माने बारी तआला ''जो शख़्स मुसलमान को क़सदन् मार डालेगा उसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वह हमेशा जलता रहेगा'' (अननिसा-९३) मुर्तद या काफ़िर कहें तो ना मुनासिब नहीं है। अहकामे फ़िक़ही के लिहाज़ से भी उन लोगौं पर इर्तदाद की तारीफ़ पूरी पूरी सादिक़ आती है और अहकामे फ़िक़ही के नज़र करते दीनी मसायल में तावीलाते बातिला किये जायें तो कौन शक कर सकता है कि हसन सबाह और उसके जानशीन जो सबाह के बातिल अक़ायद के मान्ने वाले थे और वह तमाम लोग जो दाई और फ़िदाइ के नाम से मौसूम थे और उनही अक़ायद के पैरो थे मुर्तद नहीं थे। मुअर्रिख़ीने फ़ारस ने इस फ़िरक़े को उसके अक़ायदे बातिला और ज़ालिमाना क़त्ल और ख़ूंरेज़ी के कारण मलाहेदा (धर्म भ्रष्ट) के नाम से याद किया है।

इन वाक़ेआत के बाद इमामुना अले० के मुबारक हालात पर ग़ौर किया जाये तो मालूम होगा कि आप ८४७ हिज्री/१४४३ ईसवी में पैदा हुवे और ८८७ हिज्री/१४८२ ईसवी में जब कि आप की उम्र शरीफ़ चालीस साल की थी शहेर जोनपूर से निकले और अपनी महेदियत की तब्लीग़ करते हुवे इन मक़ामात यानि दानापूर, कालपी, चुंदेरी, चापानीर, माँडो, दौलताबाद, अहमदनगर, बीदर, गुल्बरगा, बीजापूर, चीतापूर, डाबोल बन्दर, जिद्दा, मक्का मुअज़्ज़मा, देव बन्दर

खम्बायत बन्दर (समुद्र तट), अहमदाबाद, गुजरात, पटन, बड़ली, जालोर, नागोर, जैसलमीर, ठट्टा, काहा, क़ंधार में टहरते हुवे फ़राह मुबारक पहुंचे और वहाँ दो साल पाँच महीने मुक़ीम रहने के बाद ६३ साल की उम्र में ९१० हिज्री/१५०५ ईसवी में आपका विसाल (निधन) हुवा और उसी मुक़द्दस मक़ाम में आपका मज़ारे मुबारक है।

३१. मक़ाम फ़राह फ़िरक़ए बातिनिया के हुदूद में शामिल है

फ़राह वह मक़ाम है जो उस फ़िरक़ए बातिनिया के शर्क़ी (पूर्विय) हुदूद पर वाक़े है जैसा कि किताब *निज़ामुल मुल्क तूसी* मुअल्लिफ़ा अब्दुर रज़्ज़ाक़ कानपूरी मुअल्लिफ़ा अल ब्रामिका मतबूआ कानपूर के सफ़हे (५०९) के निचले हाशिये पर बताया गया है।

शरक़ी - ख़व्वाफ़ - माबैन ख़व्वाफ़, फ़राह और सीसतान

ग़रबी - फ़ारस - किरमान का जंगल

शुमाली - आमाल (राज्य) नेशापूर और सब्ज़वार

जुनूबी - आमाल सजिस्तान और बियाबाने किरमान

इस से ज़ाहिर है कि मक़ाम फ़राह क़िलअतुल मौत के शरक़ी हुदूद (पूरबी सीमा) पर वाक़े है जो हसन सबाह की राजधानी था।

पहले साबित किया गया है कि हलाकू ख़ाँ ने ६५४ हिज्री में उस फ़िरक़ए बातिनिया का विनाश कर दिया और इमामुना अले० ज़मानए मुस्तक़बिले बईद में आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* के मुताबिक़ (१९३) साल के बाद भारत के एक शहेर जोनपूर में पैदा हुवे और हिजरत करते हुवे असहाब के साथ मक़ाम ''फ़राह'' तश्रीफ़ लाये जो उन मुर्तदीन के मक़बूज़ा मक़ाम अलमौत के मश्रिक़ी हुदूद में वाक़े है। सच यह है कि जहाँ दर्द हो वहीं दवा की ज़रुरत, जहाँ ज़ख़्म हो वहीं मर्हम की ज़रुरत होती है इस लिये ख़ुदाए तआला ने आप को बहैसियत ख़लीफ़तुल्लाह महेदी मौऊद के लक़ब से जो रसूलुल्लाह सल्ला० का अता कर्दा है मबऊस फ़र्माया और आयत ''ऐ मोमिनो जब लोग तुम में से अपने दीन से पलट

जायेंगे तो अल्लाह एक क़ौम को लायेगा या एक क़ौम के साथ आयेगा'' की पेशीनगोइ का कामिल ज़ुहूर हुवा।

बाज़ मुआनिदीने महेदवियह मक़ाम ''फ़राह'' के महले बुक़ूअ (स्थान) और फ़िरक़ए बातिनिया के अक़ायद और आमाल को देखकर अपनी जहालत से या दूसरे फ़िरक़ौं को धोका देने के लिये कहते हैं कि फ़िरक़ए महेदविया में मक़ाम की नज़्दीकी के लिहाज़ से वही अक़ायद और आमाल दाख़िल होगये हैं जो फ़िरक़ए बातिनिया में मौजूद थे। यह ख़याल सर ता पा मुहमल (अर्थहीन) और बातिल है क्योंकि इमामुना अले० का सरीह (स्पष्ट) दावा है ''मज़्हबे मा किताबुल्लाह व इत्तिबाए मुहम्मद रसूसुल्लाह सल्ला०'' इस लिये इस दावे को फ़िरक़ए बातिनिया के अक़ायद और आमाल से कोइ निस्बत नहीं।

३२. इमामुना अले० का ''फ़राह'' में आना मशीयते ईज़दी से था।

अगर कोइ शख़्स शुब्ह ज़ाहिर करे या लोग अंदाज़ा लगायें कि फ़िरक़ए बातिनिया का स्थान क़िला 'अलमूत' के मश्रिक़ी हुदूद में होना और इमामुना अले० का उसी स्थान के मश्रिक़ में बमक़ाम ''फ़राह'' तश्रीफ़ लाना एक इत्तेफ़ाक़ी अम्र है तो इस शुब्ह या एतराज़ का इज़ाला उस हदीस से होजाता है जो हज़रत सोबान रज़ी० से मर्वी है। यह हदीस इस बात को साबित करती है कि इमामू ना अले० का फ़राह में तशरीफ़ लाना इत्तेफ़ाक़ी अम्र (विष्य) नहीं था बल्कि मशीयते ईज़्दी (ख़ुदा की मर्ज़ी) यही थी कि इस मक़ाम पर आयें क्योंकि हलाकू खाँ ने ६५४ हिज्री में बग़दाद के आख़री ख़लीफ़ा मुस्ताअसम को क़त्ल करदिया। जिस तरह आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* में *सौफ़* का लफ़्ज़ ज़माना मुस्तक़बिले बईद में इमाम अले० के ज़ुहूर को साबित करता है उसी तरह हदीसे सोबान रज़ी० में *''सुम्म यख़रुजु ख़लीफ़तुल्लाहिल महेदी''* के अलफ़ाज़ आये हैं और लफ़्ज़ *सुम्म* ताख़ीर और तराख़ी (देर) पर दलालत करता है और इमाम अले० बिला शुब्ह ज़वाले बग़दाद से (१९१) साल बाद पैदा हुवे। हदीसे सोबान रज़ी० से यह भी साबित होता है कि आपकी पैदाइश का मक़ाम हिंद होगा और आप हिदं से मुख़्तलिफ़ मक़ामात में हिज्रत करते हुवे जैसा कि सराहत करदी गइ है बमक़ाम ''फ़राह'' तश्रीफ़ लायेंगे। यह अम्र ज़ेल की तहक़ीक़ से वाज़ेह होगा।

इब्ने माजा, हाकिम और अबू नुएम ने हज़रत सोबान रज़ी० से जो रिवायत लिखी है वह यह है

عن ثوبانؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم يقتل عند كنزكم ثلثة كلهم ابن خليفة لا يصير الى احد منهم ثم تطلع الرايات السود من قبل المشرق فيقتلو نكم قتلا لم يقتله قوم ثم يجئ خليفة الله المهدى فاذا سمعتم به فاتوه فبايعوه ولو حبواً علىٰ الثلج فانه خليفته الله المهدى.

अनुवाद : सोबान रज़ी० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि तुम्हारे ख़ज़ाने (ख़िलाफ़त) के लिये तीन आदमी झगड़ा करेंगे वह सब ख़लीफ़ा के बेटे होंगे लेकिन एक भी उस पर क़ाबिज़ न होगा। फिर मश्रिक़ की तरफ़ से सियाह झंडे निकलेंगे वह तुमको ऐसा क़त्ल करेंगे कि अब तक किसी क़ौम ने ऐसा क़त्ल न किया होगा। उसके बाद ख़लीफ़तुल्लाह महेदा आयेंगे जब तुम महेदी को सुन पाओ तो उनके पास पहुंचो और उन से बैअत करो अगरचे बर्फ़ पर से रेगंते जाना पड़े क्योंकि वह अल्लाह के ख़लीफ़ा महेदी हैं।

इस हदीस में हस्बे ज़ेल उमूर मज़्कूर हैं -

१) ख़लीफ़ा के तीन बेटों का ख़िलाफ़त के लिये झगड़ा करना मगर ख़िलाफ़त किसी को न मिलना।

२) मश्रिक़ की तरफ़ से सियाह झंडों का नमूदार (प्रकट) होना।

३) मुसलमानों का ऐसा क़त्ल कि कभी भी ऐसा न हुवा हो।

४) इन वाक़ेआत के बाद ख़लीफ़तुल्लाह महेदी का ज़ुहूर।

५) ख़लीफ़तुल्लाह महेदी के ज़ुहूर के बाद आप के पास जाने और बैअत करने का हुकम अगरचे बर्फ़ पर से रेगंते जा कर बैअत करना पड़े।

ख़लीफ़ा के तीन बेटों से मुराद हज़रत अली अल मुर्तज़ा कर्रमुल्लाह वज्हहु के तीन बेटे हज़रत हसन, हज़रत हुसेन और मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़ी० हैं जो ख़िलाफ़त से महरूम रहे।

इस हदीस में ''कंज़'' का लफ़्ज़ आया है जिसके लुग़वी (कोशगत) माने ख़ज़ाना या मख़ज़न के हैं लेकिन लफ़्ज़ ''ख़लीफ़ा'' और ज़ाहिर किये गये वाक़ेआत के क़राइन से ''ख़िलाफ़त'' का मफ़हूम ज़ाहिर होता है क्योंकि ख़लीफ़ा के तीन बेटों का ख़ज़ाना या माल और दौलत के लिये झगड़ा करना क़रीने क़ियास (सम्भवतः) नहीं बल्कि अपने बाप के जानशीन होने या ख़िलाफ़त के लिये झगड़ा करने का मफ़हूम सहीह और क़ाबिले तस्लीम हो सकता है।

''*इंद कंज़ुकुम*'' में *इंद* का लफ़्ज़ अगरचे क़ुर्ब (निकटत) के माने देता है लेकिन यहाँ वक़्त के माने में इस्तेमाल हुवा है जैसा कि *जेतु इंद तुलूइश्शम्स* मुहावरा आता है यानि में तुलूए आफ़ताब के वक़्त आया, इस लिये *यक़्ततलु इंद कंज़िकुम सलास* के माने यह होंगे हुसूले ख़िलाफ़त की कोशिश के वक़्त तीन आदमी झग़ड़ा करेंगे।

मश्रिक़ की तरफ़ से सियाह झंडे निकलने से मुराद अबू मुस्लिम ख़ुरासानी का ख़ुरूज (निकलना) है जो काले झंडे लेकर निकला और ख़िलाफ़ते अब्बासिया की बुनियाद डाली।

''फिर सियाह झंडे निकलेंगे'' से ख़िलाफ़ते अब्बासिया के क़ियाम की तरफ़ इशारा किया गया है जिसकी इब्तदा अबू अब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह से और इन्तेहा ख़लीफ़ा मुस्तासम पर हुवी।

''वह तुमको क़त्ल करेंगे'' में ज़मीर मफ़ऊली ''कुम'' के मुख़ातब मुसलमान हैं क्योंकि यहाँ ग़ैर मुस्लिम से ख़िताब का कोइ महेल या मौक़ा नहीं है और ''वह क़त्ल करेंगे'' की ज़मीर जमा ग़ायब बतौर माअहूद ज़हनी कुफ़्फ़ार की तरफ़ लौटती है और कलिमा *फ़ा* ताअक़ीब मअल वस्ल के लिये इस्तेमाल होता है जैसा कि ''*उसूलुश्शासी*'' में लिखा है कि *फ़ा* कलिमा ताअक़ीब (बाद में) के वास्ते आता है (यानि माअतूफ़ अलैहि का वुजूद मुक़द्दम और माअतूफ़ का मुअख़्ख़र होता है) मगर यह ताअक़ीब मअल वस्ल होती है (यानि माबैन माअतूफ़ अलैहि के मुहलत नही) इसी वजह से *फ़ा* कलिमे का इस्तेमाल जज़ा में आता है।

किताबे मज़्कूर के हाशिये पर उसकी मिसाल यह दी गई है अगर किसी

ने अपनी ज़ौजा से कहा कि ''अगर तू घर में दाख़िल हुवी तो मुतल्लक़ा है'' उस सूरत में औरत घर में दाख़िल होते ही फ़ौरन् मुतल्लक़ा हो जायेगी।

तारीख़े इस्लाम से ज़ाहिर है कि ख़िलाफ़ते अब्बासिया की इन्तेहा या ख़ातमा के वक़्त जिसकी इब्तदा का इशारा सियाह झंडों के निकलने से हदीस में ज़ाहिर किया गया है और जिसकी इब्तदा सफ़्फ़ाह की ख़िलाफ़त से हुवी थी, मुसलमानों के क़त्ले आम का वाक़ेआ मुस्तासम ख़लीफ़ा बग़दाद की गिरफ़तारी के फ़ौरन बाद ज़ुहूर में आया गोया क़त्ले मज़्कूर ताअक़ीब मअल वस्ल पर दलालत करता है।

बर्फ़ पर से रेंगते जाने से ख़ुरासान् की पहाड़ियौं की तरफ़ इशारा किया गया है जहाँ छेह छेह महीने बर्फ़ गिरने के वजह से रास्ते बंद होजाते हैं और जिन का सिलसिला एक तरफ़ फ़राह और दूसरी तरफ़ काबुल तक चला जाता है और फ़राह वह मक़ाम है जहाँ इमाम अले० का मज़ारे मुबारक है।

३३. हदीसे सौबान रज़ी० के लिहाज़ से ख़लीफ़ा के तीन बेटौं के मुख़्तसर हालात

अब ऊपर बयान किये गये उमूर (विषय) के मुख़्तसर हालात तर्तीबवार (क्रमानुसार) क़ारेईने किराम की दिलचस्पी के लिये लिखे जाते हैं।

१) हज़रत अली कर्रमुल्लाहु वज्हहु की शहादत के बाद जब एक तरफ़ हज़रत मआविया बिन अबू सुफ़्यान ख़िलाफ़त के दावेदार होगये तो दूसरी तरफ़ हज़रत हसन रज़ी० भी जो ख़ुलफ़ाऐ राशिदीन के सिलसिले के आख़री ख़लीफ़ा हैं कूफ़ा और उसके मुज़ाफ़ात (उपनगर) के लोगौं की मुत्तफ़िक़ा मन्ज़ूरी से पिता की जगह ख़िलाफ़ते राशिदा पर फ़ायज़ हुवे लेकिन आपको एराक़ियौं की वादा ख़िलाफ़ी और बेईमानी से बदज़न होकर अपनी ख़ुशी से हज़रत मुआविया की शराइत को सुन्ना पड़ा और एक अहद नामे (सहमतिपत्र) के रु से ख़िलाफ़त का हक़ हीने हयात (अपने जीवन में) हज़रत मुआविया को देना पड़ा और यह फ़ैसला हुआ कि हज़रत मुआविया की वफ़ात पर ख़िलाफ़त हज़रत अली रज़ी० के दूसरे फ़र्ज़न्द हज़रत हुसेन रज़ी० के हवाले करदी जायेगी। इस्तेफ़ा (त्यागपत्र) देने के बाद हज़रत हसन रज़ी० अपने परिवार के साथ मदीना आगये। चंद साल बाद आप

को यज़ीद बिन मुआविया के ईमा (आज्ञा) से ज़हेर देदिया गया और हज़रत मुआविया मुस्तक़िल (स्थायी) बादशाह बन गये।

बसरा के गवर्नर मुग़ेरा की तर्ग़ीब (प्रेरणा) से हज़रत मुआविया को अपने बेटे यज़ीद को जानशीन बनाने का ख़याल पैदा हुआ। यह बात उस अहदनामे के सरासर ख़िलाफ़ थी जो उन्हों ने हज़रत हसन रज़ी० से किया था मगर हज़रत मुआविया को अपने इरादे की तकमील में ज़ियाद बिन अबीह और एराक़ और ख़ुरासान के शासक से बड़ी मदद् मिली और अहले एराक़ को रुश्वत के ज़रीये या ज़बरदस्ती यज़ीद की इताअत का हल्फ़ उठाने पर मज्बूर किया गया। सिर्फ़ चार हज़रात ऐसे थे जिन्हों ने क़तई तौर पर हल्फ़ उठाने से इन्कार किया (१) हुसेन बिन अली (२) अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर (३) अब्दुल्लाह बिन उमर (४) अब्दुर रहमान बिन अबू बक्र।

हज़रत मुआविया के बाद जब यज़ीद अपने बाप की वसीयत के मुवाफ़िक़ तख़्त नशीन हुवा तो उसको हज़रत हुसेन रज़ी० से ख़त्रा महसूस होता था। इधर कूफ़ा वाले हज़रत हुसेन रज़ी० के तमाम अहबाब ने मिन्नत समाजत की कि आप कूफ़ा वालौं के वादे पर न जायें क्योंकि यह लोग ज़ालिम और धोके बाज़ हैं। हज़रत हुसेन रज़ी० ने अहले एराक़ के इस वादे पर कि आप उस सरज़मीन पर क़दम रखें तो हमारे सर आपके क़दमौं पर रहेंगे, आप ने कूफ़ा जाने की ठानली। अपने चंद अज़ीज़ौं, जवान बेटौं, चंद जाँनिसारौं, औरतौं और बच्चौं की एक जमाअत के साथ एराक़ के हुदूद में पहुंचे तो वहाँ कूफ़ा वालौं के आसार तक न पाये हालाँकि अहले कूफ़ा ने उस जगह मिलने का वादा किया था। हज़रत हुसेन रज़ी० के अहबाब का गुमान बिल्कुल ठीक निकला। बनी उमय्या की फ़ौज ने जिसको ज़ालिम सफ़्फ़ाक उबेदुल्लाह बि ज़ियाद ने रवाना किया था आप को घेर लिया और दरयाए फ़रात का पानी बंद कर दिया। अगरचे हज़रत हुसेन रज़ी० ने अपनी वापसी की ख़ाहिश भी की लेकिन वह सफ़्फ़ाक (निर्दयी) रहम व करम का सबक़ ही नहीं पढ़े थे। आप पर उस वक़्त जो मसायब बरपा हुवे उनका एआदा ख़ून के आंसू रुलाये बग़ैर नहीं रहता। मुख़्तसर यह कि उन ज़ालिमौं ने आप के साथियौं को एक एक करके शहीद करदिया और हज़रत हुसेन रज़ी० ने भी जामे शहादत नोश फ़र्माया।

हज़रत हुसेन रज़ी० की शहादत के बाद मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़ी० ने जो हज़रत हुसेन रज़ी० के सौतेले भाइ थे ख़िलाफ़त का दावा किया। ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक की ख़िलाफ़त का ज़माना था। अब्दुल मलिक के मुक़ाबले में उसके ख़िलाफ़ तीन फ़रीक़ौं के तीन झंडे अरफ़ात पर बुलंद किये गये थे। एक अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर का दूसरा ख़वारिज का और तीसरा मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़० का। अब्दुल मलिक ने अपनी तलवार के ज़ोर से अपने मुख़ालफ़ीन को एक एक करके ख़त्म कर दिया और हज़रत मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़ी० भी शहीद होगये।

ख़लीफ़ा के तीन बेटे यही थे जिनकी तरफ़ हदीसे सोवान रज़ी० में इशारा किया गया है यानि ''तुम्हारे ख़ज़ोने (ख़िलाफ़त) की जद्दोजहद के वक़्त तीन आदमी झगड़ करेंगे वह सब ख़लीफ़ा के बेटे होंगे उनमें से किसी को ख़िलाफ़त नहीं मिलेगी''।

३४. सियाह झंडौं की बहसः

(२) पूरब की तरफ़ से सियाह झंडौं का निकलना ख़िलाफ़ते अब्बासिया के क़ियाम का बुनियादी वाक़ेआ है।

ख़ान्दाने अब्बासिया हज़रत अब्बास की औलाद से है। आपके चार बेटे थे (१) अब्दुल्लाह (२) फ़ज़ल (३) उबेदुल्लाह (४) क़ैसान। अब्दुल्लाह को इब्ने अब्बास भी कहते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास के फ़रज़न्द अली बाप के नक़शे क़दम पर चलते थे। अली की वफ़ात पर उनके फ़रज़न्द मुहम्मद अपने ख़ान्दान के मुतवल्ली हुवे, उन्हों ने ख़िलाफ़त को नई तर्ज़ में पेश किया। वह कहते थे कि हज़रत हुसेन रज़ी० के बाद ख़िलाफ़त इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ी० को नहीं मिली बल्कि मुहम्मद बिन हनीफ़ा उसके वाली हुवे फिर उनके बेटे हाशिम ने यह हक़ मुझको दे दिया है यह तहरीक बड़े इस्तिक़लाल (उत्साह) से जारी रही।

ख़लीफ़ा हिशाम ने हज़रत ज़ैद को जो हज़रत हसन रज़ी० के बेटे और ख़िलाफ़त के मुद्दई थे दरबार से बेहुर्मती (अपमान) के साथ निकाला। ज़ैद कूफ़ा आगये और अपने लवाहेक़ीन (सगे संबेधी) को नसीहत की कि हिशाम के ख़िलाफ़ कोइ जद्दोजहद न की जाये लेकिन बाज़ लवाहेक़ीन के अलमे बग़ावत बुलंद करने

पर हिशाम ने हज़रत ज़ैद को क़ुसूर मंद (दोषी) तसव्वुर करके दरबार में शहीद कर डाला और नाश (शव) लवाहेक़ीन के हवाले करदी। इतने में हिशाम ने फिर नाश तलब की तो उनके लवाहेक़ीन ने नहेर में दफ़ना कर पानी बहा दिया था। उमवियों ने पता लगाकर नाश निकाली और उसको सूली पर लटका कर जला दिया और नाश दरयाए फ़रात में फिंकवादी गयी। इस वाक़ेया से लोगों को मुद्दईयाने ख़िलाफ़ते अब्बासिया में जोश पैदा करने और बनी उमय्या की सल्तनत को ख़त्म करने का मौक़ा मिल गया। अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी० को ख़िलाफ़त दिलाने की हिमायत की और एक बड़ी जमात को अपना तरफ़दार बना लिया।

अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने बनू उमय्या के मज़ालिम हज़रत अली रज़ी० से लेकर हज़रत हुसेन रज़ी०, मुहम्मद बिन हनीफ़ा, हज़रत ज़ैद और उनके बेटे याहया पर बता कर लोगों को अहले बैत के ग़म में सियाह जामा (वस्त्र) पहन्ने की तरग़ीब दी और अपने झंडे के नीचे सब को जमा किया। उस वक़्त अब्बासिया का सियाह रंग मश्हूर होगया। याहया के क़ातिलों का तआक़ुब (पीछा) किया गया। जो लोग आले रसूल के तरफ़दार थे वह सब अबू मुस्लिम ख़ुरासानी के हामी बनगये। अबू मुस्लिम ने एक जल्से की तज्वीज़ की और पहाड़ों पर आग सुलगाकर अपने दूसरे हामियों (समर्थकों) को तलब किया। अबू मुस्लिम का सियाह झंडा जिसको बादल और साया कहते थे ख़ुरासान की तरफ़ शहर-शहर गाँव-गाँव फिरने लगा। अबू मुस्लिम ख़ुरासानी की फ़ौज़ सियाह झंडियों का मुज़हिरा करने लगी। बनी उमय्या के आख़री बादशाह के गवर्नर नसर को 'मर्व' से निकालने की ठानली। नसर ने मर्वान हम्मार आख़री बादशाहे बनू उमय्या से मदद मांगी मगर मदद आने से पहले फ़रग़ाना और ख़ुरासान के इलाक़े अबू मुस्लिम के क़ब्ज़े में आगये। मर्वान हम्मार को असल शख़्स की फ़िकर पड़गयी जिसके लिये यह सब कुछ हो रहा है। जासूसों ने ख़बर दी कि मुहम्मद बिन अली के बाद इब्राहीम इमाम उनके बेटे इस बग़ावत के बानी हैं जिनकी तरफ़ से अबू मुस्लिम ख़ुरासानी सियाह झंडियों का मुज़ाहिरा कर रहा है।

मर्वान हम्मार ने इब्राहीम इमाम को गिरफ़तार करके हिरान् लेआया यहाँ

वह दूसरे हाशिमियों के साथ नज़र बंद रहे। इस वाक़ेये से अबू मुस्लिम ख़ुरासानी के इस्तिक़लाल (उत्साह) में कोइ फ़र्क़ नहीं आया वह नसर को शिकिस्त देकर मग़रिब की तरफ़ बढ़ा उसके साथ ख़ालिद बिन बर्मक ईरानी भी था जिसकी औलाद में याहया बर्मकी और उनके बेटे जाफ़र बर्मकी ने हारून रशीद के ज़माने में बड़ी शुहरत हासिल की।

अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने नहावंद और कूफ़ा को फ़त्ह कर लिया। मर्वान हम्मार ग़ज़ब (क्रोध) की हालत में वहशियाना हरकात का मुर्तकिब हुवा जिसका नतीजा शिकिस्त के सिवा कुछ न था। उसको ख़बर मिली कि इब्राहीम इमाम नज़रबंदी की हालत में अबू मुस्लिम ख़ुरासानी से नामा व पयाम (पत्राचार) कर रहे हैं इस लिये हुक्म दिया कि इब्राहीम का सर मशक में बुझा चूना डालकर पानी से भर दिया जाये। इब्ने असीर का क़ौल है कि इब्राहीम मकान के गिरने से फ़ोत हुवे या उनको दूध में ज़हर मिलाकर पिलाया गया।

इब्राहीम इमाम ने अपनी वफ़ात से पहले अपने भाइ अबुल अब्बास को ख़िलाफ़त दी थी। अबुल अब्बास ने अपने भाइ के इन्तेक़ाम की क़सम खाइ और ऐसे सख़्त तरीक़े से इन्तेक़ाम लिया कि सफ़्फ़ाह का ख़िताब पाया।

अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने ज़ाब के मक़ाम पर मर्वान हम्मार को ऐसी शिकिस्त दी कि वह फ़रार होकर दमिश्क़ पहुंचा वहाँ ख़त्रा देखकर क़ुस्तुनतुनिया गया और वहाँ से एक रोमी इलाक़े की तरफ़ जा रहा था ताकि क़ुस्तुनतीन के जानशीन से मदद हासिल करे लेकिन तआक़ुब हो रहा था इस लिये वह मिसर के इलाक़े में दर्याए नील के किनारे एक गाँव के गिर्जा (चर्च) में जाछुपा, दुश्मन को आता हुवा देखकर तलवार लेकर लपका मगर नेज़े की नोक से छिदकर रहगया। मर्वान हम्मार का मरना था कि बनू उमय्या की सौ साला हुकूमत ख़त्म होगयी। अबुल अब्बास ख़ान्दाने अब्बासिया का ख़लीफ़ा बना और अपने भाइ का ऐसा इन्तेकाम लिया कि सफ़्फ़ाह का ख़िताब पाया। (तारीख़े इसलाम अमीर अली)।

यह हैं वाक़ेआत सियाह झंडों के जिसकी तरफ़ हदीसे सोबान रज़ी० में इशारा पाया जाता है ''फिर सियाह झंडे मश्रिक़ की तरफ़ से निकलेंगे''।

३५. हदीसे सोबान रज़ी० में मुसलमानों के क़त्ल की तफ़सील या ज़वाले बग़दाद

(३) हदीसे सोबान रज़ी० में *फ़यक़तुलूनकुम* (तुमको क़त्ल करेंगे) के अलफ़ाज़ से जिन मुसलमानों के क़त्ल का ज़िकर किया गया है वह वाक़ेआ ज़वाले बग़दाद के मुतअल्लिक़ है जिसकी कैफ़ियत ज़ेल में लिखी जाती है।

ख़ुलफ़ाए अब्बासिया के ज़माने में बग़दाद दुनिया का सबसे बेहतरीन शहर कहलाता था। जब मुस्तासम बिल्लाह बिन मुस्तन्सिर बिल्लाह बग़दाद में ख़लीफ़ा हुआ चार सौ ख़ादिम (सेवक) हर वक़्त उसकी बारगाह (राज सभा) में रहते थे। एक पत्थर हजरे अस्वद की मानिदं रख छोड़ा था जिस पर सियाह अत्लस (चमकदार सिल्क कपड़ा) आस्तीन की तरह पड़ा रहता था। अत्राफ़ से जो बादशाह आता था उस अत्लस को बोसा देकर चला जाता था। आताबक सअद मुज़फ़्फ़रुद्दीन अबू बक्र बादशाह शीराज़ के ज़माने में क़ाज़ीउल क़ज़ात मज्दुद्दीन बिन इसमाईल क़ानी बतौर एलची (दूत) मुस्ताअसिम की ख़िदमत में भेजे गये और पत्थर का बोसा देना लाज़िम क़रार दिया गया चूंकि क़ाज़ी बड़े दीनदार थे इस लिये उनको इतनी इजाज़त मिली कि उन्होंने पत्थर पर क़ुरआन शरीफ़ रखा और उसे बोसा दिया। जब ख़लीफ़ा ईद के दिन सवार होता था तो ख़लीफ़ा को देखने के लिये लोग रास्ते के बालाख़ाने किराये पर लेते थे।

वज़ीरे सल्तनत मोइदुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल मलिक इब्नुल अलक़ुमी था जो बड़ा विद्वान था। मुस्तासिम लहवो लइब (मनो विनोद) ऐशो इश्रत में मश्ग़ूल रहता था और तमाम उमूरे सल्तनत इब्नुल अलक़ुमी की राय से अन्जाम पाते थे। ख़लीफ़ा के दरबार के लोग वज़ीर का एहतिराम नहीं करते थे इस लिये वह रंजीदा रहता था और ख़लीफ़ा से बद एतिक़ाद होगया था। इब्नुल अलक़ुमी के बाग़ी होजाने का असली सबब यह भी था कि मुस्तासिम के बेटे अमीर अबू बक्र ने सश्कर भेजकर कर्ख़ मुहल्लए बग़दाद को जिस में शेआ रहते थे ग़ारत करदिया और सादात बनी हाशिम को क़ैद करदिया, औरतों और लड़कियों को रुस्वाइ और ज़िल्लत के साथ घरों से बाहर निकाला। इब्नुल अलक़ुमी को जो मज़्हबे इमामिया से तअल्लुक़ रखता था अमीर अबू बक्र की इस हर्कत से सख़्त रंज हुवा और उसी वक़्त से इब्नुल अलक़ुमी चाहता था कि किसी तरह ख़लीफ़ा और उसके पैरोओं को तेग़ की घाट उतारा जाये।

इसी असना (मध्य) में हलाकू खाँ ६५४ हिज्री में क़िलअतुल मौत को फ़त्ह करके एक सौ सत्तर (१७०) साल की सल्तनते सबाह इसमाईली को बर्बाद करचुका था जैसा कि उसकी कैफ़ियत बयान करदी गइ है। नसीरुद्दीन तूसी लेखक *अख़लाक़े नासिरी* (मुहक़्क़िक़ तूसी) ने एक क़सीदा (प्रशंसा गीत) मुस्तासिम की तारीफ़ में लिख भेजा। इब्नुल अलक़ुभी ने उसी क़सीदे के पीछे यह इबारत लिख़ कर कि मौलाना नसीरुद्दीन ख़लीफ़ा से ख़तो किताबत कर रहे हैं उसके अंजामेबद से बचना चाहिये नासिरुद्दीन के पास भेझदिया। नासिरुद्दीन ख़फ़ा होकार मुहक़्क़िक तूसी को क़ैद करदिया। अब वह हलाकू ख़ाँ की फ़त्ह पर क़ैद से छूटे और ऐलखाँ ने उनको अपना नौकर बना लिया। हलाकू ख़ाँ मुहिम्माते सल्तनत में मुहक़्क़िक तूसी से मश्वरा करता था। इब्नुल अलक़ुमी ने ख़ुफ़िया तौर पर एक एल्वी हलाकू ख़ाँ के पास भेजा और ख़लीफ़ा की शिकायात ज़ाहिर करके ख़ाहिश की कि बग़दाद पर चढ़ाइ की जाये तो जंग के बग़ैर हुकूमते बग़दाद हवाले करदी जायेगी।

जब हलाकू ख़ाँ की चढ़ाइ की ख़बर बग़दाद में फैली तो बाज़ उमरा ने ख़लीफ़ा की ग़फ़लत पर मलामत की और कहा कि हलाकू ख़ाँ की फ़ौज के आने से पहले असबाबे जंग मुहय्या करना चाहिये लेकिन इब्नुल अलक़ुमी ने इन बातौं को ख़लीफ़ा के सामने बेवक़अत (तुच्छ) करदिया और कहा अगर बग़दाद की औरतें और बच्चे कोठौं पर से पत्थर और ईंटें फेंक दें तो हलाकू की फ़ौज तबाह होजायेगी और पोशीदा तौर पर ख़लीफ़ा के हालात की सूचना हलाकू को देता रहा, यहाँ तक कि हलाकू की फ़ौज बग़दाद की तरफ़ आगयी और लड़ाइ शुरु होगयी। बग़दाद के बुहत से आदमी मारे गये। शाम के वक़्त हलाकू ने लड़ाइ रोकदी, पचास दिन तक बग़दाद का मुहासिरा (घेरा डाला) किये रहा। इस हालत में मज्दुद्दीन, शदीदुद्दीन और शम्सुद्दीन ने एक दूत को हलाकू के पास इस पयाम के साथ भेजा कि हमने अपने आबा व अज्दाद (पूर्वज) और बारा इमाम ख़ास तौर पर अमीरुल मोमिनीन अली अले० से ऐसा सुना है कि तुम इस मुल्क के मालिक होंगे और वाली (शासक) गिरफ़तार होजायेगा। इस पयाम से हलाकू बुहत ख़ुश हुवा इनाम और उनके हाज़िर होने का हुकम दिया। अलाउद्दीन अजमी वहाँ गये और अहले हिल्ला की जान बचाइ।

ख़लीफ़ा अब भी इब्नुल अलक़मी से मश्वरा करता था उसने कहा कि मुग़लौं की फ़ौज़ ज़्यादा है और हमारे पास मुक़ाबले के लिये असबाब नहीं हैं इसलिये जंग का ख़याल छोड़कर तवाज़ो और मदारात (आवभगत) से पेश आना चाहिये इसलिये ख़लीफ़ा को हलाकू के पास जाना चाहिये। हलाकू का मक़सद जवाहरात है वह उसे देदेना चाहिये मुसलमानौं की जान बच जायेगी।

ख़लीफ़ा मुस्तासिम बिल्लाह अपने दोनों बेटौं अबूबक्र और अब्दुर रहमान और राज्य के महान लोगौं के साथ सवार होकर हलाकू की तरफ़ चला। जब दरबार के क़रीब पहुंचा तो कसीर आदमियौं को दाख़ले की इजाज़त नहीं मिली, ख़लीफ़ा को दो बेटौं और दो तीन ख़ादिमौं के साथ ख़ैमा (मंडप) में बुलाया। जब सुबह हुवी तो हलाकू ने बग़दाद की ग़ारत गिरी (विनाश) का हुक्म देदिया। मुस्तासिम जिस क़दर मालो दौलत अपने साबिक़ ख़ुलफ़ाए बग़दाद से विरसे में पाया था वह सब लूट में ज़ाये होगया।

दो तीन दिन बाद मुस्तासिम ने सुब्ह की नमाज़ में आयत ''कहदो ऐ मुहम्मद सल्ला० कि तुम्हारी उम्मत इस तरह दुआ करे ऐ अल्लाह तो मुल्क का मालिक है जिसको चाहता है मुल्क देता है और जिस से चाहता है मुल्क छीन लेता है, जिसको चाहता है इज़्ज़त देता है जिसको चाहता है ज़लील करता है'' (आले इम्रान-२६) की क़िरअत की तो लोगौं ने उसका ज़िकर हलाकू से किया। हलाकू ने कहा खाना रोकदो, जब भूक से बेहाल हुवा तो मुहाफ़िज़ौं से खाना मांगा उसकी सूचना भी हलाकू को हुवी। हलाकू के हुक्म से एक थाल अश्रफ़ियौं से भरा हुआ ख़लीफ़ा के सामने रखा गया और उसको खाने का हुक्म दिया गया। मुस्तासिम ने जवाब दिया कि इसे इन्सान क्योंकर खाये। हलाकू ने कहलाया अगर ज़र (स्वर्ण) खाने की चीज़ नहीं है तो उसे फ़ौज और मददगारौं में तक़सीम क्यों नहीं किया कि उसमें हमारा हिस्सा नहोता।

हलाकू ने ख़लीफ़ा को ज़िंदा रखने या क़त्ल करदेने के बारे में अपने मुलाज़िमीन से मश्वरा किया। अहले इसलाम ने कहा कि लोग मुस्तासिम को ख़लीफ़ए रसूल सल्ला० और इमामे बर्हक़ जानते हैं अगर उसको क़त्ल किया जाये तो आसमान उलट कर गिर जायेगा। मुसलमानौं हि से बाज़ ग़द्दारौं ने कहा

जब रसूलुल्लाह सल्ला० के नवासे हज़रत हुसेन रज़ी० शहीद हुवे थे उस वक़्त आसमान टूट कर नहीं गिरा तो मुस्तासिम के क़त्ल पर कैसे आसमान टूटकर गिरेगा। इस पर भी हलाकू ने कहा कि मुस्तासिम के ख़ून से तेग़ को रंगीन न किया जाये, फिर उसको नम्दा (मोटा कंबल) में लपेटकर इतना हलादिया गया कि ख़लीफ़ा की जान निकल गइ। यह वाक़ेआ ६५६ हिज्री/१२५८ ईसवी का है।

चूंकि बग़दाद इब्नुल अलक़ुमी की कोशिश से फ़त्ह हुवा था इस लिये उसे उम्मीद थी कि बग़दाद की हुकूमत उसी को मिलेगी मगर हलाकू ने इस इल्ज़ाम पर कि उसने वली नेमत से बेवफ़ाइ की है उसको हुकूमते बग़दाद से महरुम रखा।

इब्ने इम्रान एक मामूली और मुफ़लिस आदमी था कुछ लिखना पढ़ना जानता था। हलाकू के हम्ले से कुछ पहले एक दिन दोपहर को हाकिमे बाक़ोबा के पाँव दबा रहा था कि नींद आगइ, हाथ रुका तो हाकिमे बाकोबा ने कारण पूछा उसने कहा मैं ने ख़्वाब में देखा कि बग़दाद की ख़िलाफ़त का ख़ातमा हो गया है और मैं बग़दाद का हाकिम हो गया हूँ। हाकिमे बाक़ोबा ने एक लात मारी कि बेचारा नीचे गिर पड़ा।

जब हलाकू ने बग़दाद को घेर लिया तो इब्ने इम्रान ने एक तीर पर काग़ज़ चसपाँ करके इबारत लिखी कि मुझे ख़लीफ़ा से मांगलें मैं आपके बुहत काम आउंगा। तीर कमान से निकला और लश्कर वालौं की तरफ़ जागिरा, हलाकू को उस इबारत से वाक़िफ़ कराया गया। हलाकू इब्ने इम्रान को बुलवालिया गोदामौं के राज़ मालूम हुवे, हलाकू ख़ुश होकर उसे बग़दाद का हाकिम बना दिया और इब्नुल अलक़ुमी उसका मातहत क़रार पाया जो अपने किये पर सख़्स नादिम हुवा। लोग दीवारौं पर लिखते थे ''ऐ ख़ुदा उस शख़्स पर लानत करे जो इब्नुल अलक़ुमी पर लानत नहीं करता''।

चालीस दिन तक हलाकू का लश्कर क़त्ल और ग़ारत में मश्ग़ूल रहा। सोला लाख जानें तल्फ़ हुवीं, वहशी मुग़लौं ने दूध पीते बच्चौं को तक नहीं छोड़ा, गलियौं में ख़ून की नालियाँ बह रही थीं, दर्याए दजला का पानी मीलौं तक अरग़वानी (लाल) होगया था (तारीख़े वस्साफ़)। हदीसे सोबान रज़ी० के अलफ़ाज़'' वह (कुफ़्फ़ार) तुम (मुसलमानों) को ऐसा क़त्ल करेंगे कि किसी क़ौम ने इस तरह

क़त्ल न किया होगा'' इसी वाक़ेए (घटना) की तरफ़ इशारा कर रहे हैं जो ख़िलाफ़ते बग़दाद के ख़ातिमे (अंत) का वाक़ेआ है।

(४) हदीसे सोबान रज़ी० की तीन पेशीनगोयौं यानि (१) ख़लीफ़ा के तीन बेटौं का ख़िलाफ़त से महरूम रहना (२) सियाह झंडौं का मश्रिक़ से निकलना और (३) मुसलमानौं का बेदरेग़ (बहुत अधिक) क़त्ल के बाद ''फिर ख़लीफ़तुल्लाह महेदी आयेंगे जब तुम उनका हाल सुनो तो उनेक पास जाओ और बैअत करो'' के अल्फ़ाज़ बयान किये गये हैं। ''उनके पास जाओ'' और ''उन से बैअत करो'' अम्र के सेग़े (आदेशात्मक) हैं जो बिना क़रीना होने की वज्ह से वुजूब (लाज़िम होने) पर दलालत करते हैं यानि उसका मत्लब यह है कि महेदी अले० की बैअत मुसलमानौं पर वाजिब है, फिर उस पर ''अगरचे बर्फ़ पर से रेगंते जाना पड़े'' की ताकीद भी आइ है।

सुम्म यजी (फिर आयेंगे) में *सुम्म* का लफ़्ज़ ताअक़ीब और तराख़ी यानि ताख़ीर (देर) पर बदर्जए औला दलालत करता है जिसकी कोइ हद् मुऐयन (निर्दिष्ट) नहीं है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में आया है ''*सुम्म इन्न अलैना हिसाबहुम* (८८:२६) यानि फिर हम दुनिया के आमाल का हिसाब लेंगे और आमाल का हिसाब क़ियामत में होगा।

६५६ हिज्री में ज़वाले बग़दाद के बाद जब इमामुना अले० ८४७ हिज्री में (१९१) साल के बाद पैदा हुवे तो *सुम्म* का लफ़्ज़ इतना ताअक़ीब व तराख़ी और ताख़ीर पर बदर्जए औला (अति उत्तम) दलालत करता है। देखो इसी हदीस में ''फिर सियाह झंडे निकलेंगे'' से ख़िलाफ़ते अब्बासिया के बुनियादी वाक़िआ की ख़बर दी गइ है और सियाह झंडौं का वाक़िआ बनी उमय्या की हुकूमत के सौ साल के बाद ज़ुहूर में आया है, इस लिये (१९१) साल की ताख़ीर *सुम्म इन्न अलैना हिसाबबुम* के लिहाज़ से नामुम्किन (असंभव) नहीं है।

(५) अब हदीसे सोबान रज़ी० के आख़री हिस्से *वलौ हबवन् अलस् सल्ज* के माने यह हैं कि अगर तुमको बर्फ़ पर से रेंगते हुवे जाना पड़े तो जाओ और महेदी अले० की बैअत करो।

लुग़ाते अरब में *वलौ हबवन् अलस् सल्ज* न कोइ ख़ास मुहावरा है न कोइ कहावत जो किसी मख़सूस माना के लिये आया हो बल्कि उस से सरदारे अरब रसूले अक्रम सल्ला० ने ऐसे मुक़ाम की ख़बर दी है जो मुल्के अरब और उस मुक़ाम के दरमियान जहाँ महेदी अले० पैदा होंगे एक कठिन बर्फ़ानी मुक़ाम होगा जिस पर से रेंगते हुवे जाना पड़े भी तो जाकर आप की बैअत करो। इस हदीसे शरीफ़ की रोशनी में अरब के हुदूदे अर्बआ (चारों ओर की सीमाएँ) पर नज़र डालने और तहक़ीक़ करने से हदीसे मज़्कूर में जिस मक़ाम की तरफ़ इशात किया गया है उसका मालूम होना ना मुम्किन नहीं है।

३६. मुल्के अरब का हुदूदे - अर्बआ (चौहद्दी) :

(१) अरब के पश्चिम में बुहिरए क़ुल्ज़ुम (Red Sea) और उसके दूसरी तरफ़ मिसर, लीबिया, आखिर में मराक़श वाक़े हैं जहाँ कोइ बर्फ़ानी मक़ाम नहीं बल्कि यह मुक़ामात मिन्तक़ए हार्रा (उष्ण कटिबंध) में दाख़िल हैं।

(२) अरब के जुनूब (दक्षिण) में बुहीरए अरब फिर उसके जुनूब में बहरे हिन्द लहरा रहा है यहाँ तो कोई ज़मीन ही नहीं है जहाँ इन्सान बस्ते हों।

(३) अरब के शुमाल (उत्तर) में एशियाए कोचक का इलाक़ा है और उसके परे रूस का इलाक़ा है जो साइबेरिया तक चला गया है जहाँ बर्फ़ पड़ने के ज़माने में बर्फ़ जम्ती है मगर कोइ ऐसा मुक़ाम नहीं है जो किसी मुक़ाम पर बर्फ़ जम्ने के बाद ऐसा इलाक़ा आये जहाँ बर्फ़ नहीं जम्ती।

(४) अरब के मश्रिक़ में दो हिस्से फ़र्ज़ करो, एक जुनूब मश्रिक़ का हिस्सा दूसरा शुमाल मश्रिक़ का हिस्सा। जुनूबी हिस्से में कोइ बर्फ़ानी मुक़ाम नहीं है जहाँ सहराए अरब, साहिले ईरान और बुलोचिस्तान वग़ैरा हैं, अलबत्ता शुमाली हिस्से में ख़ुरासानी पहाड़ियाँ हैं जहाँ छे छे माह तक बर्फ़ जमी रहती है आमदो-रफ़्त (यातायात) का रास्ता बंद रहता है और यहाँ से गुज़रना बुहत कठिन है। रास्ते की कठिनाई का अन्दाज़ा बाबर के उस सफ़रनामे से होसकता है जो उसने ख़ुद चुग़ताई ज़बान में लिखा था और उसका अनुवाद अकबरे आज़म के ज़माने में अब्दुर रहीम ख़ाने ख़ानान् ने ''तुज़के बाबरी''

के नाम से किया है। बाबर सुल्तान हुसेन मिर्ज़ा महेदवी के बुलाने पर हिरात से काबुल रवाना होता और बर्फ़ की क़ैफ़ियत बयान करता है'' नवाही चचरान में बर्फ़ घोड़े की रान से बुलंद थी, घोड़े के पाँव ज़मीन पर नहीं पहुंचते थे ''आगे चलकर लिखा है ''तक़रीबन् एक हफ़्ते के अरसे में हम बर्फ़ हटाकर एक कोस देढ़ कोस से ज़्यादा कूच नहीं कर सकते थे''।

इस बयान से वाज़ेह है कि ख़ुरासान की बर्फ़ानी पहाड़ियौं का रास्ता बर्फ़ गिरने की वज्ह से निहायत दुश्वार गुज़ार है। जब एक हफ़्ते में देढ़ कोस रास्ता चला गया है तो क्या यह रफ़्तार हदीसे सोबान रज़ी० के मज़्मून के मुवाफ़िक़ रेंगते हुवे जाने की जैसी नहीं है।

बहर हाल ख़ुरासान का इलाक़ा ऐसा है जहाँ बर्फ़ जम्ती है और उसी इलाक़े के मश्रिक़ में हिन्दूस्तान वाक़े है जहाँ बर्फ़ नहीं जम्ती और उसी हिन्दूस्तान के शहर जोनपूर में इमामुना अले० ८४७ हिज्री में पैदा हुए और हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ और बुहत सारे शहरौं में हिज्रत करते हुवे मक्का मुअज़्ज़मा तश्रीफ़ लेगये। वापसी पर गुजरात पहुंचे फिर यहाँ से मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर हिज्रत करते हुवे जिनका ज़िकर करदिया गया है शहर फ़राह पहुंचे। ख़ुरासानी पहाड़ियौं की बर्फ़बारी एक तरफ़ फ़राह पर दूसरी तरफ़ काबुल पर ख़त्म होती है। इस लिये हदीस सोबान रज़ी० में ''अगरचे बर्फ़ पर से रेंगते हुवे जाना पड़े'' का मत्लब यह है कि इमामुना अले० हिन्दुस्तान में पैदा होंगे और मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर हिज्रत करते हुवे शहर फ़राह आयेंगे जहाँ आप का मज़ारे मुबारक है। जब तुमको इमामुना अले० के ज़ुहूर का हाल सुन्ने में आये तो वह हिन्दूस्तान में किसी मुक़ाम पर रहें या फ़राह आजायें तो उस बर्फ़ानी इलाक़े को बहज़ार दिक़्क़त (सख़्त कठिनाइ के साथ सही) तै करके जाओ और बैअत के लिये इमाम महेदी अले० की ख़िदमत में पहुंच जाओ और बैअत से मुशर्रफ़ होजाओ क्योंकि आपकी बैअत फ़र्ज़ है।

३७. हदीसे सोबान रज़ी० में *वलौ हबवन् अलस सल्ज* के माने

हदीसे सोबान रज़ी० में *वलौ हबवन् अलस सल्ज* का एक ही फ़िक़रा (वाक्य) इमामुना अले० के मोलिद (जन्मस्थान) और मदफ़न (समाधिक्षेत्र) दोनों

को साबित करता है और हुज़ूर अनवर सल्ला० ने यह फ़िक़्रा बतौर इशारा व किनाया इर्शाद फ़र्माया है जैसा किा मुग़ैइबात का उसूल है।

इस से पहले आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* की तफ़सीरे सबाही में मुर्तदों के महले वक़ूअ से मश्रिक़ की जानिब फ़राह का मक़ाम साबित हुवा और अब हदीसे सोबान रजी० से भी हिन्दुस्तान के अलावा मक़ाम फ़राह साबित होरहा है गोया हदीसे सोबान रज़ी० इस आयत की तफ़सीर कर रही है। इसके बाद उस शुबे का इज़ाला ख़ुद बख़ुद हो जाता है कि इमामुना अले० का फ़राह में तश्रीफ़ लाना और फ़िर्क़ए बातिनिया के मक़ाम से फ़राह का शर्क़ी हुदूद में दाख़िल रहना एक इत्तेफ़ाक़ी अम्र नही है बल्कि मशीयते एज़्दी का तक़ाज़ा यही था कि आपका मोलिद (जन्मस्थान) हिन्दुस्तान बने तो फ़राह में आपका मज़ारे मुबारक हो।

बाज़ अहादीस में महेदी अले० के मक़ामे पैदाइश से मुतअल्लक़ जो इख़्तिलाफ़ पाया जाता है वह या तो मौज़ूअ (बनाया गया) हैं या मौक़ुफ़। उनके मरफ़ूअ न होने की वजह से वह क़ाबिले इस्तिदलाल नहीं है। मसलन् इस से पहले इज्तिमाए महेदी और ईसा अले० के बयान के ज़ेल में बैतुल मक़दस में महेदी अले० के मबऊस होने की हदीस का मौज़ूअ (निर्मित) होना साबित होचुका है क्योंकि उस हदीस में *इमामुहुम रजुलुन् सालेहुन* (उनका इमाम एक मर्दे सालेह) के अलफ़ाज़ हैं और बाद के मुहद्दिसीन ने *इमामुहुम* मुत्लक़ (सामान्य)लफ़्ज़ के बाद ग़लत और बेउसूल लफ़्ज़ अलमहेदी का इज़ाफ़ा करदिया है जिस से असल इबारत यूँ होजाती है *इमामुहुम अलमहेदी रजुलुन् सालेहुन।* यह इज़ाफ़ा इस वजह से क़ाबिले तस्लीम नहीं कि मुत्लक़ को मुक़ैयद करदेने से मुत्लक़ का इब्ताल (खंडन) लाज़िम आजाता है जैसा कि उसका ज़ाबिता यह है ''मुत्लक़ हुक्म अपने इत्लाक़ पर जारी रहेगा अगर मुत्लक़ को मुक़ैयद पर महमूल किया जाये तो मुत्लक़ का इब्ताल लाज़िम आयेगा।'' (तौज़ीहुल फ़हवा)।

३८. हदीसे क़तादा रज़ी० की बहेस

इस लिये हदीसे मज़्कूर में मुत्लक़ इमाम के लफ़्ज़ से इमाम महेदी अले० मुराद नहीं। एक और हदीस जिसको नईम बिन हम्माद ने हज़रत क़तादा रज़ी०

से रिवायत की है उसका मतन यह है।

يخرج المهدى من المدينه الى مكة فيستخرجه الناس من بينهم فيبا يعونه بين الركن و المقام وهو كاره .

अनुवाद : महेदी मदीना से मक्का की तरफ़ निकलेंगे लोग उनको मजमा में से निकालेंगे (यानि पहचान लेंगे) रुकन और मक़ाम के दरमियान बैअत करेंगे हालांकि वह उसको पसंद नहीं करेंगे।

अकसर लोग इसी हदीस से इस धोके में मुब्तला हैं कि महेदी अले० मदीनतुर् रसूल से मक्का की तरफ़ निकलेंगे।

असल बात यह है कि इस हदीस में ''मदीना'' से ''मदीनतुर् रसूल'' मुराद नहीं है क्योंकि मदीना का लफ़्ज़ मुत्लक़ है, हर शहर को मदीना कहा जाता है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में आया है।

१) وقال نسوة فى المدينةامرأة العزيز ترا ودفتها عن نفسه (سوره يوسف)

(औरतौं की एक जमाअत कहती थी कि मदीना में अज़ीज़ की बीवी (ज़ुलेख़ा) अपने जवान को अपनी तरफ़ मायल करना चाहती है। इस आयत में ''अल मदीना'' से मुराद शहरे मिसर है।

२) جاء اهل المدينة يستبشرون . (سوره الحجر)

(अहले शहर ख़ुशयाँ मनाते हुवे आये) (१५:६७)

इस आयत में मदीना से मुराद शहेर ''सिदूम'' है।

३) فابعثو ااحد كم بور قكم هذه الى المدينة (سوره الكهف آيت١٩)

(अपने में किसी एक को अपना यह रुपिया देकर शहर को भेजो)

इस आयत में मदीना से मुराद ''दक़ीनूस'' का शहर है जिसको ''तर्तूस'' कहते हैं (इस शहर में मुल्के शाम की दूसरी बड़ी बन्दरगाह है जो बहरे रोम के मश्रिक़ी साहिल पर वाक़े है)

४) وکان فی المدینة تسعة رهط یفسدون فی الارض. (سورہ النمل آیت ۴۸)

(शहर में नौ जमाअतें ऐसी थीं जो ज़मीन में फ़साद बर्पा करती थीं और इस्लाह के दरपै नहीं थीं)

इस आयत में मदीना से मुराद शहरे समूद है जिसका नाम ''अल हज्र'' था। (यहाँ सालेह अले० और उनकी क़ौम रहती थी)।

हदीसे अबूद दरदा रज़ी० में यह अल्फ़ाज़ आये हैं।

اتاه رجل فقال یا ابا الدرد اء مدینة الرسول الخ ۔

(अबूद दरदा के पास एक शख़्स आया और कहा कि मैं आपके पास मदीनतुर रसूल से आया हूँ)

इस हदीस से ज़ाहिर है कि मदीना का लफ़्ज़ आम है जिस से हर शहर मुराद हो सकता है। कहीं अबूद दरदा रज़ी० आम शहरों में से कोइ शहर न समझ लें इस लिये आने वाले शख़्स ने मदीनतुर रसूल की सराहत करदी।

अगर हज़रत क़तादा रज़ी० की रिवायत में मदीना से मुराद मदीनतुर रसूल है तो उसपर अलिफ़ लाम की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह ख़ुद माअरेफ़ा (विशेष नाम) है। जब मदीना पर अलिफ़ लाम आया है तो वह मुअर्रफ़ बिल्लाम होजायेगा जो किसी ख़ास शहर के माने देगा वर्ना ख़ुद मदीना नकेरा (इस्मे आम) है।

मदीनतुर रसूल या मदीनतुन् नबी के अलफ़ाज़ मुरक्कबे इज़ाफ़ी होना ख़ुद इस बात की दलील है कि आम (सामान्य) को ख़ास (विशेष) किया गया है। लुग़ात की किताबों (शब्दकोश) में भी मदीना का लफ़्ज़ आम शहर के माने देता है, चुनांचे *मुन्तही अल अदब* में लिखा है मदीना जैसे सफ़ीना शहर और क़िला।

जब यह मुसल्लमा (प्रमाणित) है कि ''अलमदीना'' से कोइ ख़ास शहर मुराद लिया जासकता है तो हम कहते हैं कि हदीसे क़तादा रज़ी० में ''अल मदीना'' से मुराद शहर जोनपूर क्यों न हो जहाँ से इमामुना अले० मुख़्तलिफ़

मुक़ामात पर हिज्रत करते हुवे डाबोल बंदर (समुद्रतट) पहुंचे (यह वह डाबोल नहीं है जिसको सिंध की अरबी तवारीख़ में दाबुल या दैबुल लिखते हैं जहाँ आज कल बंदर कराची मश्हूर है)। फिर यहाँ से जहाज़ के ज़रीये आप मक्का मुअज़्ज़मा तश्रीफ़ लेगये। शहर जोनपूर की बहेस आगे आयेगी और इंशा अल्लाहू तआला क़तई तौर पर साबित होजायेगा कि रसूलुल्लाह सल्ला० की गवाही से शहर जोनपूर ही आपका मोलिदे मुबारक (जन्मस्थान) है।

अगर अहादीस में महेदी अले० के जन्मस्थान के मुख़्तलिफ़ मक़ामात बताये गये हैं मसलन् बैतुल मक़दस, मदीना, जोनपूर तो ग़ौर तलब अम्र यह है कि एक शख़्स एक वक़्त में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर कैसे पैदा होगा, इस लिये क़ौले फ़ैसल (निर्णीत वचन) यह है कि महेदी अले० जहाँ भी पैदा होंगे वही मक़ाम सहीह होगा बाकी दूसरे मक़ामात ग़ैर सहीह होंगे।

३९. सोबान रज़ी० की हदीस से हिन्द में लड़ने वाली जमाअत कौनसी है।

अब तक आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* से मक़ाम फ़राह महेदी अले० का मदफ़न (समाधि क्षेत्र) और हदीस सोबान से फ़राह के अलावा हिन्दुस्तान मक़ाम विलादत गाह साबित होचुका है, अब हिन्द में पैदा होने की ताईद में एक और हदीस पेश की जाती है जो *नसाइ* में सोबान रज़ी० ही से मर्वी है

عن ثوبان مولى رسول اللهؐ قال قال رسول الله صلعم عصابتان من امتى
احرزهما الله من النار عصابة تغزو الهند و عصابة مع عيسى عليه السلام

(सोबान रज़ी० जो रसूलुल्लाह सल्ला० के आज़ाद ग़ुलाम थे रिवायत करते हैं हि फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्ला० ने मेरी उम्मत में दो गुरोह हैं जिन्हें अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग से बचा दिया, एक गुरोह हिन्दुस्तान में लड़ेगा और दूसरा ईसा अले० के साथ होगा।

इस हदीस में दो जमाअतों का ज़िकर आया है, एक वह जो हिन्द में लड़ेगी दूसरी वह जो ईसा अले० को साथ होगी। पहली हिन्द की जमाअत किस की होगी उसकी सराहत नहीं है, दूसरी जमाअत मामूर मिनल्लाह ईसा अले० की है। पहली

जमाअत जो दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहने वाली है ग़ैर मामूर मिनल्लाह की कैसी हो सकती है? इस लिये साबित हुआ कि पहली जमाअत ज़रूर महेदी अले० की जमाअत है क्योंकि दोज़ख़ से बचना हलाकत से बचना है और महेदी अले० का दाफ़ेअ हलाकते उम्मते मुहम्मदिया होना एक ही मफ़हूम (अर्थ) रखता है जैसा कि हदीस كيف تهلك امة انا في اولها وعيسىٰ في آخرها والمهدى من اهل بيتي في وسطها

(यानि वह उम्मत कैसे हलाक होगी जिसके अव्वल मैं हूँ और ईसा अले० उसके आख़िर में और महेदी मेरे अहले बैत से उसके वस्त में हैं) से ज़ाहिर है।

उस हदीस में ''एक गुरोह हिन्द में लड़ेगा'' के अलफ़ाज़ ज़ाहिर करते हैं कि हिन्द में लड़ने वाली जमाअत महेदी अले० की जमाअत ही है जो गुजरात के शासक मुज़फ़्फ़र से मुक़ाबला की है जिसके सरदार इमामुना अले० के सहाबी हज़रत सय्यदुना सैयद ख़ुंदमीर रज़ी० थे जैसा कि इस से पहले आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन* की तफ़सीर और उसी आयत में सिफ़ाते क़ौम के तहत उसका ज़िकर आचुका है।

४०. हदीस कोआ से काहा का मक़ाम मुराद है।

रिसाला *अल बुर्हान फ़ी अलामातिल महेदी* में एक हदीस आइ है जो अबू बक्र बिन अलमुक़री से मर्वी है। यह हदीस मुर्सल की हैसियत रखती है जो क़ाबिले हुज्जत नहीं है लेकिन इमाम अले० पर सादिक़ आने से क़ाबिले हुज्जत हो जाती है। اخرج ابو نعيم عن ابى بكر المقرى يخرج المهدى من قرية يقال لها الكوعة

अनुवाद : अबू नुएम ने अबू बक्र मुक़री से तख़रीज की है कि महेदी ऐसे क़रये या गांव से निकलेंगे जिसको ''कोआ'' कहा जाता है।

लफ़्ज़ ''अल कोआ'' लुग़ात में नहीं मिलता। क़ियास यह चाहता है कि यह ''काहा'' में दो हाए हव्वज़् हैं उनको मुशद्दद नहीं किया गया बल्कि हाए अव्वल को क़रीबुल मख़्रज हर्फ़ 'एन' से बदल दिया गया ताकि सक़ालत (भारीपन) न पैदा हो ''कोआ'' होगया। एक ज़बान का लफ़्ज़ दूसरी ज़बान में क़द्रे फ़र्क़ के साथ इस्तिमाल किया जा सकता है ''काहा'' का ''कोआ'' होना बईद अज़ इम्कान (असंभव) नहीं है।

इमामुना अले० की हिज्रत के मक़ामात में ''काहा'' का मक़ाम भी आया है इस लिहाज़ से हदीस ''कोआ'' भी आप पर सादिक़ आती है।

४१. हारिस हर्रास से मुराद क्या है?

एक और हदीसे मर्फ़ूअ के अलफ़ाज़ हस्बे ज़ेल हैं जो अबू दाऊद में आइ है।

عن علی قال قال رسول الله صلعم یخرج رجل من وراء النهر یقال له الحارث حراث علی مقدمته رجل یقال له منصور یوطن اویمکن لال محمد کما مکنت قریش الرسول الله صلعم و جب علی کل مومن نصره اوقال اجابته

अनुवाद : हज़रत अली रज़ी० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि एक शख़्स उन शहरों से जो नहेर के पीछे हैं ज़ाहिर होगा। उसका नाम हारिस हर्रास होगा उसकी फ़ौज के अगले हिस्से पर एक शख़्स होगा जिसका नाम मन्सूर होगा। यह हारिस मुहम्मद सल्ला० की औलाद को जगह या ठिकाना देगा जिस तरह क़ुरेश ने मुहम्मद सल्ला० को ठिकाना दिया था। हर मुसलमान पर उस शख़्स की मदद् या क़ुबूलियत वाजिब है।

इस हदीस को पेश करके लोग पूछते हैं कि इमामुना अले० का नाम हारिस हर्शस कहाँ था, आपके पास फ़ौज कहाँ थी जिस के अगले हिस्से पर मन्सूर नामी कोइ शख़्स मौजूद हो और आप कौनसी नहेर के पीछ निकले।

उसका जवाब यह है कि यह हदीस अहादीसे महेदी अले० में शामिल करदी गइ है हालांक उसको महेदी अले० से कोइ तअल्लुक़ नहीं। अकसर अहादीस से जो तवातुर की हद को पहुंच गइ हैं आपका नाम रसूलुल्लाह सल्ला० का नाम और आपके बाप का नाम रसूलुल्लाह सल्ला० के बाप के नाम के मुवाफ़िक् होना साबित होता है। किसी और हदीसे सहीह में आपका नाम हारिस हर्रास होना नहीं बताया गया और न अहले बैत में किसी का नाम हारिस हर्रास था। इसी तरह न आपकी फ़ौज का ज़िकर है न फ़ौजी सरदार का नाम मन्सूर बताया गया है। नहेर का लफ़्ज़ भी आम है जिस से किसी ख़ास नहेर का पता नहीं चलता। उस में सिफ़ाते

महेदी भी बयान नहीं किये गये हैं ता कि महेदी अले० से उस हदीस का तअल्लुक़ साबित हो।

बहर हाल यह हदीस किसी ऐसे शख़्स की पेशीनगोइ ज़ाहिर करती है जिसका नाम हारिस हर्रास और फ़ौज के सरदार का नाम मन्सूर हो। इस हदीस को अलामाते इमामुना अले० से कोइ तअल्लुक़ नहीं इस लिये हमारे मौज़ूए बहस से ग़ैर मुतअल्लक़ है।

इसके बावजूद अगर गहरी नज़र से देखा जाये तो मालूम होगा कि यह हदीस भी इमामुना अले० पर सादिक़ आसकती है क्योंकि लुग़त (शब्दकोश) में हारिस के माना काश्तकार (किसान) के अलावा शेर के भी आये है। इमामुना अले० को उलमाए जोनपूर ने बिलइत्तिफ़ाक् ''असदुल उलमा'' तस्लीम किया था, उस सूरत में उलमा बमन्ज़िला शेरौं (सिंह) के हैं तो आप शेरौं के शेर हुवे लिहाज़ा हारिस हर्रास के अलफ़ाज़ भी आप पर सादिक़ आसकते हैं और ''फ़ौज के अगले हिस्से'' से मुराद इमामुना अले० की जमाअत का एक हिस्सा हो सकता है जिसके सरदार हज़रत शाह ख़ुदंमीर रज़ी० थे। आप गुजरात के शासक मुज़फ़्फ़र के मुक़ाबले में मन्सूर और कामयाब साबित हुवे हैं। ''वराए नहेर'' के लफ़्ज़ी माने नहेर की जानिब के भी आये हैं। अगर नहेर से मुराद दरयाए जेहून लिया जाये जो शहर वराउन् नहेर का दर्या है तो यह भी सहीह है क्योंकि इमामुना अले० ठट्ठा, काहा, क़ंधार से हिज्रत करते हुवे फ़राह पहुंचे हैं और यह इलाक़ाजात दर्याए जेहून के जुनूब में वाक़े हैं, इस लिये हर मुसलमान पर आप की मदद् और क़ुबूलियत जिस से मुराद तस्दीक़ है वाजिब साबित होती है।

४२. हदीस 'करीमत' से इमाम अले० के शहर जोनपूर में पैदा होने का सुबूत

हज़रते सोब्मन रज़ी० की दो हदीसौं से इमामुना अले० का हिंद में पैदा होना साबित होचुका लेकिन अब ग़ौर तलब अम्र यह भी है कि हिन्दूस्तान के इतने बड़े रक़बे (क्षेत्र) में जहाँ बेशुमार शहर हैं आप कहाँ पैदा होंगे। इमामुना अले० के शहर जोनपूर में पैदा होने का ज़िकर अहादीस में नहीं मिल सकता क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ला० की हयाते तय्यबा में शहर जोनपूर का वुजूद ही नहीं था,

लगभग ७५० साल बाद यह शहर वुजूद में आया है। उसको फ़ेरोज़ तुग़लक़ बादशाहे देहली ने जो मुहम्मद तुग़लक़ का भतीजा और जानशीन था मुहम्मद तुग़लक़ की यादगार में आबाद किया जिसका असल नाम जूना खाँ था। यह वाक़ेआ ७५२ हिज्री/१३५१ ईसवी का है। अलबत्ता शहर जोनपूर जिस मक़ाम पर आबाद हुवा है वहाँ एक छोटा सा क़र्या या गाँव था जिसका क़दीम नाम ''किरीमथ'' था। *भारत का प्राचीन इतिहास* जो हिन्दी भाषा में है उस से साबित है कि गुरू धुरोना चार्या के निसबती भाइ कृपा चार्य पाण्डवों के लश्कर के सरदार या सेनापति थे उन्हों ने यहाँ अपने लश्कर का पड़ाव डाला था जिसकी वज्ह से उस मक़ाम का नाम ''क्रीमथ'' मश्हूर होगया। जुग़राफ़ियाइ नक़शे (भूगोल मान चित्र) के ज़रीये क्रीमथ का महले वुक़ूअ (स्थान) ठीक वही ज़ाहिर हुवा जहाँ अब जोनपूर आबाद है। यह तारीख़ मुझे मेरे एक हिन्दू दोस्त श्री प्रहलाद शर्मा ने दिखलाइ और अपने क़लम से इबारत नोट करके दी। इत्तेफ़ाक़ से जनाब हयात ख़ाँ साहब अध्यापक शारीरिक व्यायाम मद्रसए आलिया हैदराबाद भी मेरे साथ थे। शर्मा साहब के पिता श्री गंगादीन सूबेदार जनाब मौसूफ़ के दोस्त निकले, घर का पता लगाने और नोट हासिल करने में मौसूफ़ से बड़ी मदद मिली जिसका शुक्रिया अदा किया जाता है। उस किताब के सफ़्ह (९३) पर जो इबारत लिखी हुवी है हस्बे ज़ेल है

''भारत का प्राचीन इतिहास श्री कृपाचार्य जी अपनी सैन्य सहित कृमिथ नगर में ठहरे। कृमिथ वासियों ने आपका साथ देने का विचार प्रकट किया। प्रन्तु पाण्डवों के प्रति श्रध्दा सब के मन में थी।''

इस इबारत (लेख) से ज़ाहिर है कि कृपाचार्य 'कृमिथ' की आबादकारी के बाद यहीं रहना चाहते थे और वहाँ के लोग भी उनका साथ देरहे थे मगर वह उस मक़ाम पर क़ियाम नकरसके क्योंकि पाण्डवों के जज़्बए मुहब्बत ने उनको हस्तिनापूर देहली के क़रीब वापस जाने पर मज्बूर किया।

अब हम अहादीस में 'कृमत' के नाम की तलाश करते हैं तो किताब ''*अल उरूफ़ुल वरदी फ़ी अख़बारिल महेदी*'' मुअल्लिफ़ा जलालुद्दीन सुयूती जो कुतुब

ख़ाना आसफ़िया हैदराबाद (तेलंगाना) के क़ल्मी फ़ेहरिस्त में (३१९) पर शरीक है एक हदीस मिलती है जिसके अलफ़ाज़ हैं

قال ابو نعيم و ابوبكر بن المقرى فى معجم عن ابن عمر قال النبى صلعم يخرج المهدى من قرية يقال لها كريمة

अनुवाद : अबू नुएम कहते हैं और अबू बक्र बिन अलमुक़री अपनी किताब *मोजम* में रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया महेदी ऐसे क़र्ये या गाँव से निकलेंगे जिसको 'कृिमथ कहा जाता है।

इस हदीस में सराहत के साथ साबित है कि महेदी अले० 'कृिमथ' में पैदा होंगे और कृिमथ का महले वुक़ूअ और जोनपूर का महले वुक़ूअ जुग़राफ़ियाइ नक़शे के लिहाज़ से एक ही है इसलिये यह हदीस इमामुना अले० पर सादिक़ है। *आमन्ना व सद्दक़ना*

४३. हदीसे हुज़ैक़ा रज़ी० से ९०१ हिज्री मे इमामुना अले० के दाअवए मुअक्कद का सुबूत

अब एक और हदीस से जो हुज़ैफ़ा रज़ी० से मर्वी है साबित होता है कि इमाम अले० का ९०१ हिज्री में महेदियत का दाअवए मुहक्कद फ़र्माना भी क़तई और यक़ीनी है। उस हदीस के अलफ़ाज़ दर्जे ज़ेल हैं।

عن حذيفةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم تكون النبوة فيكم ماشا الله ان تكون ثم يرفعها الله تعالىٰ ثم تكون خلافة علىٰ منهاج النبوة ماشاء الله ان تكون ثم يرفعها الله تعالىٰ ثم تكون ملكا عاضا فتكون ماشاء الله ان تكون ثم يرفعها الله تعالىٰ ثم تكون ملكاجبرية فيكون ماشاء الله ان يكون ثم يرفعها الله تعالىٰ ثم تكون خلافة على منهاج النبوة ثم سكت رواه احمد و البيهقى فى دلايل النبوه

अनुवाद : हुज़ैफ़ा रज़ी० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि जब तक अल्लाह तआला चाहे तुम में नबूवत रहेगी फिर अल्लाह तआला

उसको उठादेगा फिर जब तक अल्लाह चाहे ख़िलाफ़त नबूनत के उसूल पर रहेगी फिर अल्लाह तआला उसको भी उठादेगा फिर अल्लाह तआला जब तक चाहे काट खाने वाली बादशाहत रहेगी फिर अल्लाह तआला उसको भी उठादेका फिर जब तक अल्लाह तआला चाहे जब्री (अत्याचारी) बादशाहत रहेगी फिर उसको भी अल्लाह तआला उठादेगा फिर ख़िलाफ़त नबूवत के उसूल पर रहेगी। उसके बाद आप ख़ामूश होगये। इस हदीस को अहमद ने और बेहक़ी ने *दलायलुन् नबूवत* में बयान किया है।

इस हदीस में हस्बे ज़ेल बातें ग़ौर के क़ाबिल हैं

(१) रसूलुल्लाह सल्ला० की नबूवत के बाद वह ख़िलाफ़त जो नबूवत के उसूल पर होगी।

(२) नबूवत के उसूल पर ख़िलाफ़त के बाद काट खाने वाली बादशाहत।

(३) काट खाने वाली बादशाहत के बाद जब्र और तशद्दुद (अत्याचार) की बादशाहत।

(४) जब्र और तशद्दुद की बादशाहत के बाद वह ख़िलाफ़त जो नबूवत के उसूल पर होगी।

हर एक की तफ़सील पढ़ने वालों की दिलचसपी के लिये लिखदी जाती है।

(१) रसूलुल्लाह सल्ला० की नबूवत के बाद नबूवत के उसूल (नियम) पर ख़िलाफ़त से मुराद ख़िलाफ़ते राशिदा है और उस ख़िलाफ़त के ख़ुलफ़ा जुम्ला पाँच हैं। पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० जिनकी मुद्दते ख़िलाफ़त २ साल ६ महीने ४ दिन रही। दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी० जिनकी मुद्दते ख़िलाफ़त १० साल ६ महीने ४ दिन है। तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमाने ग़नी रज़ी० जिनकी मुद्दते ख़िलाफ़त ११ साल ११ माह १३ दिन है। चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली अलमुर्तुज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहु

हैं जिनकी मुद्दते ख़िलाफ़त ४ साल ९ माह ८ दिन है। पाँचवे ख़लीफ़ा हज़रत हसन रज़ी० जिनकी मुद्दते ख़िलाफ़त ६ माह से कम है। आप ने हालाते हाज़िरा से मजबूर होकर ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी इख़्तियार की और एक अहद नामा की रू से ख़िलाफ़त हज़रत मुअविया रज़ी० के हवाले करदी। हज़रत हसन रज़ी० तक सब ख़ुलफ़ाए राशिदीन कहलाते हैं (कोहलुल जवाहर जिल्द दुव्वम)।

(२) ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त के बाद जो नबूवत के उसूल पर थी काट खाने वाली बादशाहत से मुराद बनू उमय्या की हुकूमत है जैसा कि इर्शादे नबवी है ''ख़िलाफ़ते राशिदा मेरे बाद तीस साल रहेगी फिर उसके बाद काट खाने वाली बादसाहत होगी। उसकी वज्ह यह है कि बनी उमय्या की हुकूमत में जितने बादशाह गुज़रे हैं उनमें क़ाबिले ज़िकर यह हैं - हज़रत मुआविया रज़ी०, यज़ीद बिन मुआविया, मुआविया बिन यज़ीद, मर्वान, अब्दुल मलिक, वलीद, सुलेमान, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, यज़ीद बिन अब्दुल मलिक, हिशाम वग़ैरा हैं। आख़री बादशाह मर्वान हम्मार है। इन सब के मिन् जुम्ला हज़रत मुआविया और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफ़ा के नाम से मौसूम हैं बाक़ी बादशाह या उमरा हैं।

तरीख़ गवाह है कि बनू उमय्या के दौरे हुकूमत में ख़ुद हज़रत मुआविया की ज़िन्दगी में यज़ीद ने हज़रत हसन इब्ने अली रज़ी० को ज़हर दिलवादिया और यज़ीद के ज़माने में हज़रत हुसेन रज़ी० अपने रिश्तेदारों के साथ शहीद हुवे। यज़ीद ने उमवियों की एक फ़ौज भेजकर जो मुस्लिम बिन उक़बा की मातहती में थी अहले मदीना पर हमला कराया और उस लड़ाइ में बड़े बड़े असहाब शहीद हो गये। अब्दुल मलिक के ज़माने में मुहम्मद बिन हनीफ़ा और अब्दल्लाह बिन ज़ुबेर शहीद होगये। हिश्शाम ने हज़रत ज़ैद बिन हसन रज़ी० को सरे दरबार शहीद किया फिर नाश सूली पर लगाइ फिर जलाकर राख दरयाए फ़रात में फिकंवादी। हज़रत ज़ैद के फ़र्ज़न्द याहया का क़त्ल हुवा। बहर हाल इस हुकूमत को हस्बे फ़र्माने नबवी ''काट खाने वाली हुकूमत'' कहना बिलकुल मुनासिब है।

(३) काट खाने वाली हुकूमत के बाद जब्री बादशाहत का ज़िकर आय है। चूंकि बनू उमय्या के बाद सिवाय बनी अब्बास की हुकूमत के कोइ और हुकूमत नहीं है इस लिये उस से मुराद ख़िलाफ़ते अब्बासिया है जिसका पहला ख़लीफ़ा अबू अब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह, दूसरा अबू जाफ़र मन्सूर, तीसरा महेदी अब्बासी, चौथा हारून रशीद फिर उसके दो बेटे अमीन और मामून फिर मोतसिम, वासिक़ मुतवक्किल वग़ैरा हैं जिनकी जुम्ला तेदाद (३७) होती है। आख़री ख़लीफ़ा मुस्ताअसिम बिल्लाह था जिसको हलाकू खाँ ने हलाक करके ख़िलाफ़ते अब्बसिया का ख़ातमा करडाला। इस ख़िलाफ़त को जब्रो तशद्दुद की बादशाहत कहने की वज्ह यह हो सकती है कि उस हुकूमत में ख़िलाफ़ते अब्बासिया का बानी अबू अब्दुल्लाह सफ़्फ़ह एक ऐसा ख़लीफ़ा गुज़रा है जिसने अपने बड़े भाइ इब्राहीम इमाम के बेगुनाह क़त्ल किये जाने पर सख़्त इन्तेक़ाम की क़सम खाइ थी चुनांचे वह ख़लीफ़ा बनते ही उमवियों का हर फ़र्द जहाँ मिलता बेदरदी के साथ क़त्ल करता था। अब्दुल्लाह बिन अली सफ़्फ़ाह के चचा ने तो माफ़ी का वादा देकर बहुत से उमवियों को इकट्ठा किया और सबको बेदरेग़ क़त्ल करदिया। सफ़्फ़ाह के मज़ालिम की वज्ह से बनू उमय्या उसके ऐसे दुश्मन होगये की उसका मद्फ़न मख़फ़ी (गुप्त) रखा गया ताकि उमवी क़बर खोद कर उस नाश के साथ बद सुलूकी न करें।

मुतवक्किल शराबी और बदमस्त था। एक फ़र्मान की रु से मोतज़लियौं को ओहदौं से बर्तरफ़ करदिया। क़ाज़ी अबू दाऊद मोतज़ली और उसका बेटा क़ैद में डाले गये और उनकी जायदाद ज़ब्त करली गयी। उस ने ग़ैर मुस्लिमौं के साथ भी तअस्सुब से काम लिया। उसको आले रसूल सल्ला० से सख़्त नफ़रत थी, हज़रत हुसेन रज़ी० का मज़ार ज़मीन के बराबर करके पानी की नहेर बहा दिया। मज़ार की जगह ज़ियारत करने वालौं को सख़्त सज़ा मुक़र्रर की। इब्ने ज़ैयात वज़ीर वासिक़ को सिर्फ़ इतने क़ुसूर पर क़त्ल कर दिया कि उसने एक दफ़ा ख़लीफ़ा की पूरी ताज़ीम नहीं की। ख़ुद इब्ने ज़ैयात वह शख़्स है जिसने लोगौं को क़त्ल करने के लिये शिकंजा ईजाद किया आख़िर में वह ख़ुद क़त्ल हो गया। मुतवक्किल को उसके बेटे मुन्तसिर ने साज़िशियौं के ज़रीए क़त्ल करा दिया जो उसके मज़ालिम को नापसंद रखता था।

ख़िलाफ़ते अब्बासिया का इब्तदाइ ज़माना महेदी अब्बासी, हारून रशीद, और मामून तक निहायत अच्छा गुज़रा, बाक़ी सब मुत्लक़ुल इनान (निरंकुश) ख़ुदराय जो चाहते थे करजाते थे। मामून के बाद मोतसिम ने सब से बड़ी ग़लती यह की कि उसने तुरकौं और अज्नबियौं को फ़ौज में शरीक किया। यही तुर्क आगे चलकर तेदाद में भी ज़ियादा होगये और उनका इक़्तिदार इतना बढ़ गया कि ख़ुलफ़ाए अब्बासिया बरायेनाम कठपुत्ली की तरह उनके हाथौं में आगये वह जिसको चाहते ते ख़िलाफ़त से हटाकर दूसरे को ख़लीफ़ा बनादेते थे। बादशाहाने सलजोक़ का ज़ोर बुहत बढ़गया और इतने आज़ाद थे कि उनके किये हुए कामौं पर पूछने वाला कोइ न था। ख़लीफ़ा मुस्तासिम को जो अब्बासिया का आख़री ख़लीफ़ा था जिसको हलाकू खाँ ने ६५६हिज्री/१२५८ ईसवी में हलाक करके ख़िलाफ़ते अब्बासिया का ख़ातमा करदिया उसको अपनी दौलत और जवाहरात पर ऐसा घुमंड था कि अत्राफ़ के बादशाहौं से मुलाक़ात तक नहीं करता था जैसा कि इस से पहले हजरे असवद को बोसा देकर चले जाने का वाक़ेआ लिखा जाचुका है।

(४) हदीस ज़ेरे बहस में जब्रो तशद्दुद की बादशाहत के बाद नबूवत के उसूल पर ख़िलाफ़त का ज़िकर आता है। *लमआत* के मुअल्लिफ़ ने ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन् नबूवत के तहत यह अलफ़ाज़ लिखे हैं कि नबूवत के उसूल पर ख़िलाफ़त से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि इस से मुराद हज़रत ईसा अले० और महेदी अले० की ख़िलाफ़त है। इस से पहले इज्तिमाए हज़रत ईसा व महेदी की बहस में साबित हो चुका है कि हर दो का एक ही ज़माने में जमा होवा नामुम्किन है और जब्रो तशद्दुद की बादशाहत यानि ख़िलाफ़ते अब्बासिया के ख़ातिमे से अब तक नुज़ूले ईसा अले० का वाक़ेआ भी पेश नहीं आया इस लिये ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन् नबूवत से मुराद सिर्फ़ महेदी अले० की ख़िलाफ़त हो सकती है दूसरी नहीं।

इस से पहले आयत *फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन्* और हदीसे सोबान रज़ी० में *वलौ हबवन् अलस् सल्ज* से साबित होचुका है कि इमामुना अले० ६५६ हिज्री में ख़िलाफ़ते अब्बासिया के ख़ातिमे से (१९१) साल के बाद ८४७ हिज्री में

पैदा हुवे हैं इस लिये हदीसे हुज़ैफ़ा रज़ी० भी इमाम अले० पर सादिक़ आती (सच साबित होती) है और आप उसके पूरे तौर पर मिस्दाक़ है।

तारीख़े इस्लाम अमीर अली से ज़ाहिर होता है कि उमविया ख़ानदान के जो अफ़राद सफ़्फ़ाह की कीना कश तलवार से बच रहे उनमें हिशाम का पोता अब्दुर रहमान भी था जो मराकश आया फिर हस्पानिया पहुंचा और 'सारा' के मक़ाम पर हाकिमे हस्पानिया से जंग करके उसको शिकिस्त देदी और हस्पानिया का शासक बन बैठा। सब लोग उसके झंडे के नीचे जमा होगये। उसके सिलसिले में अब्दुर रहमान दुव्वम, सुव्वम और चहारुम कइ शासक हुए, अबुल हसन उनका आख़री ताजदार है जो सल्तनत से दस्तबर्दार हो गया। अबुल हसन के बाद कुछ लोग हुकूमत करते रहे।

३ जन्वरी १४९२ ईसवी को ग़र्नाता अहले कयास्टल के हवाले किया गया। बड़ी नामुबारक थी वह घड़ी जिस में ग़र्नाता पर हिलाल की जगह सलीब का पर्चम लहराने लगा। उस से जज़ीरा नुमाए हस्पानिया और पुर्तुगाल की तरक़्क़ी और तहज़ीब का महताब हमेशा के लिये चाहे गुमनामी में डूब गया यह वाक़ेआ १४९२ ईसवी/८९७ हिज्री का है।

हिशाम के पोते अब्दुर रहमान और उसके जानशीन सब के सब बनू उमय्या के ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते थे और हस्पानिया में इब्तदा बल्कि एक मुद्दत तक ख़ुत्बे में ख़ुलफ़ाए अब्बासिया का नाम लिया जाता था इसलिये इस्पेन की हुकूमत को ''काट खाने वाली हुकूमत'' का ज़मीमा (परिशेषिका) समझना चाहिये या ''जब्रो तशद्दुत की बादशाहत'' का। उसका सुक़ूत (क़ब्ज़े से निकल जाना) ८९७ हिज्री में होगया उसके तीन साल बाद ९०१ हिज्री में इमामुना अले० ने मक्का मुअज़्ज़मा में रुकन और मक़ाम के दरमियान हदिसे हुज़ैफ़ा रज़ी० के बमूजिब ख़िलाफ़ते इलाहिया का पहला दाअवए मुअक्कद फ़र्माया। इस तरह भी हदीसे हुज़ैफ़ा रज़ी० आप पर सादिक़ आती है और आप उसके मिस्दाक़ (प्रमाण) हैं।

यह बात ज़ाहिर है कि इब्तदाए हदीस में ''नबूवत के उसूल पर ख़िलाफ़त'' का जो ज़िकर आया है उस से मुराद ख़िलाफ़ते राशीदा होना साबित होचुका है।

काट खाने वाली बादशाहत और जब्रो तशद्दुद की बादशाहत के बाद जिस ''नबूवत के उसूल पर ख़िलाफ़त'' का ज़िकर आया है उस से मुराद ख़िलाफ़ते राशिदा असहाबे रसूलुल्लाह सल्ला० नहीं बल्कि ख़िलाफ़ते इलाहिया मुराद है क्योंकि महेदी अले० हदीसे सोबान रज़ी० और इब्ने उमर रज़ी० के बमूजिब ख़लीफ़तुल्लाह साबित होचुके हैं।

४४. हज़रत अली रज़ी० के क़सीदे की बहेस

अब यहाँ से हज़रत अली अलमुर्तुज़ा रज़ी० का वह क़सीदा (प्रशंसा गीत) भी ख़ाली अज़ दिलचस्पी नहोगा जिस में महेदी अले० के ज़मानए बेसत की पेशीनगोइ (भविष्यवाणी) की गयी है और वह हदीसे हुज़ैफ़ा रज़ी० की लफ़्ज़ बलफ़्ज़ ताईद करती है।

(۱) بنی اذا ماجاشت الرّدی فانتظر ولا یة مهدی یقوم فیعدل

अनुवाद : ऐ मेरे बच्चो जब तुर्क इम्ला करके जोश में आजायें तो महेदी अले० की विलायत का इन्तेज़ार करो वह क़ायम होकर अदल यानि हिदायत करेंगे।

इस शेर (काव्य) में तुर्क से मुराद हलाकू और उसकी फ़ौज है जिसका ज़िकर हदीसे सोबान रज़ी० के तहत ज़वाले बग़दाद और आख़री ख़लीफ़ा अब्बासिया मुस्तासिम के क़त्ल की तफ़सीलात के साथ बयान किया गया। विलायते महेदी अले० से इस तरफ़ इशारा है कि आप नबी नहीं बल्कि ख़ातिमुल औलिया होंगे क्योंकि हदीस *ला नबी बाअदी* यानि मेरे बाद कोइ नबी नहीं और आयत ماکان محمد ابا احد من رجالکم ولکن رسول الله و خاتم النبین (الاحزاب۴۰) (यानि मुहम्मद सल्ला० तुम्हारे मरदों में से किसी के बाप नहीं थे लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबीयों के ख़ातिम हैं) से साबित है कि नबूवत ख़त्म होगयी। अदल से उस तरफ़ इशारा है कि आप हदीस ''ज़मीन को अदल व इन्साफ़ से भर देंगे''। अदल व इन्साफ़ हिदायत और ईमान का इस्तिआरा (रूपक) है।

(۲) و ذل ملوک الارض من آل هاشم و بویع منهم من یلذ و یهزل

(۳) صبی من الصبیان لارای عنده ولا عنده جدولا هو یعقل

अनुवाद : (उस वक़्त) आले हाशिम के (ज़ालिम) बादशाह ज़लील होजायेंगे और उनमें से किसी ऐसे शख़्स से जो लज़्ज़त और हज़्ल (हंसी मज़ाक़) में मुब्तला होगा बैअत की जायेगी यानि वह एक लड़का होगा न कोइ उसकी राये होगी और न अक़्ल।

आले हाशिम के ज़लील बादशाह से मुराद आख़री दौर के ख़ुलफ़ाए अब्बासिया हैं जो अपने जाह व जलाल के आगे किसी को कुछ नहीं समझते थे, बड़े मालदार और महलों में ऐशो इश्रत की ज़िंदगी बसर करते थे जैसा कि इस से पहले ख़लीफ़ा मुस्तासिम की मिसाल दी गयी है कि चार सौ ख़ादिम बारगाह में ख़िदमत में मश्ग़ूल रहते थे, कोइ बादशाह भी उसतक रसाइ नहीं कर सकता था। हजरे अस्वद की मानिंद एक पत्थर रख छोड़ा था जिस पर अत्लस सियाह आस्तीन की तरह पड़ा रहता था। अत्राफ़ से जो बादशाह आता था उस अत्लस को बोसा देता और चला जाता था।

मुस्तासिम की मालदारी का यह हाल था कि ख़लीफ़ा नासिरुद्दीन का इन्तेक़ाल हुवा तो उसने दो हौज़ अश्रफ़ियों से भरे छोड़े। उसका पोता मुस्तंसिर विल्लाह एक दिन एक ख़ादिमे ख़ास के साथ उस हौज़ के पास गया और कहा मैं इतनी ज़िन्दगी चाहता हूँ कि यह अश्रफ़ियाँ ख़र्च कर डालूं तो ख़ादिम हंस पड़ा। मुस्तंसिर को ग़ुस्सा आगया और कारण पूछा तो ख़ादिम ने कहा मैं एक दिन तुम्हारे दादा के साथ इन हौज़ों के पास आया था उस वक़्त एक हौज़ भरा था दूसरा ख़ाली था तो उन्होंने ने कहा था कि मैं इतनी ज़िंदगी चाहता हूँ कि दूसरा हौज़ भरलूं, मुझे इन दो मुख़्तलिफ़ तमन्नाओं (कामना) पर हंसी आगयी। मुस्तंसिर ने वह माल भलाइ के कामों में ख़र्च किया और मद्रसा *मुस्तंसरिया* उसी की यादगार है। मुस्तासिम ने उन हौज़ों को अपने बूख़्ल (कंजूसी) की वज्ह से फिर भर लिया जिसको हलाकू खाँ ने ग़ारत किया (तारीख़े वस्साफ़)।

बहर हाल आख़री दौर के ख़ुलफ़ा फ़िलहक़ीक़त (वास्तव में) ज़ालिम और सफ़्फ़ाक (रक्तपाती) थे। मिसाल के तौर पर ख़लीफ़ा मुतवक्किल बग़ैरह के हालात क़ाबिले मुलाहज़ा हैं जो हदीसे हुज़ैफ़ा रज़ी० के तहत बयान किये गये है और उनके ज़लील होने का सुबूत यह है कि वह तुरकों के हाथों कठ

पुत्ली बने हुए थे और यही तुर्क जिसको चाहते थे ख़लीफ़ा बनाते जिसको चाहते ख़िलाफ़त से महरुम करदेते थे, क्या यह ज़िल्लत नहीं है।

हज़रत विलायत मआब अली रज़ी० ने इसी की तरफ़ इशारा फ़र्माया है कि आले हाशिम के बादशाह ज़लील होंगे जिन में मुस्तासिम बिल्लाह आख़री ख़लीफ़ा अब्बासिया भी शामिल है, उसकी ज़िल्लत का वाक़ेआ भी इस से पहले बयान कर दिया गया है।

व बोया मिन्हुम (उनमें से किसी ऐसे से बैअत की जायेगी) का मत्लब यह है कि जब आले हाशिम के ज़ालिम बादशाह ख़त्म हो जायेंगे तो उन्हें आले हाशिम से ख़िलाफ़त को ज़िन्दा करने के लिये जिस शख़्स से बैअत की जायेगी वह एक बच्चा होगा जिसकी राय होगी और न अक़्ल।

तारीख़े इस्लाम अमीर अली में लिखा है कि जब हलाकू ने मुस्तासिम को क़त्ल और बग़दाद को बर्बाद करदिया तो दरयाए फ़रात को उबूर करके अल जज़ीरा पहुंचा। रौहा हर्रान् वग़ैरा के रहने वालों को क़त्ल किया। फ़लस्तीन में ऐने जालूत के मक़ाम पर सुल्तान बब्रस ने जो बाद में मिसर का बादशाह बना हलाकू का मुक़ाबला किया और उसको शिकस्ते फ़ाश दी। उसके बाद बब्रस ने ख़िलाफ़त को फिर ज़िन्दा करना चाहा और बनू अब्बास के एक बचे हुए शहज़ादे अहमद अबुल क़ासिम को क़ाहेरा में बुलाया। जब क़ाज़ी उल क़ज़ात ने उस शहज़ादे के हसबो नसब की अच्छी तरह तस्दीक़ करली तो उसको मुस्तक़र बिल्लाह का ख़िताब देकर ख़लीफ़ा बनाया गया। पहला शख़्स जिस ने हलफ़े इताअत उठाया ख़ुद सुल्तान बब्रस था फिर क़ाज़ी उल क़ज़ात ताजुद्दीन उसके बाद अराकीने सल्तनत ने हलफ़े इताअत उठाया।

तारीख़ुल् ख़ुलफ़ा जलालुद्दीन सुयूती में मुस्तक़र बिल्लाह अहमद के बयान में लिखा है।

''(फिर उस शहज़ादे का) नसब क़ाज़ी उल क़ज़ात ताजुद्दीन के ज़रीए साबित किया गया फिर ख़िलाफ़त की बैअत की गयी पहला शख़्स जिस ने बैअत की वह सुल्तान था फिर क़ाज़ीउल क़ज़ात ताजुद्दीन फिर अज़ीज़ुद्दीन बिन अब्दुस

सलाम उसके बाद बड़े बड़े लोग हस्बे मरातिब बैअत किये''।

यह ख़लीफ़ा (६) माह से कम मुद्दत में ही माअज़ूल (पदच्युत) हो गया। तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सुयूती में लिखा है कि ''उसकी मुद्दते ख़िलाफ़त छ माह से कम थी''।

(۴)فثم يقوم قائم الحق منكم و بالحق ياتيكم و بالحق يعمل
(۵)سمى رسول الله نفسى فداءه فلا تخذلوه يا بنى و عجلوا

अनुवादः (५) उस वक़्त हक़ का क़ायम करने वाला तुम में से क़ायम होगा तुम्हारे पास हक़ बात लायेगा और ख़ुद भी हक़ पर अमल करेगा।

(६) वह रसूलुल्लाह सल्ला० का हमनाम होगा मेरी जान उस पर फ़िदा हो ऐ मेरे बच्चो तुम उसको न छोड़ो और बैअत के लिये जल्दी करो।

उस तक़रीर से ज़ाहिर है कि जनाब विलायत मआब हज़रत अली रज़ी० ने महेदी अले० के क़ायम बिलहक़ और आमिल बिलहक़ और हमनामे रसूलुल्लाह सल्ला० होने को साफ़ साफ़ बता दिया है और पहले शेर में यह भी सराहत करदी गयी है कि तुरकों के हम्ले के बाद जो ६५६ हिज्री में हुआ इमाम महेदी के ज़ुहूर का इन्तेज़ार करो।

सय्यदुना हज़रत अली रज़ी० की यह पेशीनगोइ (भविष्य वाणी) हदीसे सोबान रज़ी० की लफ़्ज़ बलफ़्ज़ ताईद करती है और इमामुना अले० पर पूरी पूरी सादिक़ आती है और आप उसके मिस्दाक़ हैं।

४५. हदीस अम्मार बिन यासिर की बहस

किताबुल फ़ितन मुअल्लिफ़ा नईम बिन हम्माद में जो अम्मार बिन यासिर का क़ौल नम्बर (९३८) पर नक़ल किया गया है वह यहाँ बयान किया जाता है जिस से हज़रत अली रज़ी० की पेशीनगोइ की बिल्कुलिया ताईद होती है।

''अम्मार बिन यासिर रज़ी० कहते हैं कि महेदी की अलामत यानि (आप का ज़ुहूर उस वक़्त होगा) जब कि तुम मुसलमानों पर तुरकों का हमला होगा और तुम्हारा ख़लीफ़ा जो माल जमा करेगा मर जायेगा और उसके बाद एक कमज़ोर

शख़्स ख़लीफ़ा बनाया जायेगा वह अपनी बैअत से दो साल बाद माअज़ूल (पदच्युत) होगा। मस्जिदे दमिश्क़ के मग़रबी हिस्से में ख़सफ़ यानि ज़मीन का धंसना होगा और तीन आदमी शाम के मुल्क में ख़ुरुज करेंगे और मग़रिब वाले मिसर की तरफ़ ख़ुरुज करेंगे यह सुफ़यानी की अलामात हैं''।

इस क़ौल में पाँच बातें बताइ गयी हैं (१) तुरकौं का हमला (२) माल जमा करने वाले ख़लीफ़ा का मरजाना (३) उस ख़लीफ़ा के बाद एक और ज़ईफ़ आदमी का ख़लीफ़ा बन्ना और दो साल के बाद माअज़ूल हो जाना (४) मस्जिदे दमिश्क़ के मग़रिब में ख़सफ़ यानि ज़मीन का धंसना (५) शाम में तीन आदमियौं का और मग़रिब वालौं का मिसर की तरफ़ ख़ुरुज यह आख़री दो बातें सुफ़यानी की अलामत से होना।

(१) तुरकौं का हमला करना (२) माल जमा करने वाले ख़लीफ़ा का मरना जैसा कि मुस्तासिम के बारे में साबित हो चुका है कि उसने मुस्तंसर के तीन ख़ाली शुदा हाज़ौं को अश्रफ़ियौं से भर लिया और तुरकौं के हमले के वक़्त वह सब ग़ारत होगये और हलाकू ख़ाँ ने ख़ुद मुस्तासिम को हलाक कर दिया (३) उसके बाद एक ज़ईफ़ शख़्स का ख़लीफ़ा बन्ना जैसा कि अहमद अल मुस्तंसर का ज़िकर आचुका है। यह तीनों बातें हज़रत अली रज़ी० के अशआर से बिल्कुल मुवाफ़िक़ हैं।

तारीख़ुल ख़ुल्फ़ा सुयूती में अहमद अल मुस्तंसर की मुद्दते ख़िलाफ़त छ माह से कम बताइ गयी है लेकिन अम्मार बिन यासिर की पेशीनगोइ में दो साल की मुद्दत बताइ गयी है बाक़ी बातें जिनका तअल्लुक़ सुफ़यानी की हुकूमत से है उसका ज़ुहूर नहीं हुवा। उस पर मज़ीद बहस की ज़रूरत नहीं है क्योंकि सुफ़यानी का वुजूद किसी सहीह हदीस से साबित नहीं है और सुफ़यानी का ज़ुहूर मुख्तरेआते शेआ (आविष्कार) से है जैसा कि किलीनी वग़ैरा से साबित है।

४६. महेदी अले० की मुद्दते ख़िलाफ़त की बहेस

अगर इस मौक़े पर उन अहादीस से बहस की जाये जिन में महेदी अले० की मुद्दत का तअैयुन हुवा है तो ज़ाहिर होगा कि यह अहादीस भी इमामुना अले० के सने वफ़ात पर पूरी पूरी सादिक़ आती है।

''अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० से रिवायत है उन्हों ने कहा हम को इस बात का डर था कि हमारे नबी के बाद कोइ हदस होगा इस लिये हम ने रसूलुल्लाह सल्ला० से दरयाफ़्त किया आप ने फ़र्माया कि महेदी मेरी उम्मत से निकलेंगे और वह पाँच साल या सात साल या नौ साल जिन्दा रहेंगे।''।

इस हदीस में पाँच या सात या नौ साल का जो ज़िकर आया है उसके यह माने नहीं हैं कि महेदी अले० इस क़दर कमसिन होंगे बल्कि उस से सिर्फ़ ज़मानए दाअवते महेदियत मुराद है वर्ना इस क़दर कम उमर लड़का क़ियामे दीन और उम्मते मुहम्मदीया को हलाकत से बचाने का कैसे ज़िम्मेदार होगा।

इस हदीस में दाअवत की मुद्दत जो पाँच या सात या नौ साल बताइ गयी है वह भी इमामुना अले० पर सादिक़ आती है क्योंकि आप का सने वफ़ात ९१० हिज्री है, आप ने मक्का मुअज़्ज़मा में ९०१ हिज्री में महेदियत का दाअवए मुअक्कद किया इस लिये दाअवे के बाद आप का नौ साल ज़िन्दा रहना साबित है। उसके बाद आप ने मस्जिद ताज खाँ सालार (अहमदाबाद) में ९०३ हिज्री में दुबारा दाअवए मुअक्कद फ़र्माया इस से आप का दाअवे के बाद सात साल ज़िन्दा रहना साबित है। तीसरी बार आप ने बड़ली में ९०५ हिज्री में दाअवए मुअक्कद फ़र्माया इस से आप का दाअवे के बाद पाँच साल ज़िन्दा रहना साबित है।

एक और हदीस में सिर्फ़ सात साल और नौ साल का ज़िकर आया है

''अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० से रिवायत है कि नबी सल्ला० ने फ़र्माया महेदी मेरी उम्मत में होंगे अगर कम हो तो सात वर्ना नौ साल मुद्दत होगी''।

इस से पहले की हदीस में सात साल और नौ साल की वज़ाहत करदी गयी है। ख़ुलासा यह कि दोनों हदीसें मुद्दते दाअवत के लिहाज़ से इमामुना अले० की मुद्दते दाअवते मुअक्कद पर बिल्कुलिया सादिक़ आती हैं और दाअवत का अहादीसे मज़्कूर से मुताबिक़ होना भी एक मोजिज़ नुमा वाक़ेआ है जो ताईदे ग़ैबी और ख़िलाफ़ते इलाहिया का मज़्हर (प्रतीक) है जिस से इमामुना अले० के महेदी मौऊद होने की साफ़ तौर पर तस्दीक़ होती है।

४७. अक़्दे अनामिल की बहस जिस से इमाम अले० का सन् नौ सो में पैदा होना साबित है।

इसके बाद वह हदीस भी देखली जाये जो हज़रत अली रज़ी० से मर्वी है जिस से इमामुना अले० के नौ सौ साल पर मबऊस होने की शहादत मिलती है। नईम बिन हम्माद ने मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़ी० से रिवायत की है। (कोहलुल जवाहर जिल्द दुव्वम)

قال کنا عند علی فساله رجل عن المهدی فقال هیهات ثم عقد بیده تسعاً
فقال ذالک یخرج فی آخر الزمان

''मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़ी० कहते हैं कि हम अली रज़ी० के पास थे एक शख़्स महेदी अले० के बारे में पूछा तो फ़र्माया बुहत दूर है फिर आप ने हाथ पर नौ का अक़्द किया और फ़र्माया वह आख़र ज़माने में निकलेंगे''।

अक़्दे-अनामिल (उंगलियौं से हिसाब लगाना) की सूरत यह है कि उस में इकाइयाँ, दहाइयाँ, सैंकड़े, हज़ार ऐसे इम्तियाज़ के साथ उंगलियौं पर गिने जाते हैं. कि एक का एहतिमाल (शक) दुसरे पर नहीं हो सकता लेकिन वह वज्हे इम्तियाज़ (फ़र्क़) जिस से हर अदद अलाहिदा अलाहिदा समझा जाता है वह उक़ूद यानि इशारात हैं जो सीधे और बायें हाथ की उंगलियाँ मुक़र्ररा मक़ामात पर ख़ास तर्कीब और वज़ा (शैली) के साथ रखने से हासिल होते हैं मसलन् सीधे हाथ की उंगलियाँ ख़िंसिर (छोटी उंगली), बिंसिर (अंगूठी पहनाने की उंगली), वुस्ता (बीच की उंगली) से एक से नौ तक इकायीयाँ बन्ती हैं। सीथे हाथ की दो उंगलिया सब्बाबा (शहादत की उंगली) और अंगुठे से अश्रात यानि दस से नव्वद तक दहाइयाँ बरामद होती हैं। उसके मुक़ाबिल बायें हाथ में उन्ही मक़ामात पर यही इशारात बनाने से बजाये अश्रात और अहाद के एक हज़ार से नौ हज़ार और एक सौ से नौ सौ तक आदाद हासिल होते हैं। चुनांचे *ग़ियासुल लुग़ात* में लिखा है।

''मालूम करलेना चाहिये कि सीधे हाथ में जो चीज़ एक से नौ तक के अक़्द पर दलालत करती है वही बायें हाथ पर एक हज़ार से नौ हज़ार तक के अक़्द पर दलालत करती है और इसी तरह सीधे हाथ में जो चीज़ दस से नव्वद तक

के अक़्द पर दलालत करती है वही बायें हाथ में एक सौ से नौ सौ के अक़्द पर दलालत करती है''।

इस तफ़सील से ज़ाहिर हो रहा है कि नौ के अक़्द चार हैं। (९), (९०), (९००), (९०००) और यह आदाद (अंक) सीधे और बायें हाथ की उंगलियों के मक़ामात बदलने से बदलते जाते हैं।

चूंकि रिवायत में यह सराहत नहीं है कि हज़रत अली मर्तुज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहु ने जिस अक़्दे अनामिल का इशारा फ़र्माया था वह सीधे या बायें हाथ की कौनसी उंगलियों से ज़ाहिर किया था। उस रिवायत में यह इब्हाम (अस्पष्टता) है कि इमाम अले० के ज़ुहूर का नौ या नव्वद साल में इशारा किया गया है या नौ सौ या नौ हज़ार साल में? पस यहाँ दिरायत (बुद्धि) से काम लेने की ज़रूरत है कि इन चार एहतेमालात (संदेह) में कौनसी सूरत क़रीने क़ियास (सम्भवतः) होसकती है। पहली दो सूरतें मुराद लेना इस लिये सहीह नहीं है कि ख़ुद रिवायत में *हैहात* यानि बाद (दूर है) के अलफ़ाज़ मौजूद हैं और नो या नव्वद साल इतनी क़रीब मुद्दतें हैं कि उन पर *हैहात* का लफ़्ज़ सादिक़ नहीं आता। उसके अलावा रिवायत में *यख़रुजु फ़ी आख़िरिज़ ज़माँ* के अलफ़ाज़ भी हैं यानि इमाम अले० का ज़ुहूर आख़र ज़माने में होने की सराहत मौजूद है। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि नौ साल या नव्वद साल की क़लील (थोड़ी) मुद्दत पर आख़र ज़माने का इत्लाक़ (विषेश अर्थ में इस्तेमाल) किसी तरह दुरूस्त नहीं लिहाज़ा वह मुद्दत बीत गयी और उस मुद्दत में इमाम अले० का ज़ुहूर भी नहीं हुआ। इस लिये निश्चित रुप से मालूम हो गया कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन रज़ी० ने जो इशारा किया था वह नौ और नव्वद का अक़्द नहीं था। अब रहे नौ सौ और नौ हज़ार के एहतिमालात उनमें से नौ हज़ार के अदद का एहतिमाल निश्चित रूप से साक़ित (समाप्त) है क्योंकि ख़बर के वक़्त के बाद से नौ हज़ार साल मुराद हों या सन् नौ हज़ार हिज्री यह दोनों एहतिमाल भी सहीह नहीं हो सकते क्योंकि अहादीस में दुनिया की मुद्दत सात हज़ार साल बताइ गयी है इस लिये वह अक़्दे अनामिल नौ हज़ार का नहीं हो सकता, अब सिर्फ़ नौ सौ का अक़्द बाक़ी रह गया इस लिये नौ सौ पर ज़ुहूरे महेदी का यक़ीन हो सकता है और यह बात भी इमामुना अले० पर बिल्कुलिया

सादिक़ आती है क्योंकि आप ८४७ हिज्री में पैदा हुवे, चालीस साल उम्र ८८७ हिज्री में तब्लीग़े महेदियत का काम शुरू फ़र्माया और महेदियत का पहला दाअवए मुअक्कद मक्का मुअज़्ज़मा में ९०१ हिज्री में फ़र्माया, दूसरा दाअवा ९०३ हिज्री में बमक़ाम मस्जिद ताज ख़ाँ सालार और तीसरा दाअवा ९०५ हिज्री में बमुक़ाम बड़ली फ़र्माया और ९१० हिज्री में आप का विसाले मुबारक हुआ।

४८. इमाम अले० की निसबत साहेबाने कश्फ़ की पेशीनगोइयाँ

विलायत मआब हज़रत अली मुर्तुज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहु की तरह बाज़ साहेबाने कश्फ़ (दैव ज्ञान) ने महेदी अले० के बारे में जो पेशीनगोइयाँ (भविष्यवाणि) बयान की हैं उनमें से चंद यहाँ लिखदी जाती हैं।

(१) अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने *लमआत शर्ह मिश्कात* के बाब (अध्याय) क़ुर्बुस् साअत में शेख़ जलालुद्दीन सुयूती से नक़ल किया है कि बाज़ अलमाए वक़्त ने इस बात पर फ़त्वा दिया है कि दसवीं सदी (शताब्दी) में इमाम महेदी का ख़ुरुज होगा।

(२) क़ौमी कुतुब में तारीख़े तब्री का एक क़ौल नक़ल किया गया है कि इमाम महेदी ९०५ हिज्री में ख़ुरूज करेंगे (आयेंगे)। इसी तरह शाह राजू क़त्ताल रहे० का क़ौल *तोहफ़तुन् नसाएह* से नक़ल किया गया है कि महेदी अले० दसवीं सदी में ख़ुरूज करेंगे।

उस्ताज़ी व मौलाइ हज़रत अल्लामा सय्यद नुसरत रहे० ने *कोहलुल् जवाहर* में *बहजतुत् तारीक़* के हवाले से लिखा है कि शुक्रुल्लाह बिन शहाबुद्दीन ने नवी सदी में आले रसूल क़ुर्रते ऐने बुतूल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह महेदी का आना लिखा है। नवीं सदी आपकी विलादत की सदी है क्योंकि आप ८४७ हिज्री में पैदा हुए हैं।

हज़रत शेख़ अकबर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रहे० ने तहरीर फ़र्माया है कि महेदी (ख़ फ़ जीम) हिज्री से गुज़रने के बाद आयेंगे। इन हुरूफ़ से उनके मुसम्मियात मुराद नहीं हैं।

(हिय अलख़ा - अलफ़ा - अलजीम) 15+632+112+84=843

इन आदाद से इस तरफ़ इशारा किया गया है कि महेदी अले (८४३) के बाद पैदा होंगे। इमामुना अले० बिला शक इन आदाद के बाद ८४७ हिज्री मे पैदा हुए है। अगर ख़, फ़, जीम के मुसम्मियत मुराद न लें बल्कि इलमे हुरूफ़ के नियम पर अमल किया जाये तो ज़ाहिर होगा कि ख़, फ़, जीम के आदाद (६८३) को ४/३ से ज़रब दें तो 683 x 4 = 2732 ÷ 3 = 910 ख़ारिजे क़िस्मत (भागफल) होंगे और यही आदाद इमामुना अले० के सने वफ़ात है।

जब उलमाए इस्लाम ने यहूदो नसारा के अक़वाल को रसूलुल्लाह सल्ला० की बेसत में वाक़ेआत के मुताबिक़ होने की वज्ह से हुज्जत तस्लीम किया है तो मुस्लिम और मोमिन और साहबे कश्फ़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़वाल (कथन) जो इमामुना अले० के हालात से मुताबिक़ हैं ज़रुर तस्लीम किये जासकते हैं। ख़ुलासा यह कि यह तमाम पेशनिगोइयाँ इमामुना अले० पर बिल्कुलिया सादिक़ आती हैं और आप उनके मिसदाक़ हैं इस लिये यक़ीनी और क़तई हैं।

४९. इमाम अले० दाअवए महेदियत करना और आख़र तक क़ायम रहना

यह बात ज़ाहिर है कि अकसर लोग इमामुना अले० के बारे में यह शुब्ह ज़ाहिर करते हैं कि इमामुना अले० ने महेदियत का दाअवा नहीं फ़र्माया यह सिर्फ़ महेदवियौं ने फैलाया (प्रचार - व्यवस्था) है इस लिये इस विषय में भी कुछ लिखदेना मुनासिब मालूम होता है।

इमामुना अले० बिला शक (निःसंदेह) महेदियत का दाअवा फ़र्माया है और आपके मुत्तबईन (अनुयायीयौं) में आप का दाअवा फ़र्माना और आख़री वक़्त तक अपने दाअवे पर क़ायम रहना बतवातुर साबित है। इसकी तस्दीक़ (पुष्टि) नातरफ़दार (निष्पक्ष) मुअर्रिख़ीन के बयानात से भी होती है, चुनांचे अब्दुल क़ादिर बदायूनी नें *मुन्तख़बुत् तवारीख़* में लिखा है ''मीर सय्यद मुहम्मद जोनपूरी क़दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़ अआज़िम (महान) औलियाए किबार से हैं उन से दाअवए महेदियत ज़ाहिर हुवा''।

अबुल फ़ज़ल ने *आईने अकबरी* में लिखा है

''सय्यद मुहम्मद जोनपूरी सय्यद बुदह अवेसी के फ़र्ज़न्द हैं जिन्हें रूहानी फ़ैज़ बकसरत हासिल था, इल्मे ज़ाहिरी और बातिनी में दस्तगाह (महारत) रखते थे शोरीदगी से दाअवए महेदियत किया था बुहत सारे लोग उनके मोतक़द होगये''।

यहाँ ''शोरीदगी'' का लफ़्ज़ लेखक की ज़ाती राय की बिना पर है।

साहबे *मिराअते सिकन्दरी* ने लिखा है

''पोशीदा न रहे कि सुल्तान महमूद की ज़िन्दगी के आख़र में सय्यद मुहम्मद जोनपूरी जो दाअवए महेदियत करते थे जोनपूर से शहर अहमदाबाद में आये''।

साहेबे *मिरअते अहमदी* ने लिखा है

''उसी ज़माने में सय्यद मुहम्मद जोनपूरी जो दाअवए महेदियत किये थे अहमदाबाद में वारिद हुए और मस्जिद ताज ख़ाँ बिन सालार में जो जमालपूर के दर्वाज़े के क़रीब है लोगौं को दाअवत दी''।

शाह अब्दुल अज़ीज़ *तोहफ़ए असना अशरिया* में लिखते हैं

''मीर सय्यद मुहम्मद जोनपूरी ने हिन्दूस्तान में बुलंद आवाज़ से दाअवए महेदियत किया किसी ने उनको क़त्ल व सियासत नही किया''।

५०. इख़्तितामिया : हस मज़्हब के अनपढ़ लोग उमूमन् अपने उलमा या ज़ी इल्म (शिक्षित) तब्क़े के ज़ेरे असर हुआ करते हैं। इस ख़याल को क़ुरआन शरीफ़ मे बयान किया गया है।

अनुवाद : बाज़ उनमें उम्मी (निरक्षर) हैं जो अपने बातिल ख़यालात के सिवा किताब (तोरेत) को नहीं जानते और वह बतौर ज़न् बातिल ख़यालात दौड़ाते रहते हैं'' (अल-बक़रह-७८)।

मुफ़स्सिरीन इस आयत का मत्लब यह बयान करते हैं कि यहूदियौं में जो लोग निरे उम्मी और तोरेत के मआनी (अर्थ) से नावाक़िफ़ थे वह अपने उलमा के अक़ायद और अहकाम सुनकर उनको एतिक़ाद में दाख़िल करलेते थे हालाँकि वह तौरेत के अहकाम नहीं बल्कि उलमा के मन घड़त होते थे। उलमा का क़ौल यह था कि यहूद अम्बिया अले० की औलाद से हैं और अम्बिया अले० ख़ुदा के पास उनके गुनाहौं की शफ़ाअत करके उन्हे जन्नत के मुस्तहक़ क़रार देंगे।

जन्नत में दाख़िल होने के बारे में यहूद के साथ नसारा का भी यह क़ौल था चुनांचे क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला का इर्शाद उनके क़ौल को नक़ल करता है।

अनुवादः ''वह कहते हैं कि यहूद और नसारा के सिवा कोइ जन्नत में दाख़िल न होगा यह उनकी झूटी कामनायें हैं ए मुहम्मद तुम उनसे कहदो कि अगर तुम सच्चे हो तो दलील पेश करो'' (अल बक़रह - १११)।

रसूलुल्लाह सल्ला० के ज़माने में यहूद और नसारा आपस में कहा करते थे कि अगर हमको मुहम्मद सल्ला० के मान्ने से जन्नत मिल सकती है तो यह फ़ाइदा हमको मूसा अले० के मान लेने से हासिल हो चुका है अब मुहम्मद सल्ला० को मान्ने की ज़रूरत ही नहीं। चुंकि उनका यह ख़याल ग़लत था इस लिये रसूलुल्लाह सल्ला० को यह पूछने का हुक्म दिया गया है कि अगर तुम जन्नत में दाख़िल होने के ज़ोमे बातिल (असत्य घमंड) में सच्चे हो तो उसकी कोइ दलील (प्रमाण) या तौरेत का हुक्म बयान करो।

यह भी वाक़ेआ है कि बाज़ वक़्त उलमा भी जाहिलौं और अनपढ़ौं की मार में आजाते हैं और सिर्फ़ दुनियावी क़लील (थोड़े) फ़ायदे के लिये मज़्हब में रख़ना (हस्तक्षेप) डालने की कोशिश करजाते हैं। इसी वाक़ेए को क़ुरआन शरीफ़ में इस तरह बयान किया गया है।

अनुवाद : उन लोगौं पर अफ़सोस है जो अपने हाथ से किताब (तौरेत) लिखते और कहते यह हैं कि यह ख़ुदा के पास से आयी हुवी है ताकि उस से थोड़ी क़ीमत (दुनियावी फ़ायदा) हासिल करें (अल बक़रह-७९)।

मुफ़स्सिरीन बयान करते हैं कि तौरेत में रसूलुल्लाह सल्ला० के औसाफ़ (प्रशंसा/गुण) और अलामात (लक्षण) साफ़ साफ़ मौजूद थे। यहूद ने देखा कि जब यह औसाफ़ और अलामात रसूलुल्लाह सल्ला० पर सादिक़ आजायेंगे (सच साबित होंगे) तो हमको मज्बूरन् मुहम्मद सल्ला० को रसूलुल्लाह मान लेना पड़ेगा इस लिये उन्हों ने अपने उलमा को उज्रत देकर औसाफ़ो अलामात में तहरीफ़ (उलट फेर) करादी। इस से उलमा की दीनदारी का पता चलता है। जिस तरह यहूद और नसारा उलमा के मन घड़त अक़वाल को एतेक़ाद में दाख़िल करलेते थे और अपने आप को जन्नत का मुस्तहक़ तसव्वुर करके या तौरेत में तहरीफ़ कराके मुहम्मद सल्ला० के रसूलुल्लाह होने से इन्कार की वज्ह या बहाना तलाश करलेते और मुहम्मद सल्ला० की अदम ज़रुरत के क़ायल होगयो थे उसी तरह बाज़ मुसलमानीं ने भी ज़रूरते महेदी से इन्कार करदिया और अलानिया कहने लगे कि क़ुरआन हमारे लिये काफ़ी है वही महेदी वही हादी है। बाज़ लोग यह कहते हैं कि आयत *उकमलतु लकुम दीन कुम* नाज़िल होने के बाद जब दीन कामिल होगया तो महेदी की ज़रूरत ही क्या है, महेदी की ज़रुरत समझना दीन को नाक़िस समझने के मुतरादिफ़ (समानार्थक) है, हालाँकि दीने कामिल की नुसरत और ताईद की अदम ज़रूरत का ज़िकर किसी हदीस या आयते क़ुरआनी से साबित नहीं। रसूलुल्लाह सल्ला० ने तफ़सीली बशारात से जो तवातुरे मानवी की हद् को पहुंच गयी हैं महेदी मौऊद अले० के वुजूद को साबित फ़र्माया है। बाज़ लोग अहादीस में अपनी ग़लत फ़हमी और बाद के मुहाद्दिसीन की ग़लत निगारी (लेख) से धोके में आकर इज्तेमाए महेदी व ईसा अले० के क़ायल होगये हैं हालाँकि ऐसा इज्तेमाअ अक़लन् और नक़लन् बातिल है। अकसर लोग इस इन्तेज़ार में हैं कि महेदी अले० रूये ज़मीन के ज़ाहिरी बादशाह होंगे जो अक़लन् सहीह नहीं है और आप के ज़माने में दुनिया के सब लोग एक ही दीन पर मुत्तहिद होजायेंगे हालाँकि यह नुसूसे क़ुरआनी के ख़िलाफ़ है। बाज़ लोग महेदी अब्बासी को महेदी मौऊद समझकर ग़लत फ़हमी में मुब्तला होगये हालाँकि अहादीस में महेदी की निसबत इत्रत और रसूलुल्लाह सल्ला० के अहले बैत से और औलादे फ़ातिमा रज़ी० से होने की अहम शर्त मौजूद है।

मैं ने इस रिसाले में तऐयुने शख़्सी (व्यक्तित्व का निश्चय) के उसूल पर वह सब कुछ बयान करदिया है जिस से इमामुना सय्यद मुहम्मद जोनपूरी के महेदी मौऊद होने का मसअला (विषया) साफ़ होजाता है और वह सारी ग़लत फ़हमियाँ दूर होजाती हैं जो ऊपर बयान की गयी हैं। शायक़ीने तहक़ीक़ को चाहिये कि वह उन लोगौं के अक़ायदे बातिला की तरफ़ न जायें जो यह कहते हैं कि महेदी की ज़रूरत नहीं है या ग़लत फ़हमियौं में मुब्तला हैं बल्कि हज़रत ख़ातिमुल् अम्बिया सल्ला० के अहकाम की रोश्नी में ठंडे दिल से तहक़ीक़ करें। जब तहक़ीक़ हो जाये तो बिला तावील और तस्वील (सवाल करना) हक़ बात को मानलें ताकि आँहज़रत सल्ला० के अहकाम की ताअमील (आज्ञा पालन) हो, सहव (भूल) या ग़फ़लत मुतसव्वर नहो।

ख़ुदा का शुक्र है कि **''रिसाला बराहीने महेदविया''** ख़त्म (पूर्ण) होगया। इन्शा अल्लाहु तआला आइन्दा इस्तेदलाली सवानेह उम्री (जीवन चरित्र) जिस में इमामुना अले० के हालात दौरे नबूवत से मर्बूत (अनुरूप) हैं शाया की जायेगी और रिसाला ''अल क़ुरआन वल महेदी'' भी शाये होगा (प्रकाशित हो चुका है) जिस में इमामुना अले० का सुबूत आयाते क़ुरआनी ही से पेश किया गया है। मैं अपने इस मुख़्तसर मज़्मून को इस दुआ पर ख़त्म करता हूँ कि अल्लाह तआला इस रिसाले से तालिबाने हक़ को हिदायत फ़र्माये। आमीन